तानसेन
मुकुल

प्रकाशक :

कैलाशप्रसाद अग्रवाल

कैलाश पुस्तक सदन

ग्वालियर—१

•

शाखा :

हमीदिया मार्ग

भोपाल—१ (म० प्र०)

•

प्रमुख विक्रेता :

लायल बुक डिपो

सरस्वती सदन, ग्वालियर—१

•

मूल्य : ३.५०

संस्करण १९७०

•

मुद्रक :

साधना प्रेस, ग्वालियर—१

महेन्द्रकुमार मुकुल । **लेखक : जन्मतिथि :** १ सितम्बर, १९३१ ।
स्थान : दानाओली, लश्कर, **शिक्षा :** एम.ए., बी. एड., सा. रत्न ।
रचनाएं : उपन्यास—फौलाद के फूल, लोहा और लहू ।
कहानी—एक कथानक : एक : व्यथा
नाटक—वनवासीराम ।
एकांकी—गांव जाग उठे, आराम हराम, धरती का बेटा ।

कार्य : आप प्रारम्भ में पत्रकार रहे । मध्यभारत श्रमजीवी पत्रकार संघ के प्रचार मन्त्री रहे । हिन्दी साहित्य साधना-संसद के प्रमुख संस्थापकों में से एक । हिन्दी गल्प गोष्ठी और ग्वालियर संभाग साहित्यकार परिषद के दो बार मन्त्री चुने गये । मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति में ग्वालियर की ओर से प्रतिनिधि रहे । मा. भा. हिन्दी साहित्य सभा की कार्यकारिणी में बर्षों तक सदस्य रहे । ग्वालियर में आयोजित मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के पंचम अधिवेशन के अवसर पर स्वागत समिति द्वारा सम्भागीय संघठन मन्त्री तथा साहित्य मन्त्री निर्वाचित हुए । आजकल आप म. प्र. शिक्षा विभाग द्वारा संस्थापित पुस्तक निगम में हिन्दी विशेषज्ञ सदस्य मनोनीत किए गए हैं ।

अनुक्रमणिका

ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि

भारतीय संगीत के इतिहास में संगीत सम्राट तानसेन का स्थान अद्वितीय है। उनकी संगीत प्रतिभा की कीर्ति से ग्वालियर ही गौरवान्वित नहीं हुआ है बल्कि संगीत के उस ज्वाज्यल्यमान नक्षत्र से मुगल सम्राट अकबर का इतिहास भी आलौकित हुआ है। मीर मुन्शी अब्बुल फजल ने "आइने अकबरी" में तानसेन की अपूर्व क्षमता और संगीत की अलौकिक प्रतिभा का स्वागत करते हुये लिखा है कि—"तानसेन जैसा गायक भारत में विगत एक हजार वर्ष से पैदा नहीं हुआ।"

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और बादशाह अकबर के मन्त्री अब्दुल रहीम खानखाना ने तानसेन की प्रतिभा और वैभव की प्रशंसा करते हुये एक दोहे में लिखा है—"

बिधना यह जिय जानि के शेषहिं दिये न कान।
धरा मेरु सब डोलते तानसेन की तान ॥

अमर गायक तानसेन के विषय में जो कहा जाता है वह बिलकुल सत्य है। उनकी वाणी में मधुरता मादकता और तन्मयता थी। ओज और आकर्षण था। प्रवाह और अप्रितम भावों की गहनता थी। यही कारण था कि उनकी स्वर शक्ति से धरा, मेरु, पेड़-पल्लव, नदी-निर्झर, वन, उपवन, पशु-पक्षी आदि सभी प्रभावित हो जाते थे। तानसेन को ऐसी धवल कीर्ति, ऐसी महत्ता और ऐसा व्यापक प्रभाव प्रदान करने का श्रेय ग्वालियर के संगीत मर्मज्ञ राजा मानसिंह तोमर को है। जिसके द्वारा स्थापित संगीत विद्यालय में तानसेन ने संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की।

कला के पारखी राजा मानसिंह के द्वारा स्थापित इस संगीत विद्यालय का शास्त्रीय संगीत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण योगदान रहा

है। मान मंदिर और गूजरी महल में प्रवेश करते ही मस्तिष्क के चेतना तन्तु सितार के तारों की तरह झनझना उठते हैं। ऐसा लगता है मानों प्रणय की पागल पपीहरी मृगनयनी और राजा मानसिंह प्रासाद के किसी प्रकोष्ठ में बैठे ध्रुपद के मधुर बोल अलाप रहे हों। ध्रुपद गायन शैली के आविष्कारक और उन्नायक राजा मानसिंह का नाम संगीत कला के विकास और संवर्धन में सदैव स्मरणीय रहेगा।

राजा मानसिंह तोमर के पुत्र विक्रमसिंह की मृत्यु पानीपत के युद्ध में हो जाने के बाद ग्वालियर का भविष्य अन्धकार में डूब गया। तोमर वंश के पतन के पश्चात ग्वालियर की गायकी दो भागों में विभक्त हो गई। जिन संगीतज्ञों की रुचि, भक्ति और उपासना की ओर उन्मुख हुई। वे भगवान कृष्ण की पावन बृजभूमि में पहुँचकर मन्दिरों में भजन कीर्तन अलापने लगे। आँतरी के सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ गोविन्द स्वामी गोकुल मे श्रीनाथ जी के मन्दिर के प्रमुख सकीर्तनकार बने और तानसेन बांधवगढ़ के राजा रामचन्द्र बघेला के राज गायक ।

अमर गायक तानसेन का जन्म ग्वालियर से २८ मील दूर ग्राम वेहट में सन १५३१ में हुआ। उनका बचपन का नाम तन्ना या त्रिलोचन अथवा तनसुख था। दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता में लिखा है कि "तानसेन बड़ी जाति बाले हते" इससे पता चलता है कि वे उच्च सनाढ्य ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए। आपके पिता का नाम मकरन्द या मुकुन्द पांडे था। ग्राम वैहट से लगभग चार या पाँच फर्लांग की दूरी पर झिलमिल नदी के किनारे जिस मन्दिर में वह ध्रुपद गान अलापकर भगवान शंकर की आराधना किया करते थे वह आज भी एक विशाल वट-वृक्ष के नीचे गहन उपत्यकाओं के बीच खड़ा है। कहते हैं कि तानसेन की किसी मधुर-स्वर लहरी से मढ़िया की दीवारें टेढ़ी पड़ गई थीं। जो आज भी देखी जा सकती हैं। तानसेन को संगीत की प्रारम्भिक शिक्षा ग्वालियर के संगीत विद्यालय में मिली। किन्तु उन्हें

एक महान प्रतिभाशाली संगीतकार बनाने का श्रेय वृन्दावन के स्वामी हरिदास जी को है। दो-सौ वैष्णव वार्ता के अनुसार तानसेन ने अकबर के दरबार में पहुंचने के पश्चात गोस्वामी विट्ठलनाथ जी के शिष्य गोविन्द स्वामी से भी संगीत की शिक्षा ग्रहण की। कुछ लोगों का मत है कि तानसेन के प्रारम्भिक संगीत गुरू ग्वालियर के सूफी सन्त मुहम्मद गौस भी थे। किन्तु यह आश्चर्यजनक है कि उस काल के किसी भी इतिहासकार ने और संगीत-ग्रन्थों ने सूफी सन्त मुहम्मद गौस को तानसेन का संगीत गुरू माना है। यह हो सकता हैं कि जब तानसेन ग्वालियर दुर्ग में स्थापित संगीत विद्यालय में छात्र रहे हों तब वे सूफी सन्त मुहम्मद गौस के सम्पर्क में आए हों।

साप्ताहिक मध्यप्रदेश सन्देश के भूतपूर्व सम्पादक स्वर्गीय पंडित रामकिशोर शर्मा ने "तानसेन, एक जीवनी" में लिखा है कि—"मुहम्मद गौस उस समय के एक पहुंचे हुए फकीर, अवश्य माने जाते थे, परन्तु उनके उच्चकोटि के संगीतज्ञ होने का किसी प्राचीन ग्रन्थ में नहीं मिलता। वे सूफी सम्प्रदाय के सन्त थे। मुहम्मद गौस के वंशज तथा वर्तमान गद्दीनशीन शाह अलीहसन का कथन है कि उनके फकीरी खानदान के धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार संगीत विद्या निषिद्ध रही है।"

स्वामी हरिदास की कुटिया में संगीत की विद्या में प्रवीण और पारंगत होने के पश्चात तानसेन वृन्दावन से दिल्ली चले गये। जहां वे शेरशाह सूरी के पुत्र दौलत खां के पास कुछ काल तक रहे। सूर साम्राज्य जब मुगल फौजों से पदाक्रान्त होने लगा तब वे दिल्ली से बांधवगढ़ के राजा रामचन्द्र बघेला के दरबार में राजगायक बने। बांधवगढ़ में तानसेन को विपुल मान सम्मान प्राप्त हुआ। जब तानसेन की संगीत की ख्याति बादशाह अकबर के कानों में पड़ी तो उन्होंने अपने दो सिपहसालार जलालउद्दीन कुरची और मजनू खां काकशाल को बांधवगढ़

भेजकर तानसेन को आगरा बुला लिया। इस प्रकार तानसेन ने सन् १५६२ में बादशाह अकबर के दरबार में हाजिर होकर मुजरा झुकाया।

तानसेन हिन्दू थे या मुसलमान। यह एक विचारणीय प्रश्न है। उच्च ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर वे बाद में मुसलमान होकर मरे। ग्वालियर में प्रसिद्ध सूफी सन्त मुहम्मद गौस के मकबरे के निकट तानसेन की मजार को देखकर बरबस यह विचार मस्तिष्क में उठता है कि मुगल दरबार में मुसलमानों के साथ अधिक सम्पर्क हो जाने के कारण सम्भवत: तानसेन ने मुसलमान धर्म स्वीकार कर लिया हो। किन्तु यह धर्म परिवर्तन तानसेन ने कब और कहां किन परिस्थितियों में किया इसका निश्चित आधार कहीं नहीं मिलता। और न मध्य युग के किसी मुस्लिम इतिहासकार ने तानसेन के धर्म परिवर्तन के सम्बन्ध में एक शब्द भी लिखा।

डा० प्रभूदयाल मित्तल ने "तानसेन एक जीवनी" में लिखा है कि–"मुसलमानों के साथ अधिक सम्पर्क और सहवास तथा उनके आहार बिहार की स्वच्छन्दता के कारण उस समय के रूढ़िवादी हिन्दुओं ने उनका बहिष्कार कर उन्हें मुसलमान घोषित कर दिया था। किन्तु वे स्वेच्छा से कभी मुसलमान नहीं हुए। इसका प्रमाण नहीं मिलता। उनके वंशजों ने अवश्य मुसलमान मजहब स्वीकार कर लिया था। उनकी वंश परम्परा में कुछ नाम हिन्दुओं के से मिलते हैं और उनमें हिन्दुओं के से कई रीति रिवाज प्रचलित हैं। इनसे समझा जाता है कि वे भी अपने पूर्वजों की हिन्दू परम्परा का पूर्णतया परित्याग नहीं कर सके।

डा० सरयूप्रसाद अग्रवाल ने अकबरी दरबार के हिन्दी कवि नामक शोध ग्रंथ में तानसेन के सम्बन्ध में लिखा है:—

"तानसेन मुसलमान क्यों हुए यह एक विचारणीय प्रश्न है। धन का प्रलोभन इन्हें नहीं था। क्योंकि संगीत कला के सम्मानकर्ताओं की

उस समय कमी नहीं थी। रीवा नरेश रामचन्द्र के दरबार में उन्हें किसी प्रकार का अभाव नहीं था। फिर अकबरी दरबार तो गुणियों के राजाश्रय के लिये प्रसिद्ध ही था। तानसेन की जितनी भी रचना प्राप्त हैं उनमें हिन्दू संस्कृति और हिन्दू धर्म की पूरी झलक देखने को मिलती है। अत: इस्लाम धर्म की श्रेष्ठता से प्रभावित होकर उन्होंने अपने मूलधर्म का परित्याग कर दिया हो इसे स्वीकार नहीं किया जा सकता। किवदंती रूप में तानसेन का एक शाही राजकुमारी से प्रेम और फिर अपनाने के लिये धर्म परिवर्तन की घटना प्रचलित है। साथ ही तानसेन का अकबर की पुत्री मेहरूनिसा से प्रेम फिर विवाह किवदंती का उल्लेख मिलता है। यह आश्चर्यजनक हैं कि तानसेन के मुसलमान होने का विवरण उस काल के किसी कवि अथवा इतिहासकार ने नहीं दिया।

तानसेन केवल एक सुर-साधक ही नहीं थे। वह एक स्वर रचनाकार भी थे। गायक और कवि के रूप में उनकी प्रतिभा अभूतपूर्व थी। तानसेन ने संगीतसार, सुरमागर, और रागमाला तीन संगीत ग्रंथ लिखे हैं। वैष्णव मत के पावन अनुराग में पगे उनके अधिकांश अनुपम पद हिन्दू देवी देवताओं की वन्दना में लिखे गये हैं। कुछ पद ऐसे भी हैं जो ऊन्होंने बांधवगढ़ के नरेश रामचन्द्र और मुगल सम्राट अकबर की प्रशंसा में लिखे। ऊनके द्वारा विरचित गेय पदों से और वैष्णव वार्ता से यही प्रकट होता है कि तानसेन अपने जीवन काल में कभी भी मुसलमान नहीं हुए। 'नरवर गढ़ के राजा आमकरण से तानसेन की भेंट" नामक एक वार्ता से यह विदित होता है कि राजा ने तानसेन की प्रेरणा से अपना समस्त राज वैभव त्याग दिया था। और तानसेन के द्वारा वे वल्लभ सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये थे। संगीत प्रेमी राजा आसकरण ने अपना शेष जीवन बृन्दावन के बाग बगीचों और मंदिरों में कृष्ण भक्ति के गीत गाकर व्यतीत किया।

तानसेन सम्राट अकबर के दरबार में लगभग २७ वर्ष तक रहे।

जीवन की इस लम्बी अवधि में उन्होंने कितनी ही बार मथुरा वृन्दावन और गोकुल के धार्मिक पर्वों, उत्सवों और त्यौहारों में भाग लिया। इससे विदित होता है कि वैष्णव धर्म के प्रति तानसेन की पूर्ण आस्था थी। अटूट विश्वास और अनुराग था। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कोई भी बड़ा प्रलोभन उन्हें हिन्दू से मुसलमान होने को बाध्य नहीं कर सका। सम्राट अकबर का युग धार्मिक स्वतन्त्रता और समानता का युग था। सुल्तान काल के वे सभी अमानुषिक मजहबी कर जिनसे हिन्दू प्रजा पीड़ित थी बादशाह ने समाप्त कर दिये। बादशाह ने धर्म के नाम पर कभी अत्याचार नहीं किये। उस युग में संस्कृति, साहित्य और संगीत तीनों का विकास हुआ। सूर मीरा, तुलसी और तानसेन इसी युग की देन है। यदि अकबर का काल क्रूर सुल्तानी शासकों जैसा मजहबी अत्याचारों से भरा होता तो ये प्रतिमाएं कभी पैदा नहीं होतीं।

तानसेन की मृत्यु आगरा में २६ अप्रैल सन १५८९ ई० में हुई। अकबर नामा और मुस्लिम तिथि के अनुसार भी तानसेन का मृत्युकाल २४ रज्जब सन् ९९७ हिजरी ठहरता है। तानसेन की मृत्यु के सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रचलित हैं। मृत्यु के पश्चात तानसेन का शव बादशाह अकबर ने ग्वालियर दफनाने भेज दिया हो। प्राचीन ग्रंथों में इस बात का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु ग्वालियर में सूफी सन्त मुहम्मद गौश की दरगाह के निकट तानसेन का मकबरा देखकर ऐसा लगता है शायद उनकी मुस्लिम पत्नी मेहरुन्निसा ने उस अमर संगीतकार की कीर्ति स्मृति हेतु उन्हें समाधिस्थ कर दिया हो।

प्रस्तुत उपन्यास में मैंने भारतीय इतिहास के गौरवमय अतीत को अंकित किया है। उपन्यास के अधिकांश पात्र ऐतिहासिक हैं। घटनाएं भी ऐतिहासिक हैं। मैंने उस युग की सभी ऐतिहासिक घटनाओं, किम्वदन्तियों और जनश्रुतियों को उपन्यास में स्थान दिया है। उपन्यास में वर्णित प्रायः सभी ऐतिहासिक स्थानों को मैंने देखा है।

पर्वत शृंखलाओं और वन सम्पदाओं से भरा प्रकृति-दुलारा बेंहट आज भी मेरी आंखों में उभर आता है। मैंने शासकीय सेवा के सात महीने वहाँ व्यतीत किये। सघन अमराइयों और उपत्यकाओं के बीच संगीत सम्राट तानसेन के आराध्यदेव शंकर टेढ़ी मढ़िया में आज भी बैठे हैं। मैंने भगवान शंकर के कई बार दर्शन किये और प्रफुल्लित मन से ऊंचे स्वर में कई बार गीत गाये। छलछलाती झिलमिल नदी की लहरों में घन्टों बैठकर नहाया भी। बेंहट अतीत की गौरवपूर्ण गाथाओं से भरा एक ऐतिहासिक गांव है। तानसेन के जीवन के सम्बन्ध में आज भी बड़े चाव से वहां के लोग तरह-तरह की कथायें सुनाते हैं।

उपन्यास की पृष्ठभूमि निर्मित करने में मुझे डा० प्रभूदयाल मित्तल डा. सरयूप्रसाद अग्रवाल, स्वर्गीय राहुल साँकृतायण और डा० आर्शी बादी लाल तथा प्रो० कृष्णचंद वर्मा का बहुत कृतज्ञ हूं जिनके ऐतिहासिक ग्रन्थों के अध्ययन से उपन्यास लिखने में सफल हो सका। लेकिन सबसे अधिक आभारी मैं अपने प्रकाशक बन्धुवर श्री रामप्रसाद अग्रवाल का हूं जिन्होंने मुझे संगीतकार तानसेन के जीवन पर उपन्यास लिखने को प्रेरित किया। इस अवसर पर मैं सूचना तथा प्रकाशन शाखा से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र मध्यप्रदेश सन्देश के मुख्य सम्पादक श्री रघुवीर सेवक दीक्षित और श्री पौराणिक जी का विशेष आभारी हूं जिनके सौजन्य से मुझे तानसेन के जीवन सम्बन्धी चित्र और लेख आदि प्राप्त हुये। तथा समय-समय पर उपन्यास के कुछ अंश प्रकाशित कर मुझे प्रोत्साहित किया। पुस्तक के सुरुचिपूर्ण एवं कलात्मक मुद्रण के लिये साधना प्रेस के श्री नारायणसिंह वर्मा भी धन्यवाद के पात्र हैं।

रंग पंचमी **महेन्द्रकुमार मुकुल**

२७-३-७०

● ● ●

जीवन की इस लम्बी अवधि में उन्होंने कितनी ही बार मथुरा वृन्दावन और गोकुल के धार्मिक पर्वों, उत्सवों और त्यौहारों में भाग लिया। इससे विदित होता है कि वैष्णव धर्म के प्रति तानसेन की पूर्ण आस्था थी। अटूट विश्वास और अनुराग था। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त कोई भी बड़ा प्रलोभन उन्हें हिन्दू से मुसलमान होने को बाध्य नहीं कर सका। सम्राट अकबर का युग धार्मिक स्वतन्त्रता और समानता का युग था। सुल्तान काल के वे सभी अमानुषिक मजहबी कर जिनसे हिन्दू प्रजा पीड़ित थी बादशाह ने समाप्त कर दिये। बादशाह ने धर्म के नाम पर कभी अत्याचार नहीं किये। उस युग में संस्कृति, साहित्य और संगीत तीनों का विकास हुआ। सूर मीरा, तुलसी और तानसेन इसी युग की देन है। यदि अकबर का काल क्रूर सुल्तानी शासकों जैसा मजहबी अत्याचारों से भरा होता तो ये प्रतिमाएं कभी पैदा नहीं होतीं।

तानसेन की मृत्यु आगरा में २६ अप्रैल सन १५८९ ई० में हुई। अकबर नामा और मुस्लिम तिथि के अनुसार भी तानसेन का मृत्युकाल २४ रज्जब सन् ९९७ हिजरी ठहरता है। तानसेन की मृत्यु के सम्बन्ध में विभिन्न मत प्रचलित हैं। मृत्यु के पश्चात तानसेन का शव बादशाह अकबर ने ग्वालियर दफनाने भेज दिया हो। प्राचीन ग्रंथों में इस बात का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। किन्तु ग्वालियर में सूफी सन्त मुहम्मद गौश की दरगाह के निकट तानसेन का मकबरा देखकर ऐसा लगता है शायद उनकी मुस्लिम पत्नी मेहरुन्निसा ने उस अमर संगीतकार की कीर्ति स्मृति हेतु उन्हें समाधिस्थ कर दिया हो।

प्रस्तुत उपन्यास में मैंने भारतीय इतिहास के गौरवमय अतीत को अंकित किया है। उपन्यास के अधिकांश पात्र ऐतिहासिक हैं। घटनाएं भी ऐतिहासिक हैं। मैंने उस युग की सभी ऐतिहासिक घटनाओं, किम्वदन्तियों और जनश्रुतियों को उपन्यास में स्थान दिया है। उपन्यास में वर्णित प्रायः सभी ऐतिहासिक स्थानों को मैंने देखा है।

पर्वत शृंखलाओं और वन सम्पदाओं से भरा प्रकृति-दुलारा बैहट आज भी मेरी आंखों में उभर आता है। मैंने शासकीय सेवा के सात महीने वहाँ व्यतीत किये। सघन अमराइयों और उपत्यकाओं के बीच संगीत सम्राट तानसेन के आराध्यदेव शंकर टेढ़ी मढ़िया में आज भी बैठे हैं। मैंने भगवान शंकर के कई बार दर्शन किये और प्रफुल्लित मन से ऊंचे स्वर में कई बार गीत गाये। छलछलाती झिलमिल नदी की लहरों में घन्टों बैठकर नहाया भी। बैहट अतीत की गौरवपूर्ण गाथाओं से भरा एक ऐतिहासिक गांव है। तानसेन के जीवन के सम्बन्ध में आज भी बड़े चाव से वहां के लोग तरह-तरह की कथायें सुनाते हैं।

उपन्यास की पृष्ठभूमि निर्मित करने में मुझे डा० प्रभूदयाल मित्तल डा. सरयूप्रसाद अग्रवाल, स्वर्गीय राहुल साँकृतायण और डा० आर्शीवादी लाल तथा प्रो० कृष्णचंद वर्मा का बहुत कृतज्ञ हूं जिनके ऐतिहासिक ग्रन्थों के अध्ययन से उपन्यास लिखने में सफल हो सका। लेकिन सबसे अधिक आभारी मैं अपने प्रकाशक बन्धुवर श्री रामप्रसाद अग्रवाल का हूं जिन्होंने मुझे संगीतकार तानसेन के जीवन पर उपन्यास लिखने को प्रेरित किया। इस अवसर पर मैं सूचना तथा प्रकाशन शाखा से प्रकाशित होने वाले साप्ताहिक पत्र मध्यप्रदेश सन्देश के मुख्य सम्पादक श्री रघुवीर सेवक दीक्षित और श्री पौराणिक जी का विशेष आभारी हूं जिनके सौजन्य से मुझे तानसेन के जीवन सम्बन्धी चित्र और लेख आदि प्राप्त हुये। तथा समय-समय पर उपन्यास के कुछ अंश प्रकाशित कर मुझे प्रोत्साहित किया। पुस्तक के सुरुचिपूर्ण एवं कलात्मक मुद्रण के लिये साधना प्रेस के श्री नारायणसिंह वर्मा भी धन्यवाद के पात्र हैं।

रंग पंचमी **महेन्द्रकुमार मुकुल**

२७-३-७०

●●●

१

ग्वालियर दुर्ग पराभव

ग्वालियर दुर्ग फिर उजड़ गया था। नगर के भव्य मन्दिर प्रासाद और भवन आताताई अफगान सैनिकों के हाथों खण्डहर बन गये थे। तीन ओर ऊंची-ऊंची पहाड़ियों से घिरे विन्ध्य पर्वत की एक विशाल श्रेणी पर स्थित दुर्ग विगत की गौरवपूर्ण गाथाओं को अन्तराल में समेटे अश्रु बहा रहा था। ग्यारहवीं शताब्दी से लेकर पन्द्रहवीं और सौलहवीं शताब्दी तक न जाने कितनी बार उसे पराजय का मुख देखना पड़ा। आक्रान्ता गुलाम तुगलक, खिलजी, सैयद लोदी और मुगलों की विशाल वाहिनी के आगे कितने रण बाँकुरे राजपूतों ने रक्त की अन्तिम बूंद बहाकर उसकी रक्षा की। न जाने कितनी वीर ललनाओं ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिये उसकी गोद में हवन कुण्ड बनाकर जौहर का अनुष्ठान किया।

दुर्ग के पूर्वी भाग की पहाड़ी पर स्थित मान मन्दिर जो कभी राजा मानसिंह का सभा भवन था। शहंशाह बाबर जिसकी मनोहर बुर्जियों, दीवारों और पाषाण निर्मित मानव, हंस, सिंह, हाथी और केले के वृक्षों को देख मोहित हो गया था। पत्थर की नयनाभिराम जालियों की तराश, मीनाकारी और पच्चीकारी को देख उसके विध्वंस के लिये उठे हाथ रुक गये थे। वही मान मन्दिर आज शेरशाह सूरी के परिवार का षडयंत्र स्थल बन बन गया था। मान मन्दिर के एक

गवाक्ष में बहुत दिनों तक रोग शैया पर पड़े इस्लाम शाह के शव को श्वेत कफन में लिपेट सहसराम अपने पिता शेरशाह की कब्र के पास दफनाने भेज दिया था। शव को गये अभी तीन दिन ही हुए थे कि उसके बारह वर्षीय पुत्र फिरोजशाह को जो सूरवंश का उत्तराधिकारी बना था, सहसा निजाम खाँ सूर के पुत्र मुबारिक खाँ ने कर्ण मंदिर के शाही हरम में घुसकर तलवार के घाट उतार दिया। पति इस्लाम शाह की मृत्यु और पुत्र फिरोजशाह के एकाएक भाई के हाथों कत्ल हो जाने के कारण बीबीबाई पागल हो गई। उसने कर्ण मन्दिर की छत से छलांग लगा कर आत्महत्या करली। खूनी मुबारिक खां महमूद शाह आदिल की उपाधि धारण कर गद्दी पर बैठ गया।

महमूद शाह आदिल जब ग्वालियर छोड़ कर चुनार के लिये गया तब उसने दुर्ग के सभी देवालय ढहा दिये थे। दुर्ग के नीचे हिंडोला द्वार के पास कला के पारखी राजा मानसिंह के द्वारा स्थापित संगीत विद्यालय भी उसके क्रोध से न बच सका। विद्यालय के एक-एक संगीत कक्ष को नष्ट कर दिया गया। दीवारों को ढहा दिया। उसके वाद्य यन्त्र तोड़ दिये। और पाषाण कला कृतियां भग्न कर दीं।
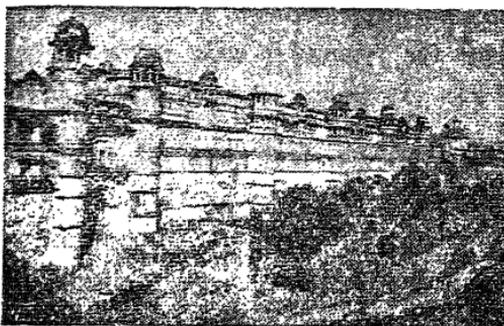
मान मंदिर

हिंडोला द्वार के पास एक शिला-खण्ड पर तन्ना जीवन के गहन विषाद और विक्षोभ में डूबा हुआ बैठा था। वह डबडबाए नेत्रों से

दुर्ग की भग्न प्राचीरों की ओर देख रहा था। सांझ का धूमिल आवरण आकाश से उतर कर दुर्ग की दीवारों को धीरे-धीरे ढाँकता जा रहा था। हवा में आज आवेग नहीं था। पेड़, पौधे सभी मौन थे। आकाश में मंडराती पंक्तिबद्ध विहंगों की टोलियाँ दुर्ग की दीवारों पर बने रन्ध्रों की ओर चली आ रही थीं। नगर के भीतर कोई हलचल नहीं थी। अफगान सैनिकों के आतंक से प्रजा सहमी हुई थी।

दुर्ग के भग्नावशेषों को देखकर सहसा तन्ना की अन्तरात्मा चीख पड़ी। रण बांकुरे कछवाहो, प्रतिहारो और तोमरो आज तुम कहां हो ? बर्बर आताताई अफगान सैनिकों ने तुम्हारे दुर्ग के पत्थर हिला दिये हैं। तुम्हारे जिन शिल्पियों ने प्रस्तरों को प्रतिमाओं का रूप देकर तुम्हारे राज भवन, प्रासाद और अतःपुर को अपनी कलापूर्ण मनोरम कृतियों से सजाया था वे सब भग्न हो गये।

धीरे धीरे सांझ का धुंधलका रात्रि के गहन अन्धकार में बदलता जा रहा था। दुर्ग वीरान और सूनसान था। तन्ना भाव-विभोर होकर बैठा था। अवसाद में डूबे तन्ना ने विस्फरित नेत्रों से गूजरी महल की ओर देखा। सहसा उसकी आंखों में तोमर कालीन इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ खुल गये। तन्ना की अश्रु पूरित आंखों में गूजरी महल के झरोखे उभर आये। महल के सूने झरोखों को देखकर तन्ना का हृदय विक्षोभ से भर गया। वह सोचने लगा। राजा मानसिंह और महारानी मृगनयनी का यह प्रणय-प्रासाद पहले कितना भव्य और सुन्दर था। प्रासाद के एक-एक कक्ष में मृगनयनी के थिरकते पांवों के नूपुरों की रुनझुन गूंजती रहती थी। जब प्रणय की पागल पपीहरी मृगनयनी ध्रुपद के मधुर अलाप वीणा के झंकृत तारों के साथ खींचती होगी तब सारा प्रासाद गूंज उठता होगा।

एकाएक तन्ना को लगा मानो गूजरी महल के ऊपरी झरोखे से कोई मधुर स्वर लहरी उसके कानों में प्रतिध्वनित हो रही

है। उसने झरोखे की ओर निहारा। तन्ना को लगा मानो गूजरी रानी अपने मृदु अरुण अधरों पर मुस्कान की आभा बिखेरे खड़ी हो। कितना अद्‌भुत भव्य और मनमोहक रूप है। शरद के दूधिया चांद की तरह उसका उज्ज्वल मुख। अरुण अधरों के बीच धवल दन्त पंक्ति। शुका जैसी नासिका। वन की उन्मुक्त हिरणी की तरह मदमाते नयन। कमल पादप से कोमल कपोल। मणि मुक्ताओं और स्वर्ण आभूषणों से भरी ग्रीवा। रत्न जटित कंचुकी से कसे दो उरोज। कटि में लाल रेशमी लंहगा। और हरी गोटे जड़ी ओढ़नी से ढका हुआ शीश। झरोखे में मृगनयनी का गौरवर्ण तन पूर्णिमा की छिटकती दमकती चांदनी सा लग रहा था।

गूजरी महल के झरोखे में मृगनयनी की एक झलक विद्युत की तरह उभरी और फिर से विलुप्त हो गई। तन्ना का मस्तिष्क सुधियों से भर गया। सुधियों की परतें एक के बाद एक खुलने लगीं। उसकी आँखों में राजा मानसिंह और मृगनयनी के प्रथम मिलन की झांकी उभर आयी। दुर्ग के पश्चिम में विंध्याचल की सुरम्य छोटी-छोटी उपत्यकायें और पहाड़ियों के बीच पलास विटपों से आच्छादित राई गांव था। गांव के उत्तरी सिवान पर साँक नदी की लहरों का कलकल राग गूंजता रहता था।

सावन का महीना था। आकाश काले-काले मेघों से भरा था। हरित दूर्वांकुरों से भूमि का रूप नई नवेली दुलहिन की तरह सजा हुआ था। गांव के बाहर एक पनघट था। उस दिन आकाश से वर्षा की रिमझिम फुहारें झर रही थी। मृगनयनी पनघट से घर की ओर लौट रही थी। उसके शीश पर पानी के भरे दो घड़े थे। सहसा उसके मार्ग को दो जंगली भैंसों ने आकर रोक दिया। मृगनयनी रुक गई। वह भैंसों का भीषण द्वन्द्व देखने लगी। क्रोधातुर भैंसों के नथुने सर्प की तरह फुंफकार रहे थे। सहसा बादलों की तेज गर्जन के साथ जल
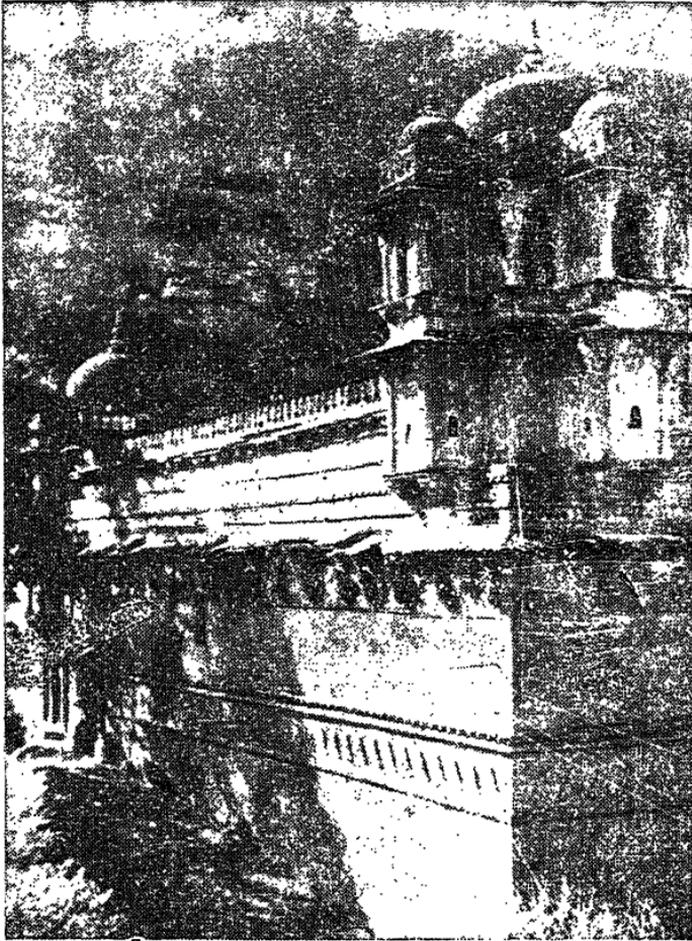
(गूजरी महल)

की फुहारें भी तेज हो गई। ठण्डी हवा के झोकों ने मृगनयनी के शरीर में कम्पन्न भर दिया। शीश पर रखे जल भरे घड़ों का बोझ उसे असह होने लगा। वह कब तक प्रतीक्षा करे। उसने आगे बढ़कर अपने

हाथों से भैंसों के सींग पकड़े और उन्हें अलग कर दिया। दोनों भैंसे जंगल की ओर भाग गये। शिकार को आया राजा मानसिंह नदी के किनारे एक टीले पर खड़ा यह सब देख रहा था। गूजरी कन्या की असीम शक्ति, साहस और सबसे अधिक उसके सौन्दर्य की अद्भुद छटा को देख उस पर मोहित हो गया। राजा ने मृगनयनी के आगे विवाह का प्रस्ताव किया। मृगनयनी के अरुण कपोल नारी सुलभ लज्जा से दीप्त हो गये। अधरों पर स्मित की मृदु रेखा खिच गई। गूजरी की बड़ी बड़ी कजरारी आंखें नत हो गईं। और एक दिन वह गूजरी कन्या प्रणय के बन्धन में बंधकर ग्वालियर दुर्ग पर महारानी बनकर आ गई।

तन्ना के मस्तिष्क में राजा मानसिंह और मृगनयनी के पावन प्रणय के भाव सागर के ज्वार की तरह उठे और समाप्त हो गये। तन्ना ने अपनी दृष्टि गूजरी महल से हटाली। वह फिर दुःख के महा उदधि में डूब गया। संगीत विद्यालय के भग्नावशेष रह रह कर उसके मन में पीड़ा भर रहे थे। उसकी संगीत साधना अधूरी रह गई थी। वह कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा था। रात्रि के गहन अन्धकार में दुर्ग ऐसा डूब गया था जैसे टूटी हुई नाव सागर में जल समाधि ले लेती है।

तन्ना निराश पीड़ित और बेचैन दुर्ग के हिंडोला द्वार से बाहर निकल आया। रात्रि के अन्धकार में उसके पाँव बेंहट की ओर जाने वाली एक ऊबड़-खाबड़ पगडण्डी पर बढ़ गये।

२

झिलमिल नदी किनारे

ग्वालियर से कालपी और कालिंजर जाने वाले मार्ग पर लगभग पच्चीस कोस पर बेहट पड़ता है। एक ढलावदार ऊंची सी पहाड़ी पर छोटा सा दुर्ग है। दुर्ग की रक्षा के लिये चारों ओर चौड़ी और गहरी खाई है, जो सदैव वर्षा के जल से भरी रहती है। दुर्ग का मुख्य द्वार झिलमिल नदी की ओर पूर्व की दिशा में है। बेहट का दुर्ग जिस पहाड़ी पर हैं, वह उत्तर पूर्व और दक्षिण पूर्व की पर्वत श्रेणियां से बिल्कुल अलग है। दोनों पर्वतों के बीच सघन वन कंदरायें और भयावह उपत्यकाएं हैं।

पूर्व की ओर उठी हुई दो पर्वत शृंखलाओं के बीच झिलमिल नदी बड़े-बड़े शिलाखण्डों से टकराती हुई लहरों का मधुर संगीत वन में घोलती हुई बह रही है। कहीं कहीं नदी के किनारे पेड़ों के सघन झुरमुट हैं। चारों ओर ऊंची-ऊंची घाटियां और वादियां हैं। बेहट से पूर्व दिशा में जहां दो ढलावदार घाटियां दो सगी बहनों की तरह गले आ मिली हैं, वहां लता, वृक्षों और गल्मों से आच्छादित गहरी उपत्यकाएं हैं। एक विशाल बट वृक्ष के नीचे एक ऊंचे से चबूतरे पर महादेव की मढ़िया के चारों ओर दालान है। मढ़िया तक पहुंचने के लिये चबूतरे के दक्षिण भाग पर एक ऊंचा सा द्वार है। मढ़िया के चारों ओर

वृक्षों की सघन शीतल छाया है। सूर्य की प्रखर रश्मियां भी धरती पर उतर नहीं पाती।

फागुन का महीना था। वन में बसन्त की सुषमा बिखरी हुई थी। वट, पीपल, आम, महुआ, पलास, करील झरवेरी नई-नई कोपलों की भीनी भीनी सुगंध उंडेल रहे थे। बासन्ती पवन वन कुसुमों, कलियों और कोपलों से सुगंध भर कर झिलमिल नदी की धवल उज्ज्वल लहरियों के साथ नर्तन कर रहा था। विहंगों का मधुर स्वर गूंज रहा था। कोयल की कुहक पर हर्ष की हिलोरें भरती हुई झिलमिल नदी। रंग-बिरगे फूलों पर तितलियों का नर्तन और मधु के लोभी भ्रमरों का गुंजन, वन में विहंसते ऋतुराज का स्वागत कर रहा था।

खेतों में गेहूँ का गदराया योवन था। हवा में लहलहाती पीली-पीली सरसों थी। किसी अल्हड़ नवयुवती के बिखरे जूड़े की तरह अरहर लहलहा रही थी। चारों ओर हरी भरी फसलों को देखकर कृषक का हृदय गद-गद हो उठता था। फागुन में खेतों की माटी को नई नवेली दुलहिन की तरह सजी हुई देख कृषक हर्ष और उल्लास से झूमता हुआ फाग के रस भरे बोल गुनगुना उठता था। दूर कहीं नदी के तीर वन के कन्हैया चरवाहे की बंसी बज उठती थी। पनघट पर खनकती चूड़ियों के संगीत में स्त्रियों के अधर फड़क उठते थे।

आज बेहट की वीथियों, बागों और वनों में सर्वत्र बसन्त का नूतन उल्लास बिखरा हुआ था। शिवरात्री का पावन पर्व था। झिलमिल नदी के किनारे महादेव की मढ़िया के पास मेला जुड़ा था। आस पास के लोग बड़ी संख्या में जमा हुए थे। पिछले वर्ष बेहट में शिवरात्री का मेला नहीं लगा था। ग्वालियर से कालपी जाते समय महमूद शाह आदिल की फौज ने बेहट को बड़ी निर्दयता से लूट लिया था। इस बार कोई संकट नहीं था। बेहट में शिवरात्री का मेला बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा था। तन्ना संगीत में प रगत होकर ग्वालियर से लौटा

था। उसने ग्वालियर में राजा मानसिंह के संगीत विद्यालय में शिक्षा ग्रहण की थी।

तन्ना का ध्रुपद राग सुनने के लिये आस पास के गाँव के स्त्री-पुरुष सभी आये थे। मढ़िया में शिवलिंग पर पवित्र गंगाजल और दूध चढ़ाया जा रहा था। पेड़ों से आच्छादित उपत्यका में पीतल के घन्टों का निनाद और हर हर महादेव के नाम का जयघोष गूंज रहा था। मेले में गुर्जर और जाट स्त्रियां अधिक थीं। मांसल पूर्ण शरीर। गोरा सांवला-सलोना रूप था। योवन की आभा से दीप्त युवतियों के चेहरे वन कुमुमों की तरह विहंस रहे थे। वन में बसन्त की सुषमा को देख कोई स्त्री मस्त हो फाग गुनगुनाती। कोई लता गुल्मों की ओट हो किसी सुन्दर युवक को देखकर खिलखिलाकर हंसती और मुस्कराती। चारों तरफ उन्मुक्त वातावरण था। पुरुषों पर भी फागुन का रंगीन नशा छाया हुआ था। गंध भीनी बासन्ती पवन में सभी मदहोश डोल रहे थे।

आधा दिन चढ़ आया था। मढ़िया के सामने स्त्री-पुरुष आ आकर जमा हो रहे थे। पेड़ों की घनी छाया थी। फागुन की शीतल हवा अंग-अंग में सिहरन भर रही थी। तन्ना शिवलिंग के सम्मुख ध्यान-मग्न बैठा था। उसने अभी अपने नेत्र खोले नहीं थे। हवा में वट वृक्ष की सघन लम्बी जड़ें शाखायें और टहनियां झुक झूम रही थीं। पत्ते पायल से खनक रहे थे। भगवान आशुतोष की आराधना में लीन तन्ना की आँखों में सहसा सत्रह वर्ष पुरानी एक स्मृति मूर्ति की तरह उभर आई। सत्रह वर्ष पहले का जीवन कितना दयनीय और असहनीय था। मां की कोख से जन्म लि ा लेकिन माँ की पावन गोद मे शैशव की सुलभ क्रीड़ायें नहीं की। पिता का दुलार और प्यार मिला। किन्तु क्षणिक। उसे अनाथ, असहाय और अकेला छोड़कर स्वर्ग सिधार गये। उस समय वह आठ या नौ वर्ष का होगा। गांव में लोगों की दया पर पलता

था। गाँव की बकरियाँ चराकर पेट भरता था। वह जन्म से वाणी-विहीन था। वाणी के अभाव में वह मन के भावों को प्रकट करने में असमर्थ था। वह नित्य भगवान शंकर की मूर्ति के सम्मुख खड़ा होकर वाणी का वरदान माँगता।

एकाएक उस भयावह मेघाच्छादित काली रात्रि का स्मरण करते ही तन्ना कांप गया। उस दिन भादों की भयानक अन्धेरी रात्रि थी। आकाश काली-काली भयावनी घटाओं से भरपूर था। बिजली की कौंध और बादलों के भीषण अट्टहास से पूरा गाँव कांप उठता था। गांव के बाहर जंगल का सन्नाटा। दूर तक फैला हुआ घोर अन्धकार। चारों ओर घहराते बरसाती नदवा, नाले और निर्झर। मूसलाधार वर्षा प्रलय ढहा रही थी। बादल वज्र की तरह आकाश में घहरा रहे थे। जंगल में पछुआ हवा पेड़ों के साथ ताण्डव नृत्य कर रही थी। टेकरी के पीछे झिलमिल नदी उमड़ रही थी। नदी की भीषण उत्ताल तरंगे महादेव की मढ़िया तक उफनती चली आ रही थी। गाँव के पूर्वी सिवान पर बहने वाला नाला भी समुद्र की तरह उमड़ा हुआ था। उस दिन वह प्रकृति की समस्त आपदाओं और आपत्तियों को पार करता हुआ महादेव की मढ़िया में आ गया था। आरती का दीप मढ़िया में प्रज्वलित करते ही अनायास उसके मुख से हर हर महादेव का स्वर एक वेगवान निर्झर की तरह फूट पड़ा था।

कुछ क्षण बाद विगत जीवन के दृश्य तन्ना की आँखों में समाप्त हो गये। उसने अपने दोनों नेत्र खोले। मढ़िया के सम्मुख उमड़ते अपार जन समूह को देख तन्ना का मन विमुग्ध हो गया। एक उन्मुक्त विहंग की तरह उसके नेत्र वन के वृक्षों पर विहार करने लगे। तन्ना की दिव्य छवि को देख सारा जन-समुदाय गद-गद हो रहा था। शशि की ज्योत्सना सा दीप्त उसका मुख, बड़ी-बड़ी आँखें, घुघराले काले केश, उठी हुई नासिका, उन्नत ललाट को देख तन्ना किसी देव पुरुष की तरह लग रहा था।

तन्ना ने अपने आराध्य महादेव की आराधना में एक ध्रुपद गाया। तानपूरा झंकृत हो उठा। तन्ना की मृदु मोहक रागिनी को सुन वन के पशु पक्षी मुग्ध हो गये। कोयल कुहक उठी। पत्ते खनक उठे। विहंगों का मधुर कलरव छिड़ उठा। आस पास के पहाड़ों से उड़ उड़ कर विहंगों के समूह मढ़िया के पास खड़े वृक्षों पर आ-आ कर बैठने लगे। वन के मृग तन्ना के मधुर राग को सुन उन्मुक्त हो उठे। वे कन्दराओं और उपत्यकाओं से निकल-निकल चारों ओर विचरण करने लगे। सहसा हृदय के किसी आरोह-अवरोह के साथ एक मधुर स्वर फूटा। सारा वन प्रान्तर गूंज उठा। संगीत की मधुर ध्वनि में सब लोग विभोर हो उठे। सहसा हृदय की किसी तीव्र स्वर लहरी के साथ आकाश मेघाच्छन्न हो गया। और फिर विद्युत की कौंध के साथ ही सारा वन पावस की रिमझिम-रिमझिम फुहारों से भींग उठा। तन्ना के मधुर राग से भगवान आशुतोष भी झूम उठे। अचानक एक तेज गड़गड़ाहट हुई। मढ़िया के सम्मुख जुड़ा हुआ जन-समुदाय आश्चर्य में पड़ गया। तन्ना की न जाने किस मधुर लय से मढ़िया की दीवारें टेढ़ी पड़ गई थीं।

३

बेंहट में स्वामी हरिदास

चैत्र का महीना था। पूनम की रात्रि थी। झिलमिल नदी का स्वच्छ जल शशि की ज्योत्सना से शुभ्र दिखाई दे रहा था। आम्र मंजरियों की महक से सारा वन प्रान्तर सुरभित था। वन का वातावरण बिलकुल शान्त था। पवन में निस्तब्धता थी। हरित वृक्ष, लता और गुल्मों से आच्छादित पर्वत शृंखलाओं का दृश्य चाँदनी रात में बड़ा ही सुन्दर, रमणीय और मनमोहक था।

झिलमिल महादेव की मढ़िया के पार्श्व में एक वट वृक्ष है। वट वृक्ष के बायें भाग में एक खुला दालान है। दालान में स्वामी हरिदास कुछ साधू सन्तों के साथ रात्रि विश्रम के लिये ठहरे हुए थे। दोपहर के समय जब स्वामी हरिदास बेंहट में पधारे तो उनके दर्शनों के लिये सारा गाँव उमड़ आया था। स्वामी हरिदास चित्रकूट की यात्रा करके लौटे थे। सुबह ग्वालियर होकर वृन्दावन जाने का विचार था।

आकाश के मध्य अमृत घट सा चन्द्रमा चमक रहा था। झिलमिल नदी के उस पार एक चौकोर चबूतरे पर तन्ना ध्यान-मग्न बैठा था। वह निर्निमेष—नैसर्गिक सौन्दर्य को अपने नेत्रों से निरख रहा था। वह अनुभव कर रहा था कि आज प्रकृति में कितना उल्लास, हर्ष और आनन्द है। इसके पहले उसने प्रकृति का इतना अनुपम सौन्दर्य कभी

नहीं देखा था। झिलमिल नदी की निर्मल लहरों पर हंसता हुआ चन्द्रमा। आम्र कुंजों से उठती हुई मादक महक। हरित परिधान पहने ऊंचे-ऊंचे ये शैल-शिखर। तन्ना ने अपनी दृष्टि आकाश पर डाली। आकाश में पूनम का चांद विहंस रहा था।

तन्ना ने जीवन के एक अनिर्वचनीय आनन्द से भरकर पुनः आम्र वृक्षों की ओर निहारा। चांदनी में चमकती खिलती आम्र शाखायें और नन्हीं-नन्हीं कोमल फुनगियाँ मंजरियों का साज श्रृंगार किये इस प्रकार शोभा दे रही थीं मानो कोई नई नवेली, दुलहिन स्वर्ण आभूषण और हरित पीत परिधान पहने शोभित होती है। तन्ना को आज अनायास अपने आम्र वृक्षों पर मोह हो आया। पूर्वजों के हाथों लगाए गए ये आम्र वृक्ष आज कितने बड़े और सघन हो गये हैं। आज आम्र का एक-एक वृक्ष फल फूल रहा था। धरती से एक सोंधी-सोंधी गन्ध उठ रही थी जो उसके मन को मोहित किये हुए थी। तन्ना मौन, अवाक और अपलक सा आम्र वृक्षों की ओर निहार रहा था। हवा में झूमती कोमल फुनगियां किसी चंचल सुन्दर नर्तकी की भांति थिरकती हुई सी लग रही थीं।

सहसा महक और मादकता भरी चांदनी रात्रि में कोयल की मधुर कुहुक गूंज उठी। धरती पर उज्ज्वल छिटकती चाँदनो भरी रात्रि को दिन समझ अन्य पक्षी भी आम्र शाखाओं पर चहचहाने लगे। पक्षियों का कलरव सुन तन्ना को लगा जैसे प्रभात छिटक आया हो। कुछ क्षण बाद पक्षी मौन हो गये। किन्तु कोयल की कुहुक कभी-कभी आम्र-पल्लवों से उठकर आकाश में फैल जाती थी। तन्ना ने दृष्टि गड़ाकर देखा। एक छोटी सी आम्र टहनी पर कोयल बैठी है। उसे लगा मानो अमृत कलश चन्द्रमा से झरती चांदनी में कोयल किसी साद्यस्नात सुन्दरी की तरह स्नान कर रही हो।

कोयल एक बार फिर कुहकी। इस बार कोयल के स्वर में पहले

जैसी मधुरता और मादकता नहीं थी। तन्ना को लगा जैसे कोयल के स्वर में कोई वेदना, पीड़ा और करुणा है जो रह-रहकर उसकी हृदय तंत्री को झंकृत कर रही है। तन्ना का मन भावुक हो गया। कोयल की आन्तरिक वेदना ने उसके मन में करुणा भर दी। उसकी हृदय तंत्री झनझना उठी। उसके मुख से संगीत का मधुर स्वर फूट पड़ा। तन्ना की मधुर तान से निर्जन वन गूंज उठा। आम्र पल्लवों पर चन्द्र रश्मियां थिरकने लगीं। वन के वृक्ष, पत्ते, फल फूल, लता और गुल्म सभी झूम उठे। झिलमिल महादेव के मन्दिर के चारों ओर बिखरी हुई रात्रि की निस्तब्धता तन्ना के मधुर नाद के आनन्द में डूब गई। आकाश में चन्द्र रथ स्थिर हो गया। मानो नाद विमोहित अश्व अब आगे बढ़ना ही नहीं चाहते हों। स्वर माधुर्य समेटे पवन उन्मुक्त होकर वृक्षों से आलिंगन करने लगा।

एकाएक मधुर नाद कान में पड़ते ही स्वामी हरिदास की नींद टूट गई। अन्य साधू-सन्त भी जाग गये। अर्द्ध रात्रि में स्वामी हरिदास शंकरा राग सुनकर आश्चर्य में पड़ गये। इस निर्जन वन में ऐसा कौन सा संगीतज्ञ है जो शंकरा राग अलाप रहा है। स्वामी हरिदास ने बड़ी उत्सुकता से आम्र कुंजों की ओर निहारा। उन्हें कहीं भी व्यक्ति दिखाई नहीं दिया। किन्तु गीत की मधुर ध्वनि उनके कानों में निरन्तर गूंज रही थी। संगीत शिरोमणि स्वामी हरिदास सोचने लगे—यहां निश्चित ही कोई गायक है। जो संगीत विद्या में निपुण है। उसके स्वरों में एक गति है, प्रवाह और ओज है, मादकता और मधुरता है। अमराई के उस पार तन्ना के स्वर जैसे-जैसे गूंजते वैसे वैसे स्वामी हरिदास के हृदय में उत्कण्ठा सागर की उत्ताल तरंगों की तरह मचल उठती। स्वामी जी की आँखें चारों ओर निहारने लगतीं। वे मंदिर से उतरकर उधर ही बढ़ गये जिधर से स्वरों का आरोह-अवरोह उठ रहा था।

सहसा उनकी दृष्टि नदी के उस पार चबूतरे पर बैठे एक युवक पर

पड़ी जो चांदनी रात्रि में अकेला बैठा राग अलाप रहा था। जब राग समाप्त हुआ तब स्वामी हरिदास तन्ना के बिलकुल निकट जाकर खड़े हो गये।

उन्होंने पूछा—"बालक, तुम अभी अभी कौन सा राग अलाप रहे थे।" तन्ना खड़ा हो गया। उसने स्वामी जी को आदर से नमस्कार किया। और फिर कहा—"स्वामी जी, मैं शंकरा राग अलाप रहा था।"

स्वामी हरिदास की उत्कण्ठा और बढ़ गई। उन्होंने पुन: पूछा—"बालक, तुमने संगीत शिक्षा कहां से प्राप्त की है?"

तन्ना ने कहा—"स्वामी जी, मैंने दो वर्ष तक ग्वालियर रहकर राजा मानसिंह के संगीत विद्यालय में संगीत की शिक्षा ग्रहण की है।"

"तुम वहां से लौट क्यों आये?"

"स्वामी जी, संगीत विद्यालय एक मुस्लिम सूबेदार ने नष्ट कर दिया। जो मान मंदिर कभी मृदंग, पखावज, वीणा और तानपूरे की मधुर झंकार और गायकों की मधुर आलापों से गूंजता था आज वह मोहम्मद शाह आदिल के एक सूबेदार सुहाल खां का भोग विलास का केन्द्र बन गया है। ग्वालियर के सभी गायक इधर उधर चले गये। मैं संगीत का अधूरा ज्ञान लेकर अपने गांव लौट आया हूं।"

"बालक यदि तुम्हारे मन में संगीत प्राप्त करने की लग्न है, सच्ची लालसा और अभिलाषा है, तो मैं तुझे संगीत की शिक्षा दूंगा। तुझे मेरे साथ वृन्दावन चलना होगा।

तन्ना वृन्दावन जाने के लिये तत्पर हो गया। सुबह जब बेंहट से स्वामी हरिदास ने वृन्दावन के लिये प्रस्थान किया तो उनके साथ तन्ना भी गया। तन्ना के जाते ही झिलमिल की अमराई सूनी हो गई।

::: ::: :::

४

आँधी का झौंका

अकबर का जीवन पंजाब की धरती पर हवा के एक हलके झोंके की तरह उठा और फिर वह आंधी के एक झोंके की तरह आकाश में छा गया। उसके पितामह बाबर ने भारत की राजशक्ति को खनवा के युद्ध में नष्ट कर दिया था। राणा सांगा की पराजय ने बाबर को भारत का शहंशाह बना दिया था। लेकिन बाबर के द्वारा युद्ध में जीती हुई बाजी को उसके पुत्र हुमायुं ने खो दिया था। शेरशाह भारत का सम्राट बन गया था। किन्तु उसके उत्तराधिकारी अयोग्य निकले।

मेदनीराय की मृत्यु के बाद चन्देरी का प्रभुत्व मालवा से उठ गया था। माण्डू के सुल्तान बाज बहादुर ने सारंगपुर और उज्जैन पर अधिकार कर लिया था। वह एक स्वतन्त्र शासक बन गया था। गोंडवाना में रानी दुर्गावती राज्य कर रही थी। वह बड़ी निडर, निर्भीक और रण कुशल नारी थी। उसने दो बार मालवा के सुल्तान बाज बहादुर को युद्ध में पराजित किया था। दक्षिण में खान देश, अहमद नगर, बरार, बीदर और गोलकुण्डा तथा बीजापुर स्वतन्त्र मुस्लिम राज्य थे। लेकिन उनमें अनबन थी। प्रत्येक राज्य एक दूसरे के राज्य को हड़पने का प्रयत्न करता था।

भारत में हिन्दुओं की शक्ति क्षीण हो गई थी। इस समय महोबा के परमार, कालिंजर के चन्देल, ओरछा के बुन्देल, ग्वालियर के तोमर और रणथम्भोर के हाड़ा राजपूत बार-बार मुस्लिम आक्रान्ताओं से टकरा-टकरा कर अपना अस्तित्व समाप्त कर चुके थे। राजस्थान में भी निर्बल पड़ गया था। राणा सांगा का प्राण-प्रदीप बुझते ही मेवाड़ पतन के घोर अन्धकार में डूब गया था। चित्तौड़ का दुर्ग राणा कुम्भा और राणा संग्रामसिंह की वीरताओं का स्मरण कर अपने विगत वैभव पर अश्रु बहा रहा था। मेवाड़ के राजपूत जो सदैव बल, पौरुष और पराक्रम में प्रसिद्ध रहे। जिनके हृदय में युद्ध की लालसा सदैव रही। जिनकी रक्त प्यासी तलवार सदैव शत्रु का लहू पीने को रण में चम-चमाती रही। जिनमें देश-भक्ति की पावन भावना थी। जो देश, धर्म और जाति की मर्यादा के लिए सदैव अपने प्राणों का उत्सर्ग करते रहे। जिनकी वीर नारियों ने सतीत्व की रक्षा के लिए अपने प्राण जौहर की ज्वालाओं में होम दिये। पद्मिनी का जौहर भारत के हृदय-पटल पर आज भी अंकित है। आज वही मेवाड़ गृह कलह की विकराल अग्नि में जल रहा था।

महाराणा संग्राम सिंह की मृत्यु हो चुकी थी। उनका पुत्र विक्रमा-दित्य अत्याचारी था। प्रजा असुन्तुष्ट थी। प्रजा ने विद्रोह कर विक्रमा-दित्य को गद्दी से उतार दिया। छै वर्ष का बालक उदयसिंह गद्दी पर बैठा। उसका संरक्षक एक वर्ण संकर सरदार बनवीर बनाया गया। उसके मन में पूर्ण स्वतंत्र शासक बनने के भाव उदय हुए। बनवीर ने विक्रमादित्य का वध कर दिया। वह उदयसिंह को भी इसी भाँति मारना चाहता था। किसी प्रकार इस बात का रहस्य उदयसिंह की धाय पन्ना को लग गया। वह राजवंश की रक्षा के लिए अपने पुत्र का बलिदान करने को तत्पर हो गई। बनवीर की कृपाण से पन्ना धाय का पुत्र टुकड़े-टुकड़े हो गया। त्याग और बलिदान की मूर्ति पन्ना धाय के

कारण मेवाड़ का सिसोदिया वंश नष्ट होते-होते बच गया। इस समय मेवाड़ की गद्दी पर उदयसिंह राज्य कर रहा था। जोधपुर का राजा मालदेव बूढ़ा था। शेरशाह के हाथों पराजित हो जाने के कारण उसमें अब इतनी शक्ति और सामर्थ्य नहीं रही थी कि वह किसी विदेशी आक्रान्ता से लोहा ले सके। आमेर के कछवाह राजपूत भी मौन थे।

शेरशाह के उत्तराधिकारियों में अभी सिकन्दर सूर शेष था। बूढ़ा मेहमूद शाह अदाली भी चुनार में जीवित था। उसका हिन्दू सेनापति हेमू शक्तिशाली था। हुमायुं की मृत्यु का समाचार पाते ही हेमू ने बयाना से बढ़कर पहले आगरा पर अधिकार किया और फिर वह दिल्ली की ओर बढ़ गया। हेमू की विशाल सैन्य-शक्ति को देखकर तारदीवेग कांप गया। वह दिल्ली को हेमू के लिए छोड़कर सरहद चला गया। तारदीवेग की इस असफलता से मुगलों का बड़ा अपमान हुआ था। अकबर के प्रधान सेनापति बैरामखां ने तारदीवेग की कायरता से क्रुद्ध होकर उसका वध कर दिया।

हेमू दिल्ली की गद्दी पर विक्रमादित्य की पदवी धारण कर बैठ गया था। पृथ्वीराज की मृत्यु के पश्चात लगभग साढ़े पांच सौ वर्ष बाद दिल्ली की सत्ता एक हिन्दू के हाथ आ गई थी। लेकिन हेमू राजपूत नहीं था। उसे किसी भी राजपूत राजा ने अच्छी दृष्टि से नहीं देखा। हेमू के हाथों दिल्ली की बागडोर अधिक दिनों तक सुरक्षित न रह सकी। पानीपत के मैदान में वह अफगान फौज को लेकर अकबर से लड़ा और पराजित हुआ।

अकबर ने कालनोर में ठहर कर देश की वर्तमान राजनैतिक परि-स्थिति को पूरी तरह समझा लिया था। वह यह जानता था कि भारत के राजाओं में एकता का अभाव है। हेमू हिन्दू है। अफगान सैनिक उससे अप्रसन्न हैं। अकबर ने समय का लाभ उठाया। वह अपने पिता के खोये हुए राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए बैरामखां के साथ दिल्ली

की ओर चल दिया। दिल्ली से कुछ दूर उत्तर में पानीपत का मैदान था। अकबर और हेमू की टक्कर हुई। अकबर की अग्नि उगलती तोपों से पानीपत का मैदान गूंज उठा। भीषण रक्तपात हुआ। खूंखार तातारी, ईरानी और मुगलों के आगे अफगान सैनिक टिक न सके। हेमू का हाथी मुगल सैन्य-दल में फंस गया था। सहसा उसकी आंख में एक बाण आकर लगा। मार्मिक पीड़ा हुई। हेमू हाथी के हौदे से युद्ध-स्थल में गिर पड़ा। अचेत और आहतावस्था में हेमू को मुगल सैनिकों ने बन्दी बना लिया। पराजित हेमू अकबर के सम्मुख हाजिर किया गया। बैराम खाँ के आदेश पर अकबर ने हेमू का सिर तलवार से उड़ा दिया। अकबर की इस प्रथम विजय ने भारत के इतिहास में उसे सम्राट बना दिया।

अकबर दिल्ली का बादशाह बन गया था। किन्तु वह अपने पिता हुमायूं की तरह एक असफल शासक नहीं बनना चाहता था। वह भारत की धरती पर मुगल साम्राज्य का एक विशाल और सुदृढ़ महल निर्मित करना चाहता था, जिसे कोई ढहा नहीं सके। वह चंगेज, तैमूर और बाबर की तरह तलवार के बल पर भारत में विजय प्राप्त करना चाहता था। अकबर ने मुगल सैनिकों को चार भागों में बांट दिया। खानजामा को जौनपुर जीतने के लिये भेजा गया। सिकन्दर सूर के विरुद्ध प्रयाण का नेतृत्व बैराम खां के सुपुर्द कर दिया और अकबर ने स्वयं मकसूद अली, कीया खां और हबीब अली तीन सेनापतियों को लेकर ग्वालियर की ओर प्रस्थान किया।

□ □ □

५

ग्वालियर विजय

राजा मानसिंह के मरने के बाद ग्वालियर के वैभव पर अंधकार का आवरण चढ़ गया था। उसके ऐश्वर्य का प्रखर सूर्य अस्त हो गया था। निरन्तर होने वाली इतिहास की घटनाएं उसके पतन के पृष्ठ लिख रही थीं। दुर्ग की प्राचीरें पराधीनता की बेड़ियों से जकड़ गई थीं। सिकन्दर लोदी के बार-बार आक्रमणों से दुर्ग की दीवारें हिल गई थीं और बाबर, हुमायुँ और शेरशाह के तोपखानों ने उसे खण्डहर बना दिया था। ग्वालियर की भूमि ने न जाने कितनी बार राजपूतों की रण-गर्जना सुनी थी। आज अकबर की रण-दुंदुभी गूंज रही थी। किन्तु ग्वालियर के दुर्ग में पहले जैसी शक्ति और साहस नहीं था जो अकबर की विशाल वाहिनी से टक्कर ले सके। आक्रान्ता विदेशी शक्ति से वह पहिले ही पराजित और पदाक्रान्त हो चुका था। वह निर्बल, जर्जर और भग्न दुर्ग एक बूढ़े व्यक्ति की तरह पर्वत की पीठ पर खड़ा हाँफ रहा था।

इस समय ग्वालियर का दुर्ग रामशाह के अधिकार में था। रामशाह शेरशाह का सेनापति था। वह ग्वालियर के राजवंश का था। उसने महमूद शाह आदिल के एक किलेदार सुहेल खाँ से दुर्ग किसी तरह प्राप्त कर लिया था। आज अकबर अपनी विशाल सेना को लेकर दुर्ग के

पूर्वी अंचल में खड़ा था। दुर्ग की सुरक्षा के लिये रामशाह ने पूरा-पूरा प्रबन्ध कर लिया था। किन्तु सब व्यर्थ रहा। अकबर की विकराल तोपों के सम्मुख दुर्ग की प्राचीरें ध्वस्त हो गईं। मुगल सैनिक दुर्ग में प्रवेश कर गये। रामशाह पराजित हो गया। वह दुर्ग के पश्चिमी भाग से उतर कर मेवाड़ की ओर भाग गया। ग्वालियर दुर्ग अकबर के आधीन हो गया।

विजयी अकबर ने दुर्ग में हिन्डोला द्वार से प्रवेश किया। गूजरी महल और मान मन्दिर की हिन्दू स्थापत्य कला के दो भव्य प्रासाद उसके सम्मुख थे। अकबर ने मान मन्दिर के पाषाण सौन्दर्य को निहारा। उसकी पाषाण कला में इतनी सुषमा थी और इतना आकर्षण था कि वह विमुग्ध हो गया। मन्दिरों की नैनाभिराम नक्काशी और सजावट को देख उसके मन में हिन्दू शिल्प-कला से सुसज्जित महल आगरा में बनाने का एक भाव उठा। भाव-विभोर अकबर मान मन्दिर के सभा-भवन में आकर खड़ा हो गया। मन्दिर में उत्कीर्ण मूर्तियाँ और भित्त-चित्रों का कलात्मक सौष्ठव और उनकी शारीरिक भाव भंगिमाओं को देख उसे लगा कभी यह भवन शौर्य, शृंगार और संगीत का संगम रहा होगा। यहां कभी राजा मानसिंह तोमर का दरबार लगता होगा। कभी अन्तरंग गोष्ठियां होती होंगी तो कभी नृत्य और संगीत से इसकी दीवारें गूंजती होंगी।

अकबर की आँखों में कला का परम सौन्दर्य साकार होकर उभर आया। मान मन्दिर के स्वर्णिम अतीत की पाषाणी कला के मौन अधरों को देख अकबर ने मुग्ध भाव से अपने सेनापति से कहा—"मकसूद अली, यहां का हिन्दू राजा नृत्य और संगीत का बड़ा शौकीन रहा होगा। मेरे कानों में वीणा के झंकृत तारों के साथ किसी नारी के थिरकते पाँवों के नूपुरों के स्वर गूंज रहे हैं। आँखों में विभिन्न

भव्य मुद्राओं के साथ किसी सुन्दर नारी का मोहक रूप बार-बार उभर जाता है।"

मकसूद अली ने शहंशाह अकबर को सलाम झुकाते हुये कहा—"जहांपनाह, यहां का हिन्दू राजा मानसिंह तोमर नृत्य और संगीत का प्रेमी था। उसकी रानी मृगनैनी नृत्य और संगीत की कला में परम प्रवीण थी। आलीजाह, सुना है ग्वालियर में आज भी बड़े-बड़े गवैये मौजूद हैं। आपका हुक्म हो तो उन्हें आपकी खिदमत में पेश किया जा सकता है।"

अकबर ने बड़ी उत्सुकता से कहा—"मकसूद अली, हम ग्वालियर के गवैयों का राग सुनना चाहते हैं। आज ग्वालियर फतह की खुशी में संगीत की महफिल बुलाई जाये।"

रुपहली चांदनी रात्रि थी। चन्द्र-ज्योत्सना दुर्ग को ज्योतिर्मय कर रही थी। मुगल फौजें विश्राम कर रही थीं। मान मंदिर का सभा भवन मृदग, तानपूरा और वेणु-वादन से मुखरित हो रहा था। संगीत की महफिल जुड़ी हुई थी। सभा भवन के चारों ओर कन्दील और मशालें जगमगा रही थीं। सभा भवन के एक ओर बिछे मसनद पर शहंशाह अकबर बैठा था। ग्वालियर पर विजय प्राप्त करते समय अकबर की आयु अठारह या उन्नीस वर्ष की थी। वह बलिष्ठ, हट्टा-कट्टा तुर्क युवक था। उसकी रगों में ईरानी माँ और तुर्क पिता का रक्त प्रवाहित हो रहा था। आज अकबर का मन बड़ा प्रफुल्लित था।

अनायास अकबर का मन भावुक हो गया। उसके मानस-क्षितिज पर विचारों के बादल उमड़ने-घुमड़ने लगे। पिता की मृत्यु को हुये आज चार या पाँच वर्ष हो गये। वह तब से निरन्तर युद्धों में ही फंसा हुआ है। एक पल को भी उसे चैन नहीं मिला। गूंजती रण-दुंदुभी, हाथियों की भयावह चिघाड़ें, घोड़ों की कर्कश हिनहिनाहटें और तोपों की तीव्र गर्जना उसके कानों के पर्दे हिलाती रहती हैं। वह

हर समय युद्ध की विकराल आंधी में उड़ता रहता है। ग्वालियर के मान मन्दिर में मसनद पर बैठा शहंशाह अकबर आज कुछ राहत का अनुभव कर रहा था। वह जीवन के एक अनिर्वचनीय आनन्द से भर गया था। सदैव रण-दुंदुभी की कर्कश ध्वनि सुनने वाले कान आज जीवन का मधुर राग सुन रहे थे। तानपूरा और वीणा के झंकृत तारों से अकबर की हृदय-तंत्री भी झंकृत हो उठी थी। उसका रोम-रोम संगीत के मधुर आलाप से विमोहित हो गया था। मान मन्दिर के सभा भवन में ध्रुपद के मधुर बोल गूंज रहे थे। अकबर का गर्वीला मन कोमल और स्नेह-सिक्त हो गया था।

अकबर के सम्मुख ग्वालियर के सभी प्रसिद्ध गायक और वादक जुड़े हुये थे। बाबा रामदास, सुमान खाँ, श्रीज्ञान, मियां चाँद, विचित्र, वीर मण्डल, नानक और लाल अपने मादक और मनमोहक राग आलापों से अकबर के मन को मोहित कर रहे थे। नगर के सभी गायक और वादक राजा मानसिंह द्वारा स्थापित संगीत विद्यालय में शिक्षा पाये हुये थे।

संगीत की महफिल लगभग आधी रात तक चलती रही। जब महफिल समाप्त हुई तो अकबर ने उठते हुये कहा—"मकसूद अली, कल फौजी पड़ाव के साथ ये गवैये भी आगरा चलेंगे।"

मान मन्दिर से शहंशाह अकबर उठ गया। नगाड़े और नकीबों का स्वर दुर्ग में गूंजता रहा। शहंशाह अकबर कर्ण मन्दिर में लगे, एक शाही शयन-कक्ष में विश्राम के लिये पहुंच गये।

६

बैराम खाँ का पतन

ग्वालियर विजय के बाद अकबर आगरा लौट आया। मालवा से आदम खाँ ने विजय का वृत्तांत बादशाह को लिखकर भेजा। लेकिन आदम खाँ माण्डू से लौटा नहीं। उसने सूबेदार साविक खाँ के साथ कुछ हाथी बादशाह को भेज दिये और बाजबहादुर का खजाना अपने पास रख लिया। युवक अकबर का क्रोध ज्वाला बन आँखों से फूट पड़ा। वह स्वयं आदम खाँ को दण्ड देने के लिए माण्डू चल पड़ा। माण्डू पहुँचने पर आदम खाँ ने बादशाह का बड़ा सम्मान किया। उसने बाजबहादुर का सारा खजाना बादशाह को भेंट कर दिया। लेकिन अकबर का दिल आदम खाँ की तरफ से पूरी तरह साफ नहीं हुआ। वह पीर मुहम्मद को मालवे का सूबेदार बनाकर आदम खाँ को अपने साथ आगरा ले आया।

बहुत दिनों तक राजधानी से बाहर रहने के कारण आगरा का राजनैतिक वातावरण अकबर को बदला हुआ सा लगा। बैराम खाँ ने युवक सम्राट की परवाह न करते हुए शाही सेवकों के साथ दुर्व्यवहार किया। उसने उन्हें छोटी-छोटी भूलों पर कठोर दण्ड दिए और सम्राट के महावत को बिना किसी अपराध के ही मृत्यु-दण्ड दे दिया। इसके विपरीत बैराम खाँ

ने अपने सेवकों को खान तथा सुलतान की उपाधियां प्रदान कीं। बैराम खाँ के ये सब कार्य बादशाह की प्रतिष्ठा के बिलकुल प्रतिकूल थे।

बैराम खाँ शिया मत का अनुयायी था। उसने सुन्नी सम्प्रदाय के व्यक्तियों के हितों की परवाह न करते हुए अपने सह-धर्मियों का पक्ष-पोषण किया। उसने बहुत से सुन्नी पदाधिकारियों को उच्च पदों से हटाकर उनके स्थान पर शिया मत के अनुयायियों को नियुक्त कर दिया। बैराम खाँ के द्वारा शेख गदाई को सदर-ए-सुदूर नियुक्त किए जाने पर दरबार के सभी सुन्नी सरदारों में उत्तेजना फैल गई। क्रोध की ज्वाला इतनी प्रज्वलित हो गई कि बैराम खाँ इसकी लपट से न बच सका।

बैराम खाँ के प्रति माहम अनंगा के हृदय में आग जल रही थी। माहम अनंगा अकबर की प्रमुख धाय थी। शाही हरम में माहम अनंगा का प्रभाव था। वह मुगल दरबार में अपने पुत्र आदम खाँ की खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से बनाना चाहती थी। उसने दरबार के अन्य सुन्नी सरदारों का सहारा लेना चाहा। माहम अनंगा ने बैराम खाँ के प्रति जहर उगलना शुरू कर दिया। साम्राज्य के भीतर ईरानी और तूरानी अमीरों में उच्च पद पाने के लिए गहरी प्रतिद्वंद्विता शुरू हो गई।

मुगल सरदार तारदीवेग के वध को लेकर माहम अनंगा ने सुन्नी सरदारों के मन में बैराम खाँ के प्रति घृणा के भाव भर दिए। उसने एक दिन अकबर की माँ हमींदाबानू बेगम से कहा—"बैराम खाँ शिया मत का है। वह सुन्नी मुसलमानों को हेय-दृष्टि से देखता है। हमीदाबानू बेगम भी माहम अनगा के साथ हो गईं। वह भी मुगल दरबार में बैराम खाँ के बढ़ते प्रभाव को रोकना चाहती थीं।

बैराम खाँ के प्रति मुगल दरबार में उठ रहे तूफान का पता युवक सम्राट अकबर को हो गया था। हरम में भी कोलाहल था। युवक सम्राट अकबर कोई निर्णय नहीं कर पा रहा था। उसे बैराम खां की शक्ति का पता था। वह यह जानता था कि हुमायूं को और उसे हिन्दुस्तान का

राज-सिंहासन बैराम खां के कारण ही मिला है। एकाएक बैराम खां को संरक्षक और सेनापति के पद से हटाने की युवक सम्राट अकबर में सामर्थ्य नहीं थी।

दो महीने व्यतीत हो गये। अकबर और बैराम खां की भेंट नहीं हुई—अकबर अपना समय आखेट में काटता। लेकिन एक दिन दरबार का मौन कोलाहल ज्वालामुखी वन फूट पड़ा। सब लोग आश्चर्य में पड़ गये। बैराम खां जब दिल्ली से आगरा लौटकर आया तो उसके साथ मिर्जा कामरान का पुत्र अब्दुल कासिम मिर्जा भी आ गया। बैरामखाँ ने शाही महल के सामने बनी एक हवेली में मिर्जा के ठहरने की व्यवस्था कर दी।

बैराम खां के शत्रुओं ने तत्काल यह अफवाह फैला दी कि वह अकबर को राजसिंहासन से उतार कर कामरान के पुत्र अब्दुल कासिम को भारत का शासक बनाना चाहता है। अकबर के वध हो जाने की आशंका से माँ हमीदाबानो बेगम भी भयभीत हो गई। उसने अकबर से कहा—बैराम खाँ की नियत कुछ साफ नहीं। माहम अनंगा भी अकबर के सामने फूट फूटकर रोने लगी। इस तरह शाही हरम की बेगमों ने अकबर के मन में बैराम खाँ की स्वामि-भक्ति पर सन्देह का भाव घोल दिया। अकबर ने तत्काल दिल्ली के सूबेदर शाहबुद्दीन को विचार विमर्श के लिए आगरा बुलाया।

शाहबुद्दीन के आगरा पहुँचते ही युवक सम्राट अकबर का उत्साह बढ़ गया। अब वह ऐसे अवसर की खोज में था कि बैराम खाँ पर कोई आरोप लगाकर उसे प्रधान पद से अलग कर दिया जावे।

जिस समय बैरामखाँ के विरोधी सम्राट अकबर के असंतोष को बढ़ाने के लिए सभी संभव उपायों का उपयोग कर रहे थे उसी समय कुछ युद्ध-क्षेत्रों में सैनिक पराजय मिली। चुनार और रण थम्भोर की असफलताओं से युवक सम्राट के मन को आघात लगा।

एक दिन बैराम खाँ के पतन की पृष्ठभूमि तैयार हो गई। दुर्ग के भीतर शाहबुद्दीन के साथ सम्राट की मंत्रणा हुई। हमीदाबानो बेगम और माहम अनंगा भी साथ थीं। बैराम खां उस दिन दुर्ग में नहीं था। वह मथुरा की ओर गया था। जब वह आगरा लौटकर आया तो सम्राट अकबर आखेट के बहाने बयाना चला गया। वहाँ से उसने एकाएक दिल्ली को प्रस्थान किया। दिल्ली जाकर उसने बैराम खाँ के पास एक पत्र भेजा। पत्र-वाहक का कार्य मौलवी अब्दुल लतीफ ने किया। पत्र की भाषा कुछ इस प्रकार थी—

मुझे आपकी ईमानदारी और स्वामि-भक्ति पर पूरा भरोसा था। इसलिये मैंने सल्तनत का सब काम आपके सुपुर्द कर दिया था। अब मैंने यह निश्चय कर लिया है कि शासन का सारा भार अपने हाथ में ले लूं। इसलिए मैं चाहता हूं कि आप मक्का की यात्रा करें। मक्का से लौटने पर आपके जीवन के निर्वाह के लिए हिन्दुस्तान के कुछ परगने जागीर में लगा दिए जावेंगे।

आगरा आकर मौलवी अब्दुल लतीफ ने बैराम खां को सम्राट का पत्र दिया। सम्राट का पत्र पढ़कर बैराम खाँ को बड़ा आघात पहुंचा। वह कुछ निर्णय नहीं कर पा रहा था। शेख गदाई ने सम्राट अकबर का वध कराने का परामर्श किया। लेकिन बैराम खाँ इस कुकृत्य के लिए तत्पर नहीं हुआ। उसने शेख गदाई से कहा—"मैं आजन्म बादशाह का वफादार रहा हूं। मुगल सल्तनत के विरुद्ध बगावत करके हिन्दुस्तान के इतिहास में अपना नाम कलंकित नहीं कराना चाहता। मैं अपने समस्त अधिकारों को त्याग कर हज के लिए मक्का चला जाऊंगा।"

बैराम खाँ ने सम्राट के सम्मुख आत्म-समर्पण कर दिया। उसने अपने एक सैनिक हुसैन कुली बेग के हाथ झण्डा और नक्कारा बादशाह के पास दिल्ली भेजकर सेनापति और संरक्षक का पद त्याग दिया। इस प्रकार मुगल साम्राज्य के भीतर उठा तूफान शांत हो गया।

७

आगरा दुर्ग

आगरा का अति सुदृढ़ दुर्ग यमुना के पश्चिमी तट पर स्थित है। सलीम शाह सूर के पुराने दुर्ग का कुछ विध्वंस भाग अकबर की आज्ञा से फिर निर्मित हो गया था। पहले दुर्ग की रक्षा के लिए केवल एक ही दीवार थी। किन्तु अब अकबर ने दुर्ग को लाल पत्थर की दोहरी दीवार से घेर दिया था। दुर्ग की दोनों चौड़ी दीवारें इतनी ऊंची और दुरुह बना दी गई थी कि बाहर से कोई भी शत्रु दुर्ग में प्रविष्ट नहीं हो सकता था। दुर्ग की बाहरी दीवार चालीस फीट ऊंची और भीतर की दीवार सत्तर फीट ऊंची कर दी गई थी। दुर्ग के सम्मुख विस्तृत खाई खोदी गई, जो शाह बुर्ज और जल द्वार को छोड़ कर सम्पूर्ण दुर्ग को घेरे हुये थी। खाई तीस फीट चौड़ी और पैंतीस फीट गहरी थी। जो सदैव यमुना के श्यामल जल से भरी रहती थी।

दुर्ग के पीछे यमुना का श्यामल जल कल-कल का मधुर नाद करता हुआ बह रहा था। यमुना की चंचल लहरों का नर्तन ऐसा लगता मानो बादशाह के सम्मुख कोई ईरानी और तातारी गौर वर्ण और छरहरे वदन की नर्तकी मस्ती में झूम-झूम कर नृत्य कर रही हो। दुर्ग की विशाल लाल-लाल कम्पित आकृति जल में पड़ती तो ऐसा लगता जैसे

कोई शाही हरम की बेगम निरावरण हो यौवन की मस्ती में मदहोश हो हमाम में जल क्रीड़ा कर रही हो।

आज दुर्ग के भीतर विजयोल्लास का पर्व मनाया जा रहा था। सारा दुर्ग हर्ष, उल्लास और उन्माद में डूबा हुआ था। सम्राट अकबर मालवा फतह करके आगरा लौट आए थे। विद्रोही आदम खाँ को माँडू से वापस बुला कर बादशाह ने उसके स्थान पर पीर मोहम्मद को मालवे का सूबेदार बना दिया था। उज्जैन, ग्वालियर, अजमेर और जौनपुर तथा आमेर ने मुगल सल्तनत के आगे आत्म-समर्पण कर दिया था।

दुर्ग के भीतर लाल पत्थरों से निर्मित दीवाने आम एक नव-वधू की तरह सजा हुआ था। उसका प्रत्येक खम्भा विविध रंगों के रेशमीं बहु-मूल्य वस्त्रों से ढका हुआ था। फर्श पर काश्मीर और ईरान के हरे और लाल रेशमी मुलायम कालीन बिछे हुये थे। सिंहासन वाले कक्ष के दोनों ओर दो कक्ष थे जिनमें जालीदार दो खिड़कियाँ थीं। उनको रेशमी झालरों से सजा दिया गया था। इन्हीं खिड़कियों से हरम की बेगमें और शहजादियाँ आज के होने वाले दरबार की शोभा देखेंगी। दुर्ग के भीतर अमीर उमराव और मनसबदार सज-धज कर जा रहे थे। आगरे का विशाल दुर्ग विजयोल्लास के मधुर कोलाहल से गूंज रहा था। नौबत खाने से नफीस, नगाड़े, नफीरी और शहनाइयों का मधुर स्वर गूंज कर दुर्ग में धीरे-धीरे फैलता जा रहा था।

दरबार पूर्ण भर चुका था। फिर भी अमीर, उमराव और सामन्त बढ़ते जा रहे थे। मांडू, कड़ा मानकपुर, आमेर, और जौनपुर के सूबेदार बादशाह सलामत के आने की प्रतीक्षा में मौन होकर खड़े थे। सहसा नगाड़ों की ध्वनि तेज हो गई। नकीब ने आवाज बुलन्द की। दरबारे आम के बाहर दो कतारों में खड़े वलिष्ट हाथियों ने महावतों के इशारे पर सूंड़ें उठाकर बादशाह अकबर को सलाम किया। तातारी सैनिकों ने बादशाह सलामत के आने की सूचना आवाज लगाकर दी।

कुछ देर बाद बादशाह अकबर एक रत्न जटित सिंहासन पार आकर-बैठ गया। झाड़ फानूसी और कन्दीलों की रंगीन रोशनी में दरबारे आम झिलमिला रहा था। शहंशाह का मुख अत्यन्त गम्भीर और प्रभाव-शाली था। उन्नत ललाट तेज से चमक रहा था। देदीप्यमान मणि-मुक्ताओं की मालाओं से कण्ठ शोभित था। अधरों पर गुलाब के महकते फूलों की तरह मुस्कान बिखरी हुई थी। शहंशाह जलालउद्दीन अकबर ने सम्पूर्ण दरबार पर एक दृष्टि डाली और फिर सल्तनत के मन्त्री शमसुद्दीन मोहम्मद खाँ अतंगा से शाही सेना की कामयाबी के सम्बन्ध में पूछा, "अतंगा, काबुल का कोई समाचार आया है। बलवा शांत हुआ है या नहीं।

मन्त्री शमसुद्दीन अतंगा ने झुककर शहंशाह को सलाम किया और फिर कहा—"जहांपनाह, बदख्शां के मिर्जा सुलेमान ने जो काबुल में बलवा किया उसे हमारी बहादुर सेना ने कुचल दिया है। मिर्जा मोहम्मद हकीम का संरक्षक मुनीम खां काबुल से शहंशाह के दरबार में हाजिर होने को चल दिया है और जहांपनाह के हुक्म के मुताबिक जौनपुर के इलाके में बागियों के सर कुचल दिये हैं। मांडू का सुल्तान बाजबहादुर भी शाही सेनापति अब्दुला उजबक से पराजित होकर गुजरात भाग गया है। हजूरे आली, मिर्जा हुसैन अली ने राजपूत सरदार जयमल और देवदास को पराजित कर मेड़ता का दुर्ग फतह कर लिया है। सरदार आसफखां चुनार, बनारस और जौनपुर को जीतता हुआ अपनी जागीर कड़ा मानिकपुर लौट आया है।"

शाही सेना की निरन्तर कामयाबी पर युवक सम्राट अकबर का मन उन्मुक्त मयूर की तरह झूम उठा। उसने अपने दोनों हाथ आकाश की उस मूक सत्ता की ओर उठाते हुए कहा—"या अल्लाह, मुगलिया फौजें निरन्तर इसी तरह कामयाबी हासिल करती रहें" और फिर अतंगा की ओर दृष्टिपात करते हुए कहा—"अटंगा, हमारी बहादुर फौजें अब कहां के लिये कूच करेंगी ?"

अतंगा ने शाहंशाह अकबर को शाही फौजों के प्रस्थान की सूचना देते हुए कहा—"जहांपनाह, फौजें कल सुबह सेनापति मजनू खां काकशाल और जलालुद्दीन कुरची के नेतृत्व में बांधवगढ़ के लिये कूच करेंगी।"

"ऐसा क्यों अतंगा ? बांधवगढ़ का हिन्दू राज्य तो बहुत छोटा है। इतनी बड़ी मुगलिया मुहिम से वह क्या टक्कर लेगा," अकबर ने कहा।

'आलमपनाह, बाँधवगढ़ का हिन्दू राजा बड़ा शक्तिशाली है। चन्देलों का कलिंजर दुर्ग भी उसके अधिकार में है। महोबा का एक चन्देल सरदार आधारसिंह ने हमें खबर दी है कि बाँधवगढ़ के हिन्दू राजा रामचन्द्र बघेला के दरबार में हिन्दुस्तान का एक मशहूर गवैया तानसेन है। उसकी आवाज में बड़ी मिठास है। वह जब गाता है तो वन के हिरन मुग्ध होकर उसके पास चले आते हैं, आकाश में बादल उमड़ने-घुमड़ने लगते हैं। हमारी मंशा है कि दुनियां का ऐसा वेश कीमती कलाकार शहंशाह के दरबार की रौनक बढ़ाए।"

"बेशक अतंगा बेशक। हम हिन्दुस्तान के शहंशाह हैं। दुनियाँ की हर वेश कीमती चीज पर बादशाह का अधिकार होता है। बाँधवगढ़ के हिन्दू राजा को लिखो कि वह मुगलिया तख्त की आधीनता स्वीकर करे और तानसेन को आगरा शाही दरबार में भेज दे।"

बांधवगढ़ के फतह के लिए शाही सेना के प्रस्थान का हुक्म देकर अकबर दरबार से उठ गया। किन्तु शमसुद्दीन मोहम्मद अतंगा साम्राज्य के कार्यों में इतना व्यस्त रहा कि वह न उठ सका। माहम अतंगा का पुत्र अतंगा से अप्रसन्न था। मुगल दरबार में अतंगा के प्रभाव से आदम खाँ का प्रभाव घट गया था। जब आदम खां को यह समाचार मिला कि बाँधवगढ़ जाने वाली फौज का सेनापति अतंगा ने मजनू खां काकशाल को बना दिया है तो वह आग बबूला हो गया। आदम खाँ ने जवानी के जोश में आकर शमसुद्दीन मोहम्मद खां अतंगा का सिर तलवार से उड़ा दिया। और फिर एक हाथ में लहू से लथपथ अतंगा

का सिर लेकर ड्योढ़ी के सामने आकर पागलों की तरह तीव्र स्वर में चीखने लगा।

दुर्ग के भीतर कुहराम सा मच गया। आदम खां के खूंखार रूप को देखकर सबलोग भयभीत हो गये। शाही हरम की वेगमें कांप गई। लेकिन युवक सम्राट अकबर भयभीत नहीं हुआ। आदम खां को इस जघन्य अपराध की सजा देने के लिये वह ड्योढ़ी से बाहर निकल आया। ड्योढ़ी के सामने लगभग दो घण्टे तक अकबर और आदम खां की तलवारें खनकती रहीं। कुछ मुगल सैनिक बादशाह की रक्षा के लिये आगे बढ़े लेकिन अकबर ने उन्हें रोक दिया। अकबर स्वयं आदम खां को उस जघन्य अपराध की सजा देना चाहता था। कुछ देर बाद आदम खाँ आहत होकर भूमि पर गिर पड़ा। अकवर का क्रोध अभी शान्त नहीं हुआ था। उसने आदम खाँ को अपने हाथों से उठाकर दुर्ग की एक वुर्ज से यमुना नदी में फेंक दिया। पुत्र के वियोग में माहम अनंगा रात भर दुर्ग में सुबकती रही। खूनी आदम ख़ाँ का अन्त हो गया।

⁂ ⁂ ⁂

८

राजा रामचन्द्र बघेला के दरबार में तानसेन

एक अश्वारोही अमरपाटन से बांधवगढ़ जाने वाले मार्ग पर पवन वेग से दौड़ा चला जा रहा था। सघन वन, ऊंचीनीची पर्वत शृंखलाओं और भयावह कन्दराओं के बीच बांधवगढ़ का एक विराटकाय पर्वतीय भाग अश्वारोही को दूर से दिखाई दे रहा था। धीरे-धीरे सांझ की रक्ताभ रश्मियां दुर्ग की प्राचीरों के पीछे ढलने लगीं थीं। द्रुम लता और गुल्मों से ढकी घाटियों में सांझ का सन्नाटा बिखर गया था। दुर्गम पहाड़ी मार्ग को रौंदता हुआ अश्व आंधी की तरह उड़ा जा रहा था। सांझ की निस्तब्धता में पहाड़ियां, घाटियां और वियावान वादियां अश्व की टापों से गूंज रही थीं। अश्वारोही अर्धरात्रि के पहिले-पहिले दुर्ग के भीतर पहुंच जाना चाहता था।

अश्वारोही दुर्ग के एक समतल पर्वतीय भाग पर तेजी से दौड़ा चला जा रहा था। दुर्ग का मुख्य विशाल द्वार उसे दिखाई दे रहा था। दुर्ग के प्राचीरों पर शरद का दूधिया चाँद अपनी ज्योत्सना बिखेर रहा था। अमरपाटन के बघेले सामन्त जवाहरसिंह के लिये दुर्ग का द्वार खुल गया। घोड़े से उतर वह सीधा महाराज रामचन्द्र बघेला के दरबार में उपस्थित हुआ।

दुर्ग में शरदोत्सव मनाया जा रहा था। राजभवन के सुविस्तृत प्रांगण में नृत्य और संगीत का आयोजन किया गया था। प्रांगण के एक ओर ऊंचे से मंच पर महाराज रामचन्द्र बघेला बैठे थे। उनके दांयें-बायें राज्य के सम्भ्रान्त सामन्त, उमराव और सरदार थे। प्रांगण के मध्य राजगायक तानसेन और राजनर्तकी चन्द्रमोहनी और विविध वादक वृन्द थे।

तानसेन ने ध्रुपद के बोल के साथ गायकी शुरू की। वीणा, मृदंग और तानपूरे की मधुर ध्वनि के साथ ही चन्द्रमोहनी के नूपुर झंकृत हो उठे। कुछ क्षण बाद नृत्य और संगीत का समा बंध गया। राज गायक तानसेन के एक एक बोल पर नर्तकी चन्द्रमोहनी का अंग संचालन अद्वितीय था। उसकी ग्रीवा, कटि और भृकुटि कटाक्ष तथा चंचल-चपल चरणों की द्रुति गति पर सामन्त एक स्वर से वाह वाह कर उठते थे।

राजगायक तानसेन नर्तकी चन्द्रमोहनी की दिव्य छवि को अपने गीत के छन्दों में उतार रहा था। चन्द्रमोहनी के अरुण अधरों के बीच दाड़िम जैसे चमकीलें दांतों से झरती हुई मुस्कान पर सारा दरबार मोहित था। मृदंग की थाप और तानपूरे की मधुर झन्कार पर तानसेन के बोल सभा भवन में मधुरता घोल देते थे। तानसेन तानपूरे पर थिरकती उंगलियों के साथ मधुर राग अलाप रहा था—

गोरे मुख गोदना ठोड़ी सोहै, और लिलाट जराई की विदुरी।
और जो दसन बिराजत तापै, कजरारी अंखियान,
तापर सौंधे मीजीं लटें लटक रहीं, सोहैं चीकनी चीपुरी।

राज गायक तानसेन ने विभिन्न प्रकार के अलाप, बोल, गमक और तान तथा लय के चमत्कारों से श्रोताओं के हृदय तन्त्रों को झंकृत कर दिया।

सहसा राजा दरबार का संगीत स्तब्ध हो गया। वीणा मूक हो गई। मृदंग की थाप गूंज कर मौन हो गई। तानपूरे के तार टूट गये। तानसेन का बोल-अलाप बीच में ही रुक गया। चन्द्रमोहिनी के थिरकते

पांव सहम कर थम गये। राजभवन के प्रांगण में अमर पाटन का बघेला सामन्त जवाहरसिंह कमर में खड्ग बांधे और शरीर पर लोहे का कवच पहने सैनिक वेश में खड़ा हुआ था। अमरपाटन के सामन्त जवाहरसिंह पूरे सैनिक वेश में आकर सिंह की तरह गरज उठा था। महाराज रामचन्द्र आश्चर्य में पड़ गये। महाराज ने अपनी बघेली मूंछों पर ऐंठन भरते हुए कहा—क्या बात है ? जवाहरसिंह अमर पाटन से कब आए ?

"महाराज राज्य का एक सामन्त देशद्रोही बन गया है। वह अकबर के सूबेदार मजनू खां काकसाल और जलालउद्दीन कुरची को बुला लाया है। मुगलों की विशाल वाहिनी बांधवगढ़ से केवल तीस मील दूर रह गई है वह मार्ग के गांवों को लूटती हुई तूफान की तरह आगे बढ़ती चली आ रही है ?" जवाहर सिंह ने कहा।

महाराज रामचंद्र तुरन्त गम्भीर हो गये। क्रोध से भौंहें तन गईं। गले में पड़ी उज्ज्वल मुक्ताओं की माला को तोड़ते हुये वे सोचने लगे। वह यह जानते थे कि राज्य का कौन सामन्त है जो देशद्रोही बन सकता है ? कालिन्जर के किलेदार के अतिरिक्त कोई अन्य सामन्त देश के साथ विश्वासघात नहीं कर सकता। विद्रोही सामन्त कालिन्जर के राजा कीरतसिंह का रिश्तेदार था। वह शाही सेना के सहयोग से कालिन्जर का दुर्ग चाहता था। महाराज रामचंद्र बघेला ने शेरशाह की मृत्यु के बाद एक अफगान सूबेदार बिजली खां से कालिन्जर का दुर्ग कुछ धनराशि देकर खरीद लिया था।

महाराज रामचन्द्र बघेला को उस देशद्रोही विश्वासघाती सामन्त पर रह रहकर क्रोध आ रहा था। वे क्रोध के आवेग में सिंह की तरह सभा भवन में गरज उठे—"मेरे जीते जी वह देशद्रोही किलेदार बाँधवगढ़ दुर्ग तो क्या कालिजर दुर्ग की सीढ़ियां भी चढ़ नहीं सकता।"

बाँधवगढ़ के राज्य मन्त्री हनुमंत सिंह ने खड़क खींचते हुये कहा— "महाराज हम बाँधवगढ़ की रक्षा के लिए हंसते-हंसते अपने प्राणों का

बलिदान कर देंगे।" राज भवन का विशाल प्रांगण जो अभी-अभी संगीत के सागर में डूबा हुआ था वह एकाएक युद्ध की मंत्रणा का एक स्थल बन गया। सभा में बैठे सभी सरदार, सामन्त और उमराव उत्साह और उमंग से भरकर शत्रु के दल को कुचलने के लिए रक्त प्यासी तलवारों का चुम्बन करने लगे।

"महाराज, कालिंजर के किलेदार का राजद्रोह निःसंदेह अत्यधिक घृणित कुकृत्य है। ऐसे राजद्रोही विश्वासघाती के परिवार को बांधवगढ़ राज्य की पावन भूमि पर एक क्षण भी रहने का अधिकार नहीं। सर्प की संतान से सर्प ही उत्पन्न होगा। और सर्प का गुण है विष उगलना।"

महाराज रामचन्द्र ने राज्य मंत्री हनुमंत सिंह के क्रोध और आवेश मे भरे हुए वचनों को सुना। कुछ क्षण मौन और गंभीर बने रहने के बाद उन्होंने कहा—"राज मंत्री, कालिंजर के किलेदार ने शत्रु से मिलकर बांधवगढ़ को घोर संकट में डाल दिया है। निःसंदेह उस नराधम का अपराध अक्षम्य है। हमें इतना उसके परिवार से भय नहीं जितना उस नराधम से है। उसने बांधवगढ़ के राजकोष का, उसके ऐश्वर्य और वैभव का तथा स्वर सम्राट तानसेन का भेद अकबर को बता दिया होगा।"

कुछ देर बाद राजसभा के प्रांगण से उठकर महाराज रामचन्द्र कुछ सामन्तों के साथ सीधे बांधवाधीश श्री लक्ष्मण जी के मन्दिर गये। मन्दिर से लौटकर महाराज राजमहल के बाहरी कक्ष में दुर्ग की रक्षा के लिए मंत्रणा करने लगे। सामन्त जोरावर सिंह ने दुर्ग की प्राचीरों के साथ आगे बढ़ने वाली दोहरी चहार दीवारी की ओर दृष्टिपात करते हुए कहा—"महाराज, शत्रु पर आक्रमण करने के लिये प्राचीरों में बड़े-बड़े रन्ध्र बने हुए हैं। एक के विनष्ट होने पर दूसरी प्राचीर उपयोग में लाई जा सकती है। यहां से सैकड़ों फुट जंगल है। यहां से लक्ष्मण ताल के जल का भी उपयोग हो सकता है। बड़े-बड़े लोहे के कढ़ावों में

गर्म पानी कर शत्रु के ऊपर आसानी से फेंका जा सकता है।" युद्ध की मंत्रणा करने के पश्चात महाराज रामचन्द्र बघेला का क्षत्रिय धर्म हृदय में सागर के तूफानी ज्वार की तरह उमड़ पड़ा। मूछों पर ताव देते हुए उन्होंने प्राचीन राजपूती शौर्य परम्परा का स्मरण करते हुए कमर में झूमती हुई खड्ग को खींच लिया। शरीर की धमनियों में क्रोध की ज्वाला प्रज्वलित हो उठी। शौर्य, शक्ति और उत्सर्ग की भावना से प्रदीप्त महाराज रामचन्द्र बघेला का ललाट उन्नत हो गया।

विंध्याचल के गगन चुम्बित पर्वत पर स्थित बांधवगढ़ एक प्राकृतिक दुर्ग है। वन प्रान्तर में प्रवेश करते ही स्थान-स्थान पर पानी के छोटे-छोटे नद और निर्झरों का कल कल, छल छल का स्वर सुनाई पड़ता है। चारों ओर प्रपातों के भयावह दृश्य हैं, गिरिमालाओं से छलांग मारती हुई जलधाराओं का कारुणिक आर्तनाद मन को दहला देता है। दुर्ग के आसपास सारा जंगल एक दल दल सा बन गया है। बांधवगढ़ तक शत्रु का आना लोहे के चने चबाना है। महुआ, बेर, मकोय, फालसा, आमला और बासों के विशाल झुरमुटों से दुर्ग का पहाड़ी मार्ग ढका हुआ है। दुर्ग को चारों ओर से दो सुदृढ़ दीवारें घेरे हुई हैं। महाराज की आज्ञा से दुर्ग के बुर्जों, कोट और मीनारों पर भारी भारी तोपें चढ़ा दी गईं। दीवारों के रन्ध्रों के निकट धनुषबाणधारी सैनिकों को बिठा दिया गया और राजकुमार वीरभद्र महाराज की आज्ञा पाकर मुगलों के सैन्य दल को रोकने के लिए कुछ बघेले राजपूतों को लेकर दुर्ग से उतर अमरपाटन की ओर पहाड़ों, पठारों और कन्दराओं में मोर्चा साधकर बैठ गये। राजकुमार वीरभद्र के दुर्ग से जाते ही दुर्ग का मुख्य विशाल द्वार बन्द कर दिया। बड़े-बड़े पाषाण खण्डों से निर्मित दुर्ग का द्वार सुदृढ़ था। द्वार में दो मजबूत फाटक लगे हुए थे। जो लोहे के बड़े-बड़े नुकीले कीलों से जड़े हुए थे।

आकाश में शरद ऋतु का श्वेत दूधिया चाँद द्रुम लता, और गुल्मों

से आच्छादित पहाड़ों पर अपनी शीतल चांदनी छिटका रहा था। महाराज रामचन्द्र महल के उत्तरी प्रकोष्ठ में मौन और गंभीर खड़े थे। चिन्ताओं में निमग्न महाराज के ललाट पर कुछ श्वेद कण उभर आए थे। वे सोच रहे थे कि आज शरद की उज्ज्वल चांदनी में आपत्ति और विपत्ति के काले बादल मण्डरा उठे हैं। बांधवगढ़ युद्ध के भीषण संकट में फंस गया है। युद्ध के संकट से मुक्ति पाने के लिए उन्होंने बांधवाधीश श्री लक्ष्मण जी के मन्दिर की ओर अपने दोनों हाथ फैलाते हुए मन ही मन कहा—"हे भगवान, बाँधवगढ़ को युद्ध की विकराल अग्नि से बचाओ।"

महल के उत्तरी प्रकोष्ठ में चन्द्रमा का शुभ्र आलोक एक श्वेत फेनिल निर्झर की तरह झर रहा था। वनों, पर्वतों और घाटियों से आती हुई शीतल वायु में माधुर्य और महक थी। किन्तु महाराज का हृदय युद्ध की विभीषिका से संतप्त और पीड़ित था। वे मौन, शान्त और गंभीर मुद्रा में खड़े अपलक दृष्टि से अमरपाटन की ओर जाने वाली ऊबड़-खाबड़ पगडण्डी की ओर निहार रहे थे। आधी रात से अधिक समय हो चुका। किन्तु उनकी आंखों में तन्द्रा नहीं थी। मस्तिष्क में कौंधते हुए युद्ध के बादल उन्हें रह रह कर बेचैन किये दे रहे थे।

जीवन के अनगिन भावों, विचारों और कल्पनाओं से हृदय अधिक भर गया तो वे कुछ राहत पाने के लिए शयनकक्ष में चले गये। उन्होंने बड़े कातर भाव से महारानी की ओर निहारा। महारानी पलग पर निद्रा देवी के प्रगाढ़ आलिंगन पाश में आबद्ध चेतना शून्य थी। उनके मन में एक भाव उठा कि महारानी को जगा लूं जिससे रात्रि की नीरवता निर्जनता और सूनापन दूर हो जावे। किन्तु वे ऐसा न कर सके। उनका मन बार-बार युद्ध का समाचार पाने के लिए आतुर और आकुल था। वे चुपचाप शयन कक्ष से निकल महल के बाहरी कक्ष में चले आए।

चन्द्रमा दुर्ग की पश्चिमी प्राचीरों से उतर घाटियों में झुकता चला जा रहा था। रात्रि का तीसरा प्रहर ढलने को था। राजकुमार वीरभद्र का अभी तक कोई समाचार नहीं आया था। वे रह-रह कर अपने धड़कते हुए हृदय से सोचने लगे—कहीं मुगलों की विशाल सैन्य शक्ति से टकराकर बघेले वीर सैनिक समाप्त तो नहीं हो गये। कहीं किसी कुचक्र से राजकुमार वीरभद्र मुगलों के हाथों बन्दी तो नहीं हो गए। महाराज आगे सोच ही रहे थे कि सहसा उन्हें दुर्ग के मुख्य द्वार की पहाड़ी पर एक अश्वारोही दौड़ता हुआ दिखाई दिया।

कुछ क्षण बाद दुर्ग का फाटक खुला और अश्वारोही दुर्ग में प्रवेश कर गया। महाराज युद्ध का समाचार पाने के लिये आतुर हो गए। वे महल के ऊपरी कक्ष से उतर नीचे बारहदरी में आ गए। कुछ ही देर बाद महल के प्रहरी ने राजमन्त्री हनुमन्तसिंह के आने का समाचार महाराज को दिया। महाराज ने एक दीर्घ निःश्वास ली और तभी उनकी दृष्टि सामने आते हुए राजमंत्री हनुमन्तसिंह पर पड़ी। लौह कवच में कसा हनुमंतसिंह का शरीर युद्ध में आहत हो गया था। माथे के घाव से अत्यधिक रक्त बह जाने के कारण वह कुछ-कुछ मूर्छित सा अपने घोड़े की पीठ पर झुका हुआ था। महाराज ने बारहदरी से निकल प्रहरी की सहायता से हनुमन्तसिंह को घोड़े की पीठ से संभाल कर उतार लिया।

घायल हनुमन्तसिंह ने महाराज के आगे मस्तक झुकाते हुए कहा—"महाराज, मुगलिया सल्तनत की अपार शक्ति के सम्मुख बघेल शूरमाओं ने जीवन की अंतिम साँस तक लोहा लिया। वे सब बांधवगढ़ राज्य की पावन भूमि की रक्षा करते हुए वलिदान हो गए। और......और...... महाराज" इतना कहते हुए हनुमन्तसिंह का कण्ठ अवरुद्ध हो गया। जबान पर आई हुई बात को वह ऐसा दबा गये जैसे वह कुछ कहना ही नहीं चाहता हो।

महाराजा रामचद्र कांप गये। उन्होंने शीघ्रता से पूछा......"हनुमन्तसिंह तुम कहते-कहते बीच में क्यों रुक गये। आगे कुछ कहो। युद्ध की स्थिति कैसी है? क्या राजकुमार वीरभद्र अभी तक युद्ध में जूझ रहे?"

"महाराज! राजकुमार वीरभद्र मुगल सैनिकों द्वारा बन्दी बना लिए गए हैं। मेरी राय है, महाराज राजकुमार वीरभद्र की मुक्ति के लिये हमें एक बार पुनः दुर्ग से उतर कर मुगलों से संग्राम करना चाहिए।'

"राजमंत्री हनुमन्तसिंह, एक राजकुमार के लिए हमें इतना भीषण रन-संहार नहीं करना चाहिये। युद्ध के अतिरिक्त भी राजकुमार की मुक्ति के लिए सोचा जा सकता है।" महाराज रामचन्द्र ने बड़े अनुभव और दूरदर्शिता से काम लिया। वे शहंशाह अकबर की विशाल सैन्य शक्ति से परिचित थे। देहली, आगरा, आमेर, मांडू और रणथम्भोर, ग्वालियर की निरन्तर विजयों का समाचार वे सुन चुके थे।

महाराज रामचन्द्र और राजमंत्री हनुमन्तसिंह दोनों विचार विमर्श करते करते बारहदरी में लौट आए। हनुमन्तसिंह की आहतावस्था को देखते हुए महाराज ने राजमंत्री को एक मूढ़े पर बैठने के लिए कहा और स्वयं एक ऊंचे से मंच पर बैठ गये। महाराज का मुख प्रतिक्षण आन्तरिक वेदना से पीड़ित होता जा रहा था। वे सोच रहे थे कि मुगलों के साथ होने वाले इस भीषण रक्तपात को कैसे रोका जाये। जब भावों का आवेश मस्तिष्क में अत्यधिक बढ़ गया तब उन्होंने बड़े संयम के साथ कहा—हनुमन्तसिंह, शत्रु पक्ष की वर्तमान सैन्य बल को देखते हुए क्यों न हम संधि का प्रस्ताव मुगल सूबेदार के पास भेज दें। संधि के प्रस्ताव से बांधवगढ़ पर आई विपत्ति की आंधी टल जाएगी।"

आहत हनुमन्तसिंह एकाएक मूढ़े से खड़े हो गये। रोष से चेहरा तमतमा गया। हृदय का क्रोध मुख से बादलों के रौरव स्वर की तरह फूट पड़ा—

"महाराज संधि का प्रस्ताव भेजने का अर्थ होगा बघेलों की पराजय। राजपूतों को आत्म-सर्मपण की अपेक्षा मरना अच्छा लगता है। संधि के प्रस्ताव से तो हमारा अपमान है। हम यह जानते हैं कि हमारी सैन्य शक्ति शत्रु दल से कम है। किन्तु एक एक बघेला राजपूत जननी जन्म-भूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का विसर्जन कर देगा।"

सहसा तोपों की गगनभेदी गर्जना से सारा वन प्रान्तर गूंज उठा। दुर्ग की दीवारें दहल गईं। पर्वत, पेड़ और पौधे सभी कांप गए। मुगलों का सैन्य दल दुर्ग के चारों ओर फैली हुई पहाड़ियों, घाटियों और उपत्यकाओं में मोर्चा साधकर बैठ गये। उधर दुर्ग की रक्षा के लिए पहले से पूरी तैयारी कर ली गई थी। दुर्ग के मुख्य द्वार के फाटक बन्द थे। द्वार की रक्षा के लिए भीमकाय मस्त हाथियों की कतार खड़ी थी। बुर्जो और परकोटे पर धनुष वाण, वर्छी, भाले तलवार आदि संभाले अनगिन बघेले रण बांकुरे खड़े थे। रात भर मुगलों की तोपें आग उगलती रहीं। किन्तु दुर्ग का फाटक नहीं टूटा।

प्रातःकाल राजमहल के एक विशाल कक्ष में महाराज रामचन्द्र अपने विश्वासी सामन्तों और सलाहकारों से युद्ध की स्थिति पर मंत्रणा कर रहे थे। महल के बाहर सैकड़ों राजपूत हाथों में नंगी तलवारें लिए खड़े थे। सहसा सभा भवन में एक द्वारपाल ने महाराज को मस्तक झुकाकर अभिवादन करते हुए कहा—"महाराज, शहंशाह अकबर के दो सूबेदार संधि का प्रस्ताव लेकर आये हैं। दुर्ग का फाटक खोला जाये या नहीं। किलेदार चन्दनसिंह आपकी आज्ञा चाहते हैं।"

महाराज के मुख पर हर्ष की लहर दौड़ गई। भगवान बांधवाधीश ने उनकी इज्जत रख ली। उन्हें मुगलों की ओर से संधि का प्रस्ताव मिला है। महाराज ने तत्काल द्वारपाल से कहा—"किलेदार चन्दन-सिंह से कहो कि दुर्ग के फाटक खोलकर दिल्ली सल्तनत के दूतों को आदर के साथ दरवार में हाजिर करो।"

कुछ क्षण बाद महाराज रामचन्द्र बघेला के दरबार में सूबेदार मजनू खाँ काक शाल और जलाल उद्दीन कुरची ने प्रवेश किया। मजनू खाँ और जलाल उद्दीन कुरची ने बड़े अदब से महाराज को मुजरा किया और फिर मजनू खाँ ने कहा 'महाराज, शहंशाह जलालउद्दीन अकबर की आज्ञा से हम आपके दरबार में हाजिर हुए हैं। शहंशाह ने एक पत्र आपकी सेवा में भेजा है।" महाराज की आज्ञा से राजमंत्री हनुमंतसिंह ने आगे बढ़कर शहंशाह अकबर का पत्र सूबेदार मजनू खाँ काकशाल से लिया और पत्र को सभा के बीच पढ़ने लगे। संधि का प्रस्ताव कुछ इस प्रकार था।

महाराज रामचन्द्र बघेला
बांधवगढ़,

हमें मालूम हुआ है कि शहंशाहे मौसीकी तानसेन आपके दरबार से वावास्ता है। आप जानते है कि दरबारे अकबरी में ऐसे रत्न मौजूद हैं, जिनकी मिसाल रूये जमीन पर मिलना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन है। लिहाजा हमारी ऐसी मन्शा है कि तानसेन जैसे वेसबहा और कीमती रत्न हमारे दरबार में रौनक अफरोज रहे। इसलिये हम चाहते हैं कि आप तानसेन को हमारे दरबार से मुनसलिक करदें। और उन्हें दिल्ली के लिए रवाना करदें —शहंशाह जलालउद्दीन मोहम्मद अकबर।

शहंशाह के पत्र को पढ़कर सभा भवन में निस्तब्धता छा गई। सभी सभासद मौन हो गये। प्रत्येक के शरीर में एक सनसनाहट सी लहर दौड़ गई थी। सब लोग महाराज के म्लान मुख की ओर निहारते रहे। थोड़ी देर बाद शहंशाह के संधि प्रस्ताव को स्वीकार कर महाराज राजभवन से उठ आये।

९

तानसेन की विदा

राजमहल के बाहरी कक्ष में तानसेन की विदा के लिए सभी सभासद और सामन्त जुड़े थे। महल के भीतर महाराज तानसेन के वियोग से पीड़ित थे। उनके हृदय की असीम वेदना आँखों से आँसू बन कर झाँक रही थी। जीवन की एक विवशता थी जो गाढ़ा सा तरल पदार्थ बनकर आँखों की श्वेत पुतलियों पर रिस आयी थी। वे राजगायक तानसेन को रोकने में असमर्थ थे। रह रहकर उनकी आँखों में तानसेन की मूर्ति विद्युत की एक कौंध की तरह उभर आती थी। उनका व्याकुल मन महल की चहारदीवारी के भीतर चीख रहा था। हृदय का मौन क्रन्दन आँखों से सावन भादों की घटाओं सा बरस रहा था, उनका जीवन घोर निराशाओं और असफलताओं के अन्धकार में डूबा प्रकाश की एक किरण खोज रहा था।

सहसा महाराज के कानों में राजगायक का स्वर सुनाई पड़ा। उन्हें लगा जैसे ध्रुपद का कोई मधुर बोल कानों में गूज रहा हो। महाराज ने अपने अश्रुपूरित पलकों को खोलकर देखा : सामने राजकीय वस्त्रों में सजा राजगायक तानसेन खड़ा है। लम्बा छरछरा शरीर, गौर वर्ण, शशि मुख की आभा से दीप्त ललाट और घुंघराले काले केशों से भरा मस्तक। हाथ में तानपूरा। तानसेन की उस दिव्य छवि को देख

राजा रामचन्द्र बघेला के दरबार से तानसेन विदा लेते हुए

महाराज के नयन फिर सजल हो गये। वियोग का अश्रु उदधि आँखों से फूटकर महाराज के कपोलों पर बिखर गया। कुछ क्षण बाद व्यथा के आँसुओं को पोंछते हुए महाराज ने कहा—तानसेन, तुम आज मुझसे विदा हो रहे हो। बघेलखण्ड की धरती पर तुम्हारा मधुर संगीत सदैव गूंजता रहेगा। आज तुम्हें खोकर मैं निर्धन हो गया हूं। मुझे ऐसा लग रहा है मानों राजकोष का कोई अमूल्य रत्न खो गया है। शहंशाह अकबर ने कृपाण की शक्ति से तुम्हारे शरीर को बन्दी बनाया है, किन्तु तुम्हारी कला से को नहीं कलाकार का जीवन हवा की तरह स्वतंत्र होता है। कलाकार किसी एक का नहीं होता। वह तो युग के आकाश में एक ज्योति पुंज नक्षत्र होता है जिसके प्रकाश में संसार चमक उठता है।

तानसेन का भावुक हृदय महाराज की व्यथा को सुनकर भर आया। तानसेन ने देखा महाराज की आँखों में कोई एक वेदना है, कोई एक कसक और पीड़ा है जो चित्कार रही है। दुःख के समय रुदन ही मानव का सहचर है। तानसेन के नेत्र भी आँसुओं में डूब गये। तानसेन को व्यथित होता हुआ देखा महाराज ने भावातिरेक में तानसेन को अपने वक्षस्थल से लगा लिया। तानसेन के मंद मंद सुबकते स्वर महाराज को लगे जैसे वीणा की करुण झंकार उनके कानों के पर्दे हिला रही हो।

महाराज ने तानसेन को धीरज बंधाते हुए कहा—"तानसेन, तुम कलाकार हो। कलाकार का जीवन सरिता की उस वेगवती धारा की तरह होता है जो वादियों और घाटियों के बीच पाषाण-खण्डों से टकराकर भी आगे बढ़ती रहती है। आज तुम्हारे जीवन में नया मोड़ आया है। तुम्हारी कला का विकास शहंशाह के दरबार में अधिक होगा। तानसेन तुम्हारी वाणी में एक ऐसी आर्कषण शक्ति है कि एक दिन शहंशाह अकबर, तुम्हें संगीत सम्राट कहकर पुकारेगा।" महाराज रामचन्द्र ने तानसेन को विदा करते हुए समय मणि मुक्ताओं और बहुमूल्य वस्त्रों से

भरा थाल भेंट किया। और फिर समस्त सामन्तों के साथ दुर्ग से उतर कर तानसेन को रथ में बैठाया।

मुगलों की सेना प्रस्थान के लिए तत्पर थी। सूबेदार मजनू खाँ और जलाल उद्दीन कुरची ने दुर्ग से लौटकर राजकुमार वीरभद्र को ससम्मान सैन्य शिविर से मुक्त कर दिया। ऊंट, घोड़ों और हाथियों पर आरूढ़ मुगलों की विशाल वाहिनी का मुख बाँधवगढ़ से कड़ा मानिकपुर की ओर मुड़ गया जहाँ मुगल सेनापति आसफ़खाँ सूबेदार मजनू खाँ और कुरची की प्रतीक्षा कर रहा था।

१०

सम्राट अकबर के दरबार में तानसेन

आगरा दुर्ग का आम खास दरबार आज विशेष रूप से एक नई नवेली दुलहिन की तरह सजाया गया था। ईरानी और तूरानी अमीर उमराव आज रंग बिरंगी कीमखाव और जरी की पौशाकें पहने दुर्ग की ओर जा रहे थे। बादशाह सलामत की फौज ने बांधवगढ के राजपूत राजा को फतह किया था। सेनापति मजनू खाँ और जलालउद्दीन कुरची शाही हजूर में हिन्दुस्तान के मशहूर गवैया को पेश करेंगे।

दरबार में हजारों अमीर उमराव आ चुके थे। सब लोग हिन्दुस्तान के उस मशहूर गवैये का संगीत सुनने की उत्सुकता में थे। हर अमीर उमराव अपने विस्फारित नेत्रों से दरबार में खड़े बांधवगढ़ से आए उस संगीतज्ञ को देख रहे थे। कुछ क्षण बाद नगाड़ों पर चोट पड़ी। नकीबों ने आवाज बुलन्द कर बादशाह के आने की सूचना दी। सर्वत्र सन्नाटा छा गया।

बादशाह सलामत दरबार में आ चुके थे। बाँधवगड़ विजय से बादशाह का चेहरा प्रसन्नता से दीप्त था। उसने एक बार सभी अमीर उमरावों पर दृष्टि डाली। और फिर शाही तख्त से सौ कदम के फासले पर खड़े सिपहसालार मजनूखाँ काकशाल और जलालउद्दीन कुरची को देखते हुए कहा—सिपहसालार मजनूखाँ हमें तुम्हारी वफादारी और

बहादुरी पर नाज है, फ़ख्र है।" और फिर जलालउद्दीन की ओर मुखातिब होते हुए शहंशाह ने कहा—"जलालउद्दीन, तुमने बाँधवगढ़ के दुर्ग को फतह करने में जो लियाकत दिखाई है उसकी हम कद्र करते हैं। हम तुम दोनों को सिपहसालार से मनसबदार का खिताब अता फरमाते हैं।"

मजनूखाँ काकशाल और जलालउद्दीन कुरची दोनों ने कुछ कदम आगे बढ़कर बादशाह को सर झुकाकर तीन बार सलाम किया। और फिर खिताब को कबूल करते हुए मजनूखां ने कहा—"आलम पनाह, आपका यह सिपहसालार आपकी सल्तनत, आपके तख्त और आपके झण्डे की इज्जत बढ़ाने के लिये हरदम कुर्बानी को तैयार रहेगा।"

जलालउद्दीन कुरची ने भी बादशाह के सम्मुख शपथ लेते हुए कहा—"जहांपनाह, आपकी हिफाजत और इज्जत के लिए यह गुलाम भी हमेशा जाँ निसार ही रहेगा।"

अकबर ने मुस्कराते हुए धीमे स्वर में कहा—"वेशक, हमें तुम लोगों पर पूरा-पूरा यकीन है। हमारी मंशा है कि जो बहादुरी तुमने बांधवगढ़ के युद्ध में दिखाई है वैसी ही चित्तौड़ और रणथम्भोर में भी हम देखना चाहते हैं। आमेर के हिन्दू राजा की तरह ये दोनों राजपूत राजा हमसे दोस्ती का हाथ मिलाना नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों में मेल और मुहब्बत का अटूट भाईचारा जुड़े। इसलिये हमने आमेर का रिश्ता कबूल किया है। लेकिन चित्तौड़ के राणा और रणथम्भोर के हाड़ा आमेर को नफरत की निगाह से देखते हैं।

हिन्दुस्तान के बादशाह बनने के पहले हमें चित्तौड़ और रणथम्भोर के दुर्गों से टकराना जरूरी है। राजपूत कौम बड़ी बहादुर होती है। सूबेदार आसफखां तुम्हारा क्या ख्याल है।"

सूबेदार आसफखाँ तत्काल उठा और सर झुकाकर कहा—"जहाँपनाह, खादिम आपके हुक्म की तामील करेगा। लेकिन हजूरे आली से एक अर्ज है।"

"आसफखां, क्या बात है ?" शहंशाह अकबर ने कहा।

सूबेदार आसफ खाँ ने शहंशाह को फिर मुजरा झुकाते हुए कहा—"आलीजाह, रणथम्भोर और चित्तौड़ की फतह से अभी हमें फायदा नहीं है। लाहौर और काबुल की फतह से हमें पथरीली और बंजर जमीन हासिल हुई है। काबुल और लाहौर के घेरे से ही शाही खजानों को काफी नुकसान उठाना पड़ा है। चित्तौड़ और रणथम्भोर को फतह करने के बनिस्बत हमें गोंडवाना फतह करना चाहिए। गौडवाना की फतह से हमें बेशुम्मार दौलत ही हासिल न होगी बल्कि शाही सवारी के लिए एक बेमिशाल होशियार सफेद हाथी भी मिलेगा।"

आसफखां की बात शहंशाह अकबर को जंच गई। उन्होंने आसफखां को गोंडवाने पर चढ़ाई करने का फरमान और फौज का अधिकार दे दिया। थोड़ी देर बाद बाँधवगढ़ से आया हुआ प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन अकबर के सामने हाजिर हुआ। अकबर का हुक्म पाते ही दरबारे आम संगीत से गूंज उठा। पखावज पर थाप पड़ते ही तानसेन की कोमल उंगलियाँ तानपूरे के तारों पर द्रुति गति से दौड़ने लगती। तानसेन तानपूरे पर आरोह-अवरोह के साथ स्वर भर रहा था। उसकी स्वर लहरी पावस में उमड़ती सरिता की गरजती लहरों सी नर्तन कर रही थी। तानपूरे के तारों पर द्रुति गति से थिरकती उंगलियों के साथ तानसेन ने अपने मधुर कण्ठ से हृदयस्पर्शी राग अलापना शुरू किया। तानसेन के मुख से गुर्जर तोड़ी मुखरित हो उठी:—

तेरो बल प्रताप ऐसो जैसो उडुगन में भानु।
हे तूर कब्र समान अल बली महा बली॥
प्रकट प्रबल रब निसान
वायु जल अकाश परवत अग्नि भूम
सब में तेरी धूम सप्त दीप नव खंड में तेरो बखान
सब दीप सब भूप सकल सोजन-जन अनूप

तेरी सरनागत कर प्रनाम तज गुमान
तानसेन सत अजान तू है अतमेरवान
जल थल में निशान मुनि जन करत गान

तानसेन के मुख से गुर्जरी तोड़ी को सुनकर शहंशाह अकबर का रोम-रोम पुलकित हो गया। तानसेन के संगीत की प्रशंसा करते हुये शहंशाह ने कहा--"वाह-वाह तानसेन तुम शहंशाह मौसिकी हो। हमने अपनी शमशीर से हिन्दुस्तान के बड़े बड़े राजाओं को जंग के मैदान में शिकस्त दी है। लेकिन तुम्हारी वेमिशाल आवाज ने हमारे दिल को फतह कर लिया है। दुनिया में तुम्हारा कोई शानी नहीं। तुम्हारे फन की कद्र करते हुए हम तुम्हें अपने दरबार के नौ रत्नों में से एक ऐजाज बख्शते हैं। और हम हुक्म देते है तुम खाश महल के सामने अंगूरी बाग में हवेली है उसमें मुकीम हो। फिर बादशाह अकबर ने बकील उल सल्तनतमुंशिफ ए दीवान अमीर उल उमरा की ओर देखते हुये कहा "मुंशिफ, एक शाही फरमान आज ही शहर में चश्पा करवा दिया जाय। कोई भी शहर में गाता हुआ निकलेगा वह संगीत कला में तानसेन का प्रतिद्वन्द्वी समझा जावेगा। उसे या तो तानसेन को संगीत में पराजित करना होगा अथवा वह तलवार से हलाल कर दिया जावेगा।"

तानसेन शाही गवैया बन गया। उसने दो कदम आगे बढ़कर अकबर को झुक कर सलाम किया। बादशाह अकबर उठे। नकीबों ने आवाज लगाई। बादशाह सलामत के अदब के लिये सब अमीर उमरा सर झुका कर खड़े हो गये। दरबारे आम से अकबर बादशाह खाश महल चले गये।

११

शहजादी मेहरुन्निसा

शरद ऋतु की शुभ्र ज्योत्स्ना दुर्ग के महलों पर चटख रही थी। दिवान-ए-खास के प्रांगण में संगीत की महफिल अभी समाप्त हुई थी। सम्राट के उठते ही अमीर, उमराव, वजीर और मन्सबदार भी उठ गये थे। शाही हरम की बेगमें, शहजादियाँ और बाँदियाँ भी लौट गई थीं।

शाही हरम की एक ड्योढ़ी में हजारा फानूस में जलती मोमबत्तियों की रंगीन आभा पड़ रही थी। यह ड्योढ़ी मुगल शहजादी मेहरुन्निसा की थी। कुछ दिन हुए वह काबुल से एक शाही काफिले के साथ आगरा आई थी। दूर के रिश्ते में वह सम्राट की बेटी लगती थी। शहजादी जब से संगीत की महफिल से लौटी है, तब से वह मसनद पर अलसाई सी पड़ी है। वासना से उत्तेजित आँखों में एक खुमार सा छाया हुआ है। तानसेन का मधुर संगीत शहजादी के हृदय में जीवन की अनगिन मनोवांछित कल्पनाएं भरने लगा है। कभी कभी जब भावनाओं का आवेग सागर की उत्ताल तरंगों की तरह शहजादी के हृदय में उमड़ने लगता है तब वह तानसेन की मधुसिक्त लय को और उसके स्वरों के प्रत्येक आरोह-अवरोह को अपने मधुर कण्ठ से पुलक-पुलक कर गुन-गुनाने लगती है।

आधी रात का समय था। शहजादी मेहरुन्निसा मसनद पर अस्त-व्यस्त पड़ी थी। संगीत के प्रवेग से वह उन्मद और उन्मुक्त थी। उसकी आयु बीस वर्ष की थी। वह छरहरे बदन की अत्यन्त सुन्दर, सुकोमल, और सुडौल गौर वर्ण की थी। मुख पर यौवन की लालिमा, मधु पूरित अरुण अधर, मदभरे नयन, लम्बी ग्रीवा, दाड़िम जैसे चमकीले दन्त। पतली कटि। भरे नितम्ब और उन्नत उरोज।

मसनद पर अलसाया शरीर लिए शहज़ादी मेहरुन्निसा मौन, उदास और एकाकी बैठी थी। उसके गौर वर्ण गुलाबी शरीर पर हजारा फानूस का इन्द्रधनुषी प्रकाश छिटक रहा था। विलास से परिपूर्ण आंखों में रह रहकर तानसेन की मनमोहक और दिव्य छवि तैर आती थी। आंखों में उस सुन्दर, सजीले, संगीतज्ञ की मोहक छटा को देखकर शहजादी का मन मयूर थिरक उठता था।

आकाश में पूर्णिमा का चन्द्रमा वर्तुलाकार खिला था। दुर्ग की उत्तुंग बुर्जों, कगूरों और महलों की मुण्डेरों पर चन्द्रमा की किरणें क्रीड़ाएं कर रही थी। अनगिन लता, गुल्मों और पेड़ों से भरा अंगूरी बाग शरद ऋतु की शीतल सुगंधित पवन के मृदु झकोरों से झूम रहा था। शहजादी गुलाब के एक घने गुल्म के निकट खड़ी हो पूर्णिमा के पूर्ण वर्तुलाकार चन्द्रमा को उस अतृप्त चकोर की तरह देख रही थी जो स्वाति नक्षत्र की एक बूंद के लिये अपने प्राण उत्सर्ग कर देता है।

शहजादी मेहरुन्निसा ने गुलाब के एक खिलते हुए फूल को तोड़कर उसे अपने कोमल कपोलों से स्पर्श किया। गुलाब की मृदुल शीतल-पंखुड़ियां शहजादी के मन की दग्धता को दूर न कर सकीं। वह जितनी ही सोचती उतनी ही हृदय में प्रेम की अग्नि प्रज्ज्वलित हो उठती। आकुल आंखों में करुणा के मौन आंसू छलक उठते। कुछ देर तक वह अंगूरी बाग में व्याकुल मन लिये टहलती रही।

शाही सुखों और ऐश्वर्य में पली शहजादी का प्रेम पिपासित मन

जीवन की संवेदनाओं से घनीभूत हो गया था। जैसे पावस ऋतु में आकाश काली-काली घटाओं से घिर जाता है। उसका कान्धारी अनार सा सुर्ख चेहरा चाँदनी में भी कुम्हला गया। जब गुलाबों से महकता अगूरी बाग और सुदूर यमुना की तरंगों में डूबी पवन की शीतलता शहजादी के हृदय की दग्घता को शान्त न कर सकी तो वह छटपटाती हुई ड्योढ़ी में लौट आई।

मसनद पर बैठते ही शहजादी का भावुक मन विचारों के आवेग में फिर से उत्तेजित हो गया। मखमली नरम गद्दा पाषाण सा कठोर लगा। हजारा फानूस से झरता हुआ इन्द्र धनुषी प्रकाश उसे अग्नि सा दहकता हुआ लगा। सूनी ड्योढ़ी के भीतर शहजादी का वय: प्राप्त कौमार्य जब अधिक उन्मद होने लगा तो उसके मन की भावनाओं ने विद्रोह कर दिया। शहजादी ने पुकारा—रेशमा ! रेशमा !!

रेशमा ड्योढ़ी के बाहर हाथ में नंगी तलवार लिये खड़ी थी। उसने जब शहजादी की आवाज सुनी तो वह ड्योढ़ी के भीतर आकर खड़ी हुई। पहले झुककर सलाम किया और पूछा—"शहजादी फरमाइये क्या हुक्म है ?"

"रेशमा, बहुत देर से मेरे मन में एक अजीब सा प्रश्न उठ रहा है। उस प्रश्न ने मेरे हृदय तन्तुओं को बुरी तरह से झकझोर दिया है। मैं बड़ी बेचैन हूं।"

"फरमाइये, शहजादी, मन का ऐसा कौन सा प्रश्न है जो तुम्हें तंग किए हुए है।"

"रेशमा, विवाह नारी के लिये क्यों आवश्यक है ? क्या विवाह के बिना नारी संसार में जीवित नहीं रह सकती।"

"शहजादी, विवाह नारी जीवन का एक अनिवार्य नियम है। जिसका पालन करना हर स्त्री का धर्म है। विवाह एक ऐसी वैधानिक पावन परम्परा है जिसके द्वारा नारी एक ऐसे आदर्श पुरुष को प्राप्त करती है

जिस पर वह पूर्ण विश्वास कर अपने जीवन का सर्वस्व न्योछावर कर देती है। विवाह स्त्री और पुरुष का एक मधुर मिलन है।"

"रेशमा, स्त्री जिससे प्रेम करती है क्या वह उससे विवाह नहीं कर सकती ?"

"शहजादी, ऐसा आवश्यक नहीं है। स्त्री जिससे प्रेम करती है उससे वह विवाह कर सके।"

"रेशमा, ऐसा क्यों ?"

"कनीज की गुस्ताखी मुआफ हो। मालूम पड़ता है शहजादी का दिल किसी पर आशिक़ हो गया है।"

"रेशमा, आज रात जब से मैं दीवान-ए-खास की महफिल से लौटी हूं तब से मेरे दिल में मोहब्बत का एक नशा सा छा गया है।"

"वह कौन खुशनसीब शाहजादा है जिसने तुम्हारी मद भरी आंखों के डोरे सुर्ख गुलाबी कर दिये हैं।"

"हम जिसे चाहते हैं वह कोई शाहजादा नहीं है। किसी ताजो तख्त का वारिस नहीं। वह तो एक हिन्दू गवैया है। मौसिकी का आलिम व मुन्तहि तानसेन को जब से मैंने देखा है, उसके संगीत को सुना है तभी से मेरा दिल उस गवैये को चाहने लगा है।"

"शहजादी, हिन्दू से मोहब्बत की बात जबान से न निकालो। इसमें मुगलिया खानदान की तौहीन है। बादशाह सलामत आपकी इस मोहब्बत को कभी तर्जी नहीं देंगे।"

"रेशमा, ऐसा क्यों ?"

"मुगल शहजादी ताउम्र एक हिन्दू गवैया की औरत बन कर रहे यह बादशाह सलामत की शान के खिलाफ है। तानसेन के साथ मोहब्बत करके आपको अपना दीन, ईमान और मजहब छोड़ना होगा।"

"लेकिन बादशाह सलामत ने आमेर की जिस हिन्दू राजकुमारी से निकाह किया है, उसने अपना मजहब नहीं छोड़ा। 'वह आज भी हिन्दू

है। मुगलिया हरम के भीतर रहकर वह कृष्ण की पूजा करती है। शहंशाह ने उस हिन्दू राजकुमारी को सल्तनत की बड़ी मल्लिका का तोहफा इनायत किया है।"

"लेकिन शहजादी तुम्हारे गोल गोल चूड़ी भरे हाथों में मेंहदी के मुस्कराते हुए चमन और जगमाते हुए चाँद नहीं खिल सकते।"

"मगर रेशमा। मेरा मुकम्मिल इरादा है। मैं तानसेन से निकाह करूंगी।"

"यह गैर-मुमकिन है शहजादी।"

"नहीं रेशमा, नहीं। तेरा ख्याल गलत है। बादशाह सलामत बड़े रहमदिल, नेक और दिलेर हैं। हुजूर के आगे जब मैं अपनी दरख्वास्त करूंगी तो आलमपनाह मान जावेंगे।"

रेशमा इस बार मौन रही। उसने शहजादी की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। शहजादी भी कहते कहते चुप हो गई। कुछ क्षण बाद वह मसनद से उठी और ड्योढ़ी के एक जालीदार झरोखे में आकर खड़ी हो गई। जालीदार झरोखे से निर्मल चाँदनी छन छनकर शहजादी के शरीर पर पड़ रही थी। शहजादी एकटक आकाश में चाँद की ओर नयन गड़ाये देखती रही।

दुर्ग के ऊपर चाँदनी सुर्ख गुलाब के फूल की तरह महक रही थी। और शहजादी हुस्न के शवाब में मस्त थी। उसके मदभरे नेत्र तानसेन के ख्वाब में डूबे थे। उस समय रात्रि का आधा प्रहर ढल गया था। अंगूरी बाग की शीतल सुगंधित वायु कभी कभी ड्योढ़ी के झरोखों तक एक अल्हड़ नवयुवती की तरह झूम जाती थी। शहजादी कुछ खोई-खोई सी उदास कमरे में आकर मसनद पर पुनः लुढ़क गई। उसके अशान्त मन में एक हलचल सी मची हुई थी। कुछ देर तक वह कमरे में इधर उधर देखती रही। फिर रेशमा की ओर मुग्ध दृष्टि से देखते हुए कहा—

"रेशमा, आज अंगूरी शराब से कहीं अधिक नशा तानसेन की याद में है।"

रेशमा ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह शहजादी के सामने सिर झुकाए मौन खड़ी थी। कुछ क्षण बाद शहजादी ने अपनी अलसाई देह में नागिन जैसी ऐंठन भरते हुए पुनः कहा—"रेशमा तानसेन की याद ने मुझे बेतहाशा परेशान कर दिया है। उसे देखने की मेरे दिल में एक तमन्ना है, हसरत और ख्वाहिश है।"

"बेअदबी मुआफ हो शहजादी। आधी रात का समय है।" बादशाह सलामत की इजाजत के बगैर कोई गैर आदमी शाही हरम में दाखिल नहीं हो सकता।"

शहजादी क्रोध में सर्प की तरह फुंफकार उठी। मुख पर बिखरी काली केश राशि को हाथों से हटाते हुए कहा—"रेशमा तू मेरे हुक्म की जुर्रत करती है।"

"नहीं शहजादी नहीं। खादिमा आपके हुक्म की तामील ता उम्र करेगी। फरमाइये क्या हुक्म है।"

"तूने तानसेन की हवेली देखी है।"

"जी हां, शहजादी।"

"हमारी दिली ख्वाहिश है कि तानसेन कुछ देर के लिये यहां आकर हमारी नजरों को नवाजें। तानसेन के रूबरू हाजिर होने पर ही हमारे बेचैन दिल को चैन मिलेगा। राहत और तस्सल्ली मिलेगी।"

बांदी ने जमीन पर सिर झुकाकर शहजादी को आदाब बजाया और फिर चली गई। थोड़ी देर बाद बांदी ने ड्योढ़ी में पुनः लौटकर तानसेन के आने की खबर शहजादी को दी। रेशमा बाहर चली गई, शहजादी का उदास उद्विग्न और मुर्झाया मन गुलाब के फूल की तरह खिल गया। तानसेन को सामने खड़ा देखकर शहजादी मसनद से उठी। और कहा-"खुदा का शुक्र है, आप आ गये। आइये यहां मसनद पर

बैठकर मेरी प्यासी नजरों को सेहत बख्शिये । हम तुम्हें दिल से मोहब्बत करते हैं ।"

"शहजादी रात का वक्त है । शाही हरम में एक हिन्दू गवैया का आना शाही पाबन्दी के खिलाफ कदम है । आप रहम करके जल्द मुझे बुलाने का मक्सद फरमाइये ।"

"तानसेन तुम घबराओ नहीं । बादशाह सलामत नाराज नहीं होंगे । हमने तुम्हें बुलाया है ।"

"मुझे बुलाने का मक्सद शहजादी ।"

"तानसेन, दीवान-ए-खास में जुड़ी संगीत की महफिल में जब मैंने तुम्हें देखा मैं तहे दिल से कुर्बान हो गई । और तुम्हारे बेमिसाल संगीत को सुनकर मेरे दिल के आईने में मोहब्वत की झलकियां उभर आई हैं ।"

"लेकिन शहजादी खादिम आपकी मोहब्बत के काबिल नहीं है ।"

"ऐसा क्यों तानसेन"

"यह नाचीज हिन्दू गवैया आप की इस कद्रदानी और नजरे इनायत का ताउम्र एहसानबन्द रहेगा । मैं आपकी दिली मुराद को पूरा नहीं कर सकता ।"

"ऐसा न कहिये तानसेन," शहजादी ने घबराते हुए कहा ।

"हुजूर, आप मुगलिया खानदान की शहजादी हो । आपकी मोहब्बत का हकदार बलख,बुखारा और बगदाद का कोई शाहजादा ही हो सकता है, यह नाचीज हिन्दू गवैया नहीं ।"

'तानसेन मैं तुम्हारे बिना एक पल भी दुनियो में जिन्दा नहीं रह सकती । मेरी जीवन वीणा के निःसपन्द तार तुम्हारी कोमल-कोमल उंगलियों के स्पर्श से झंकृत होंगे । मैं बादशाह सलामत से तुम्हें माँग लूंगी । तुम्हारे लिये में सारी शाही एशो इशरत छोड़ दूंगी ।"

कुछ क्षण दोनों मौन रहे। फिर शहजादी ने अधरों पर मुस्कान की रेखा खींच गोरे मुख पर पड़े श्याम कौशेय अवगुण्ठन को हाथों से हटा शरीर में यौवन की एक भरपूर अंगड़ाई भरी। शहजादी का चाँदनी सा चटखता चेहरा तानसेन की आंखों में बिजली की एक कौंध की तरह चमक गया। शहजादी की उस अद्भुत, आर्कषक और मोहक छवि को देख तानसेन सदके में आ गया। उसे लगा जैसे उसका मन शहजादी के मोह जाल में मछली की तरह फंस गया हो। उसने तत्क्षण कहा—"शहजादी साहिबा इस वक्त आपका दिल आपके काबू में नहीं है। मोहब्बत के नशे में आप अपने को भूली हुई हैं। मैं जाता हूं"

शहजादी ने बहुत अनुनय विनय की किन्तु तानसेन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। उसने शहजादी की किसी भी बात का उत्तर नहीं दिया। तानसेन ने मस्तक झुकाकर शहजादी को सलाम किया और फिर तेजी से ड्योढ़ी के बाहर हो गया। तानसेन के जाते ही शहजादी जल के बाहर पड़ी एक मछली की तरह छटपटाती रही।

सहसा शरद यामिनी के ढलते प्रहर में मुर्गे की वांग गूंज उठी। नव निर्मित शाही मस्जिद के फज्र की नमाज की अजान से दुर्ग में जागरण होने लगा। हवेली में तानपूरे पर तानसेन का मधुर प्रभाती राग स्वरों के नूतन आरोह अवरोह के साथ गूंज उठा। और अंगूरी बाग के उस पार शाही हरम की एक ड्योढ़ी के भीतर शहजादी मेहरुन्निसा की आंखों में व्यथित हृदय की पीड़ा पावस की घनघोर घटाओं की तरह उमड़ती घुमड़ती रही।

□ □ □

१२

आगरा दुर्ग का दीवान-ए-आम

आगरा दुर्ग का दीवान-ए-आम। शाही दरबार विजयोल्लास में डूबा है। रात्रि का समय है। झाड़ फानूसों, कन्दीलों और शमादानों का रंगीन प्रकाश छिटक रहा है। इत्र, अगरबत्ती, और धूप की सुगन्ध से दरबार महक रहा है। नक्कारा, नफीर, संज और नफीस शहनाई गूंज रही है। दीवान-ए-आम में हर्ष, उल्लास और उन्माद का सागर लहरा रहा है। शहंशाह अकबर एक ऊंचे से रत्न जटित सिंहासन पर बैठे हैं। उनका गौर वर्ण उन्नत ललाट तेज से दमक रहा है। सिर पर बहुमूल्य जरी की लाल पगड़ी है। पगड़ी के ऊपर रत्नों से जड़ा तूरानी तुर्रा चमक रहा है।

गौंडवाना पर मुगल सैनिकों का अभियान हुआ था। गढ़ मंडला की रानी दुर्गावती एक मुगल सिपहसालार से पराजित हुई थी। ख्वाजा अब्दुल मजीद, गौंडवाना जीतकर आगरा लौट आया था। दरबार में सभी अमीर, उमराव, मन्सबदार और सिपहसालार उपस्थित हैं। दरबार में शाही नकीब की आवाज बुलन्द होते ही ख्वाजा अब्दुल मजीद खड़े हुए। पहले झुककर शहंशाह अकबर को सलाम किया और फिर गौंडवाना लूट का सारा खजाना शहंशाह के सामने उंडेल दिया। अनगिन स्वर्ण मुद्रायें, अलंकृत पात्र, मुक्ता, हीरे, स्वर्ण प्रतिमायें, स्वर्णनिर्मित

रत्न जटित आभूषण और कीमती वस्त्र, गौंडवाना की अपार धनराशि को देख सब लोग आश्चर्यचकित हो गये। शहंशाह अकबर को इतना बड़ा खजाना अभी तक किसी भी फतह में हासिल नहीं हुआ था। विजयोन्माद में डूबा सम्राट अकबर पहले खूब कहकहे लगाकर हंसा। और फिर ख्वाजा अब्दुल मजीद की ओर मुखातिब होकर मुबारक बाद दिया।

किन्तु अब्दुल मजीद खाँ ने शहंशाह अकबर को सलाम झुकाते हुए कहा—"गुस्ताखी मोआफ हो जहांपनाह, फतह की मुबारकबाद मुझे न दीजिये। इसके हकदार तो सल्तनत की बहादुर मुगलिया फौज है। जिसने चौरागढ़ की जंग में अपना कीमती लहू बहाकर कामयाबी हासिल की है।"

"ठीक है, अब्दुल मजीद। जंग में लड़ते तो बहादुर सैनिक ही हैं, किन्तु कामयाबी का सेहरा सिपहसालार के सिर पर ही बंधता है। हम तुम्हारी कामयाबी पर बेहद ममनून हैं। हम तुम्हें आसफखाँ का खिताब अता फर्माते हैं। और साथ ही तुम्हें कर्रा का जागीरदार भी मुकर्रर करते हैं।"

ख्वाजा अब्दुल मजीद ने पुनः शाही अदब बजाया और फिर कहा—"आलमपनाह, मुगलिया सल्तनत का यह खादिम शाही तख्त और ताज की हिफाजत ता जिन्दगी करता रहेगा।"

"ख्वाजा, हमें तुमसे यही उम्मीद है। हम मुगलिया सल्तनत के एक-एक सिपहसालार की बहादुरी और नेक नियत से वाकिफ हैं। हमारी मंशा है अब्दुल मजीद, जिस तरह हमारे बहादुर सैनिकों ने रणथम्भोर, कालिंजर, मांडू और गौंडवाना फतह कर अपना रण कौशल दिखाया है, वैसा ही करिश्मा हम चित्तौड़ के जंगे मैदान में देखना चाहते हैं। हिन्दुस्तान के बादशाह बनने के पहले हमें चित्तौड़ से लोहा लेना हैं। चितौड़ का राणा हमें नफरत की निगाह से देखता है।"

"जहांपनाह, चितौड़ के सिसोदिया राजपूत बड़े लड़ाकू और बहादुर हैं। उनसे लड़ना लोहे के चने चबवाना है।' अब्दुल मजीद खां ने कहा।

"ख्वाजा अब्दुल मजीद, क्या मुगल सैनिक कायर और बुजदिल हैं। हमारे ईरानी और तूरानी सैनिकों में वह रूहानी और जिस्मानी ताकत है जिसके आगे हिन्दुस्तान की बड़ी-बड़ी ताकतें और कौमें झुक गई हैं। हम अपनी तूरानी तलवार को सिसोदिया राजपूतों से आजमाना चाहते हैं।" अकबर ने बड़े जोश और उत्साह में भरकर कहा।

"सहसा दरबार में सिपहसालार हुसैन अलीखां ने आगे बढ़कर बादशाह को कोर्निस की और कहा—"जहांपनाह, चितौड़ के राणा का सर कुचलने के लिए आपका यह खादिम हर वक्त तैयार है। आप हुक्म फरमाइये। चितौड़ के लिए कब कूच किया जाय ?'

शहंशाह अकबर ने मुस्कराते हुए कहा—"हुसैन अलीखां, हम तुम्हारी दिलेरी पर बेहद खुश हैं। चितौड़ कूच के समय हम भी तुम्हारे साथ रहेंगे।"

बादशाह सलामत का हुक्म हुआ "संगीत शुरू हो।"

बादशाह अकबर का हुक्म पाकर दीवान-ए-आम संगीत की मधुर स्वरलहरों में डूब गया। दरबार में ग्वालियर के प्रसिद्ध गायक और वादक एकत्रित हुए थे। वीर-मण्डल सरमण्डल, वादक शिहाबखां, वीन-वादक, मीरसैयद ओर बहाराम कुली-सारंगी वादक, उस्ताद युसुफ-तम्बूरा वादक, तथा शाह मुहम्मद सर्ना वादक थे। सुमान खां, चांदखां और रामदास प्रसिद्ध गायक थे। कुछ देर तक दरवार में इन गायकों और वादकों ने अपनी अपनी कला का प्रदर्शन किया। और फिर पखावज पर थाप पड़ते ही मांडू की प्रसिद्ध नर्तकी हुस्नबानों के हिना रंजित पांव थिरक उठे। नूपुरों के मुखर होते ही हुस्नबानो की पतली कटि यमुना तरंग सी बल खाने लगी।

तानसेन का तानपूरा गूंजित हुआ। तानपूरे पर ध्रुवद की ताल के स्वर गूंज उठे। तानसेन की मधुर आवाज और स्वरों के लालित्य से बादशाह अकबर झूम उठा। जैसे पावस ऋतु में मोर बादलों को देखकर झूम उठता है। तानसेन के स्वरों के आरोह-अवरोह पर हुस्नबानो का नृत्य योवन पर चढ़ता जा रहा था। सरोद, सारंगी, तबला और तानपूरे के साथ तानसेन अपनी कला चातुर्य के प्रदर्शन में तल्लीन था। वह मदमत्त गज की तरह झूम रहा था। ध्रुपद के मधुर बोल दरबार में गूंज रहे थे।

कुछ क्षण बाद ध्रुपद के बोल समाप्त हुए। हुस्नबानो के थिरकते पांव थम गए। तालियों की गड़गड़ाहट और हर्ष ध्वनि में सारा दरबार मुखरित हो उठा। तानसेन की संगीत प्रतिभा और दिव्यकला की भूरि-भूरि प्रशंशा करते हुए शहंशाह अकबर ने कहा—तानसेन–' तुमने संगीत की विद्या कहां हासिल की है। हम उस शहंशाहे मौसिकी को देखना चाहते हैं।"

तानसेन ने पहले बादशाह को कोर्निस की और फिर कहा—"जहांपनाह, वृन्दावन के स्वामी हरिदास महाराज से मैंने संगीत सीखा है।"

"तानसेन, हम स्वामी हरिदास का संगीत सुनना चाहते हैं।"

"जहांपनाह, स्वामी जी का संगीत केवल ईश्वर आराधना के लिए होता है। वे कभी किसी मनुष्य के सम्मुख अपना स्वर अलापते नहीं।"

"तानसेन, स्वामी हरिदास से मिलने और उनका संगीत सुनने की हमारी दिली ख्वाहिश है।"

तानसेन ने बादशाह अकबर को आदाब बजाया और कहा—"जहांपनाह, आपके हुक्म की तामील यह खादिम जल्द से जल्द करेगा।

आधी रात के बाद दीवान-ए-आम में जुड़ा शाही दरबार समाप्त हो गया। बादशाह दरबार से उठ गया। नकीब और नक्कारे की आवाज दुर्ग में रात के समय कुछ देर तक गूंजती रही।

१३

सम्राट अकबर और तानसेन बृजभूमि में

शहंशाह अकबर जब दिल्ली से आगरा लौटा तो बीच में एक पड़ाव मथुरा में पड़ा। मथुरा उत्तर भारत का सबसे अधिक समृद्धशाली नगर था। मन्दिरों और मूर्तियों की कला के लिए यह नगर उत्तर भारत में सुविख्यात था। भगवान कृष्ण की जन्म भूमि होने के कारण यह हिन्दुओं का पवित्र स्थान था। मूर्तिभंजक महमूद गजनवी जब मथुरा आया तो उसकी अनुपम कला कृति को देखकर झूम उठा था। आक्रान्ता क्रूर महमूद गजनवी ने अपने कुत्सित कार्यों द्वारा उसकी कला सम्पन्नता, और प्राचीन वैभव को धूल-धूसरित करके मानवता के इतिहास में एक बीभत्स अध्याय जोड़ दिया था। यदि मथुरा की वह अनुपम कला और उसका नयनाभिराम सौन्दर्य मुसलिम आतातायों के अमानुषिक हाथों से बच गया होता तो भारतीय कला की उत्कृष्टता आज संसार के इतिहास में अमर होती। नृशंस महमूद गजनबी ने हिन्दुओं की इस पावन बृजभूमि को खूब लूटा। मन्दिरों और प्रतिमाओं को तोड़ा। नागरिकों के संचित कोष को अधिकृत किया। और फिर नगर के भव्य भवनों और प्रसादों को अग्नि की विकराल लपटों में जलाने के लिए छोड़ दिया।

विगत साढ़े पांच सौ वर्षों में न जाने कितनी बार इस पावन बृज-भूमि को विदेशी आक्रमणकारियों ने पदाक्रान्त किया। धन लोलुप, धर्मान्ध, और रक्त पिपासु महमूद गजनबी, कुतुबुद्दीन, आलतमश, अलाउद्दीन खिलजी, फीरोज तुगलक और सिकन्दर लोदी ने यहां विनाश का भीषण महाताण्डव खेला। धर्मान्ध सिकन्दर लोदी द्वारा भीषण नर संहार, बलात धर्म परिवर्तन और कठोर यातनाओं ने मथुरा नगर को जर्जर बना दिया। सूने देवालयों में आराधना के गीत नहीं गाये जाते। घण्टे निनादित नहीं होते। मंजीर और दमामें नहीं बजते। समय-समय पर सुलतानों ने मथुरा पर जो कठोर आघात किए हैं उनकी करुण चीख़ पुकारें यहां के ध्वंसावशेषों में आज भी गूंज रही हैं।

उत्तर भारत की यह पावन बृजभूमि जहां भारत की विभिन्न संस्कृतियों और धर्मों का पारस्परिक संगम हुआ है, आज वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन और बौद्ध धर्मों के अनेक मठ, मन्दिर और देवालय अपने विगत वैभव पर अश्रु बहा रहे हैं। सुलतानों की कट्टर इस्लामी हुकूमत में मथुरा को सदैव उत्पीड़न, उपेक्षा और घृणा मिली। उसे कभी विकसित होने का अवसर नहीं दिया।

शहंशाह अकबर का शाही पड़ाव मथुरा नगर के बाहर यमुना नदी के किनारे-किनारे पड़ गया था। राजा बिहारीमल और कुंअर मानसिंह के सद्प्रयत्नों से बादशाह की भेट वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्य गोस्वामी विट्ठलनाथ से हुई। शहंशाह अकबर गोस्वामी विट्ठलनाथ जी से मिल-कर बड़ा प्रभावित हुआ। शहंशाह अकबर ने गोसाई जी के सम्मान में खिलअत दी। उन्हें न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किया। सवारी के लिए एक शाही घोड़ा दिया। दमामा, छत्र और पंखा प्रदान किया। गोस्वामी विट्ठलनाथ जी ने सुलतान काल में उजड़े गोकुल के पुनरुद्धार के लिए आज्ञा प्राप्त कर ली।

शहंशाह अकबर के द्वारा गोकुल के पुनरुद्धार की घोषणा को सुनकर हिन्दुओं में हर्ष और उल्लास की लहर दौड़ गई। यह पहला बादशाह था जिसने हिन्दुओं के प्रति अपनी दया, सहानुभूति और उदार भावना का परिचय दिया था। नगर के बड़े-बड़े सम्भ्रान्त नागरिक, साधू सन्त और महन्त बादशाह अकबर से मिलने आए। शाही मन्सबदार कुंअर मानसिंह ने नागरिकों की करुण पुकार को बादशाह तक पहुंचाया। जब शहंशाह अकबर को कुंअर मानसिंह के द्वारा यह मालूम हुआ कि यहां की हिन्दू जनता सुलतानों के धार्मिक अत्याचारों और यातनाओं से बड़ी पीड़ित रही है। सुलतान काल में लिया जाने वाला जजिया कर और तीर्थ कर आज भी यहां की प्रजा से लिया जा रहा है। हिन्दुओं के लिए धार्मिक स्थानों, मन्दिरों और देवालयों के निर्माण के लिए रोक लगी है। हिन्दुओं को आतंकित करने के लिए खुले आम गो माँस विकता है। सुलतान काल में हिन्दुओं पर हुए अमानुषिक अत्याचारों की कहानी सुनकर शहंशाह का मन संताप से भर गया।

शहंशाह अकबर ने तत्काल एक फरमान जारी किया। सुलतान काल की वे सभी क्रूर अमानुषिक आज्ञाओं को उठा लिया जो मानवता और सभ्यता के इतिहास में अभी तक कलंक बनी हुई थीं। मथुरा के क्षितिज पर छाया सुलतानी शासन काल का मजहबी क्रूर अन्धकार सूर्य की नई किरण फूटते ही छंट गया। यमुना की चंचल लहरें कल-कल का मधुर राग अलापने लगीं। मथुरा के ध्वंसावशेषों में फिर से जीवन लौटने लगा। मन्दिरों और देवालयों में वर्षों से मौन पड़े घण्टे फिर से निनादित हो उठे। मजीर, दमामें और शहनाइयों पर अर्चना के मधुर पावन गीत बृजभूमि के आकाश में गूंज उठे।

मथुरा के मठ, मन्दिर और देवालय धूप-दीप से आमोदित हो उठे थे। भक्त वृन्द मुदमय होकर मधुर कण्ठ से भजन कीर्तन अलाप रहे थे। और दूसरी ओर यमुना किनारे शाही पड़ाव में संगीतज्ञ तानसेन का

तानपूरा झंकृत हो रहा था । राग दरबारी के मधुर बोल शाही पड़ाव में गूंज रहे थे । शाही पड़ाव में आयोजित संगीत समारोह में वृन्दावन के स्वामी हरिदास जी के पधारने की संभावना थी ।

यमुना के कछारों में दोपहर की बिखरी धूप कदम्ब और करील के वृक्षों पर चढ़कर आकाश में विलीन हो गई और संध्या का गहरा आवरण सारे मथुरा नगर पर छा गया । प्रभात हुआ फिर दोपहरी आई, और अन्त में दिवस का अवसान भी हो गया किन्तु बृन्दावन से स्वामी हरिदास शाही पड़ाव में नहीं पधारे । संगीत गूंज रहा था, लेकिन शहंशाह अकबर का मन स्वामी हरिदास की प्रतीक्षा में पीड़ित था । उनकी निगाहें बार बार खेमें के मुख्य द्वार पर जाती और निराश होकर लौट आती । शाही पड़ाव में चिराग जल गये । तानपूरा, मृदंग और पखावज के स्वर मौन हो गये । लेकिन स्वामी हरिदास नहीं आये । सवारी को भेजा गया शाही हाथी पड़ाव में खाली लौट आया । कुंअर मानसिंह ने खेमें में आकर शहंशाह को सलाम किया और कहा—"आलमपनाह, स्वामी हरिदास शाही पड़ाव में आने में असमर्थ हैं ।"

शहंशाह अकबर व्याकुल हो गया । मन में उठी दर्शनों की अभिलाषा नदी की चंचल तरंगों की तरह मचलने लगी । वह स्वयं स्वामी हरिदास जी के दर्शन के लिए वृन्दावन जाने को उद्यत हो गया । शहंशाह ने तानसेन से कहा-"तानसेन हम अल्लाह के उस नेक दिल फरिश्ते से खुद जाकर मिलेंगे । हमारा वृन्दावन जाने का इन्तजाम किया जावे।"

संध्या का धुंधला आवरण रात्रि के गहरे काले अंधकार में विलीन हो गया था । आकाश में तारे टिमटिमा आए थे । यमुना नदी की शीतल लहरों का चुम्बन कर मंद-मंद शीत पवन कदम्ब, करील और पलाश के फैले सघन वन में एक अल्हड़ नवयुवती की तरह यौवन में मदमाती इठलाती और बलखाती हुई झूम रही थी । शुक्ल पक्ष की पंचमी थी । कुछ देर बाद आकाश में चन्द्रमा भी उदित हो आया था ।

शहंशाह अकबर का हाथी मथुरा से वृन्दावन जाने वाले पथ पर तेजी से बढ़ा जा रहा था। पीछे एक हाथी पर तानसेन सवार था और कुछ अंग-रक्षक घुड़ सवार चल रहे थे।

पंचमी का चंद्रमा जब वृन्दावन के एक मंदिर के गगन-चुम्बी गुम्बिद के पीछे उतर रहा था तब शहंशाह अकबर का हाथी आम्र-विटपों, केलों और कदम्ब के सघन कुंजों में आकर रुका। तरु, लता, और गुल्मों से अच्छादित निधिवन में स्वामी हरिदास का मनोरम आश्रम था। शहंशाह अकबर हाथी से उतरकर केले के एक सघन कुंज में जाकर खड़ा हो गया। तानसेन ने आश्रम के मुख्य द्वार के सम्मुख खड़े होकर टोड़ी राग अलापा। स्वरों के आरोह-अवरोह शास्त्रीय संगीत के विपरीत उठ रहे थे। तानसेन के मुख से फूटने वाली ध्वनि स्वरों के विशिष्ट क्रम से उत्पन्न नहीं हो रही थी। राग में न कोई आल्हाद था, न कोई मधुरता थी और न कोई सरसता।

आश्रम के बाहर उठने वाले कर्णकटु संगीत को सुन स्वामी हरिदास का मन अवसाद से भर गया। संगीत का अपमान होते देख उनका संगीत हृदय जाग उठा। जैसे सोये हुए सागर में सहसा ज्वार उठ आया हो। स्वामी हरिदास की हृदय तंत्री झनझना उठी। स्वरों के मधुर आरोह-अवरोह आश्रम में गूंज उठे। तरु शाखाओं पर बैठे पक्षी फुदकने लगे। राग की मधुरता से शहंशाह अकबर विमुग्ध हो गया। शंहशाह का मन मस्त मयूर की तरह थिरक उठा। थोड़ी देर बाद राग समाप्त हुआ। राग की मधुरता में डूबे स्वामी हरिदास के नेत्र जब खुले तो उन्होंने देखा—चरणों में नत शीश किये युवक तन्ना बैठा है।

स्वामी हरिदास बोले—"तन्ना, शाही दरबार में पहुंच कर क्या राग अलापना भूल गये ?"

"महाराज, मेरा अपराध क्षमा करिये। शहंशाह अकबर आपका मधुर संगीत सुनने के लिए बेहद इच्छुक थे। मुझे शहं-

शाह् की इच्छा पूर्ति के लिए टोड़ी राग बन्दिशों के विपरीत गाना पड़ा।"

तानसेन अपना वाक्य पूरा भी न कर पाया था कि शहंशाह अक-बर स्वामी हरिदास के सम्मुख आकर खड़े हो गये। शहंशाह ने स्वामी जी को खिलअत देना चाही किन्तु स्वामी हरिदास जी ने स्वीकार नहीं किया। अन्त में शहंशाह अकबर तानसेन के साथ वृन्दावन से मथुरा लौट आये। सुबह होते ही शाही पड़ाव आगरा की ओर कूच कर गया।

卐 卐 卐

१४

उड़त गुलाल लाल भयो अम्बर

आज बहुत वर्षों बाद बृजभूमि में ऋतुराज वसन्त मुस्कराया था। इसके पहले कभी बसन्त की सुषमा यहां के तरु लता और गुल्मों पर नहीं आई थी। सुल्तान काल का क्रूर पतझर यहां सदैव व्याप्त रहा। हिन्दू जन-जीवन भयभीत और त्रस्त था। खेतों की आशाओं पर तुषार-पात होता। वन-उपवन उजड़ते रहे, मन्दिर, देवालय, स्तूप और मठ ध्वंस होते रहे। अमराइयों में कोयल कभी नहीं कुहकी। फूलों पर भ्रमरों का मधुर गुंजन नहीं हुआ। कदम्ब और करील के सघन कुंजों में किसी मदमस्त ग्वाले का सावन की घटाओं को देख मेघ मल्हार नहीं गूंजा। मन्दिरों में आरती के थाल नहीं सजे। आराधना के स्वर सर्वत्र मौन रहे। मृदंग, शंख, झांझ, मंजीर और मुरली, मुरज का नाद कभी नहीं गूंजा। चारों ओर भय, आतंक, हत्या, लूट और बर्बरता से प्रजा पीड़ित थी।

अब नृशंस सुल्तान काल बीत गया था। बृजभूमि की धरती पर दुःख की महा भयानक काली रात मिट गई थी। आकाश में नया विहान हुआ था। जड़ और चेतन में नई चेतना जगी थी। वन-उपवन लहलहा उठे थे। खेतों में पीत वसन ओढ़े सरसों किसी षोढ़स नवबाला की तरह इठलाने लगी थी। गदराती गेहूं की बालों की गन्ध और मह-

महाती अरहर की महक से कृषक का मन जीवन की नई उमंगों, आशाओं और अभिलाषाओं से भर गया था। यमुना के कछारों की नयनाभिराम हरीतिमा से मन पुलक-पुलक जाता था। कदम्ब, तमाल और करीलों में नई नई कोपलें फूट पड़ी थीं। मधुमास में विहंसते पलाश के लाल-लाल होंठ रास लीला में किसी बृजबाला के हंसते मुस्कराते अधरों की तरह लग रहे थे।

बादशाह अकबर ने साम्राज्य भर में होलिकोत्सव मनाने का फरमान जारी कर दिया था। मुगल साम्राज्य के सिपहसालारों और सूबेदारों और बाकयानबीसों ने जगह-जगह जाकर बादशाह के फरमान की ढोंढी पिटवादी थी। शहंशाह को यह त्यौहार बहुत पसन्द आया था। हिन्दुओं के इस त्योहार में शहंशाह अकबर को एक मित्र का सा सौहार्द्र, बन्धुत्व की भावना, समानता, सहयोग और सहानुभूति के साथ-साथ विविध मनोरंजन, गायन-वादन और हास्य विनोद भरी केलि-क्रीड़ाएं दिखाई पड़ी थीं।

आगरा दुर्ग के भीतर होलिकोत्सव की तैयारी प्रारम्भ हो गई थी। आमेर, कोटा, बीकानेर, जोधपुर, और बाँधवगढ़ के हिन्दू राजाओं को बादशाह ने होली खेलने के लिए आमंत्रित किया था। दुर्ग के हौजों, और तालाबों में रंग बिरंगा जल भर दिया था। यमुना के घाटों की भी विशेष सफाई की जा रही थी। भग्न घाटों और मन्दिरों का भी जीर्णोद्धार हो रहा था। दुर्ग का दीवाने खास विशेष रूप से सजाया गया था। बादशाह की प्रमुख हिन्दू रानी और आमेर की राजकुमारी जोधाबाई ने अपने अन्त: पुर में होली खेलने की तैयारी शुरू कर दी थी।

माघ मास की पूर्णिमा से ही मथुरा, गोकुल, वृन्दावन और गोवर्धन में भी होली की चहल-पहल शुरू हो गई थी। ज्यों-ज्यों फागुन मास की तिथि बीतती जाती त्यों-त्यों हुरहारे युवकों में होली का उल्लास बढ़ता जाता। चांदनी रातों में बृज के गाँव-गाँव ढोलकी की ठनक से गूंज

उठे। ढप पर, नर-नारी और युवक युवतियाँ झूम-झूम कर होली के गीत अलापने लगे थे। होलिका दहन के पूर्व ही आकाश अबीर और गुलाल से रंजित होने लगा था। सम्राट अकबर की आज्ञा से उत्साहित होकर मथुरा, वृन्दावन और गोवर्धन में होली का उत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा था।

पूर्णिमा के दिन गिरराज की परिक्रमा करने के लिए गोवर्धन में यात्रियों का अपार जन समूह उमड़ा था। सघन वृक्षावली से घिरा गिरराज पर्वत था। चारों ओर कदम्ब और करील के सघन कुंजों में मयूर, शुक और पिक कल कुंजन कर रहे थे। भक्त जनों ने पहले मानसी गंगा के निर्मल जल में स्नान किया फिर गोवर्धन भगवान के दर्शन कर मन का परिताप मिटाया। तत्पश्चात गिरराज पर्वत की परिक्रमा के लिए भजन गाते झूमते चल पड़े।

संध्या होते-होते गिरराज पर्वत की परिक्रमा समाप्त हो गई थी। पूर्णिमा का वर्तुलाकर चन्द्रमा आकाश में अपनी सम्पूर्ण कलाओं से खिल आया था। श्रृद्धा और भक्ति से भरा अपार भक्त समूह श्रीनाथ जी के मन्दिर के सम्मुख एकत्रित हो गया था। होलिका दहन का पर्व लग-भग बारह बजे पर था। गोस्वामी विट्ठलनाथ जी ने श्रीनाथ जी के मन्दिर में इस वर्ष होलिका उत्सव का आयोजन किया था। मन्दिर के सामने एक विस्तृत मण्डप लगा हुआ था। भक्त जन संकीर्तन कर रहे थे। ताल, मृदंग, झांझ, ढप, मुरली, मुरज, पखावज़, मन्जीर और चंग आदि विविध वाद्य यन्त्रों से पांडाल मुखरित हो रहा था।

मण्डप के एक ओर ऊंची सी पीठिका पर गुसाईं विट्ठलनाथ जी बैठे थे। उनके दोनों ओर अन्य संकीर्तनकार श्रीनाथ जी की भक्ति में विभोर हो भजन अलाप रहे थे। वाद्यों की मधुर ध्वनि गूंज रही थी।

फाल्गुन पूर्णिमा की रात्रि धीरे-धीरे चढ़ रही थी। होलिका दहन का पर्व निकट आता जा रहा था। कुछ देर बाद शाही घुड़सवारों के

साथ एक हाथी मण्डप के सम्मुख आकर रुका। तानसेन के आगमन की लहर मण्डप में फैल गई। सारा जन समुदाय हर्ष के अपार पारावार में डूब गया। शाही गायक तानसेन हाथी के हौदे से उतरकर मण्डप में पहुंचा। पहले भगवान श्रीनाथ जी के दर्शन कर मन का परिताप मिटाया। फिर गुसांई विट्ठलनाथ जी के चरणों में मस्तक झुकाकर प्रणाम किया। इसके पश्चात गायक तानसेन ने शहंशाह अकबर का भेजा हुआ फरमान गुंसाई विट्ठलनाथ जी को दिया। फरमान की भाषा कुछ इस प्रकार थी।

गुंसाई विट्ठलनाथ जी,

हमने सुल्तान एहद के वो तमाम गैर इन्सानी, गैर मोहजब और गैर मजहबी महसूल मसलन जजिया बगैरा मुआफ कर दिए हैं, जिनसे सल्तनते आलिया की गैर मुसलिम रैयत की दिल सिकनी हो। हम अपने सफीर की हैसियत से शहंशाहे मौसिकारे तानसेन को जश्ने होली में सिरकत करने भेज रहे हैं। अलावा इसके गोकुल और जतीगाँव की जागीर आपको बकरम पुस्त दर पुस्त अता फरमाते हैं।

शहंशाह—जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर

बादशाह सलामत का भेजा हुआ फरमान गुसांई विट्ठलनाथ जी ने अपार जन समूह के सम्मुख पढ़कर सुनाया। फरमान सुनकर भक्त बृन्द गद्गद हो गये। फिर विशाल मडप तानसेन की मधुर रागिनी से मुखरित हो उठा। विविध वाद्यों की सुमधुर ध्वनि गिरराज पर्वत के चारों ओर फैल गई। मानसी गंगा भी तरंगित हो उठी। तानसेन के पश्चात महावन के प्रसिद्ध सन्त गायक श्री गोविन्द स्वामी का सारंग राग मंडप में निनादित हुआ। सब लोग राग की मादकता में तन्मय हो गए।

संकीर्तन समाप्त हुआ। करतल ध्वनि से मण्डप गूंज उठा। श्रीनाथ जी के मन्दिर में आयोजित होलिकोत्सव में गायक तानसेन शहंशाह अकबर की ओर से एक दूत के रूप में सम्मिलित हुआ था। इसलिए

गु ंसांई विट्ठलनाथ जी ने गायक तानसेन के सम्मान में दस हजार स्वर्ण मुद्रायें भेंट कीं। स्वर्ण मूद्राओं के साथ ही एक कौड़ी भी दी गई। गायक तानसेन ने भेंट में कौड़ी देने का रहस्य जानना चाहा। गुसांई विट्ठलनाथ जी ने कहा—"तानसेन, तुम शहंशाह अकबर के दरबारी गायक हो। इसलिये शाही गायक का सम्मान करना हमारा कर्त्तव्य है। दस हजार स्वर्ण मुद्रायें तुम्हें शाही गायक होने के नाते भेट की गई हैं। किन्तु तुम्हारा संकीर्तन–संगीत सन्त गोविन्द स्वामी के सम्मुख अभी कौड़ी के समान है।"

गुसाईं विट्ठलनाथ जी की बात को सुनकर गायक तानसेन ने गोविन्द स्वामी को अपना संगीत गुरु स्वीकार कर लिया फिर उसने संगीत विद्या सीखने की अपनी इच्छा प्रकट की।

धीरे-धीरे वह क्षण आ गया जिसकी प्रतिक्षा अपार जन समुदाय कर रहा था। फाल्गुन पूर्णिमा का उज्ज्वल चन्द्रमा आधे आकाश पर चढ़-कर अपनी दिव्य आभा से संसार को आलोकित कर रहा था। होलिका दहन का पर्व लग गया था। निश्चित समय पर होलिका दहन हुआ। पूजा के बाद ढोलकियों पर थाप पड़ी। थप-थप की मधुर ध्वनि पर होली के गीत गूंजने लगे। गीतों का स्वर आकाश में फैल गया। चारों ओर अबीर और गुलाल उड़ने लगा। आकाश लाल हो गया। पदाक्रान्ता बृजभूमि में एक बार फिर से नया जीवन लौट आया। जैसे पतझार हुये उपवन में बसन्त सरसाया हो।

⁂ ⁂ ⁂

१५

स्मृति और वेदना

भादों के काले भयावह मेघों से आकाश आच्छन्न था। बादलों के काले आवरण को चीरकर अष्टमी का चाँद कभी कभी दुर्ग के कंगूरों, मुण्डेरों, और महराबों पर झांक पड़ता था। सघन काले बादलों के बीच चाँद का गोरा मुखड़ा ऐसा लगता मानो कोई सद्य स्नाता मुगल सुन्दरी काली केश राशि बिखराये आकाश में अपनी गोरी बाहों को ताने शीश महल की मुण्डेर पर खड़ी मुस्करा रही हो।

पानी बरस कर थम चुका था। लेकिन आकाश में घहराती काली भयंकर घटाओं को देखकर ऐसा जान पड़ता मानो पानी फिर भी बरसेगा। आकाश में रह रह कर होने वाली बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की चमक से दुर्ग की दीवारें दहल उठती थीं। पुरवाई हवा के झोकों के साथ पड़ने वाली रिमझिम फुहारों में नहायी हुई संगमरमरी शीशमहल की भव्य छवि ऐसी लगती मानों स्फटिक जलाशय में डूबी शाही हरम की कोई बेगम फव्वारे से झरतीं गुलाब जल की नन्हीं नन्हीं बूंदों में अपना गोरा तन निखार रही हो।

शहजादी मेहरुन्निसा का मन जब ड्योढ़ी की चहार दीवारी के भीतर ऊब गया और उसे एक प्रकार की घुटन का अहसास होने लगा तो वह कुछ राहत और चैन पाने एक तातारी बाँदी रेशमा को साथ

लेकर ड्योढ़ी की छत पर आ गई। चन्द्रमा का कुछ भाग बादलों में छुपा था। सारी प्रकृति धवल ज्योत्सना से नहायी हुई सी लग रही थी। दुर्ग के उत्तरी भाग में शाही मस्जिद की एक मीनार रात्रि में प्रहरी बनी खड़ी थी। मीनार के आसपास बादलों का एक कुहासा सा छाया हुआ था। विस्तृत व्योम पर कपास के हलके-हलके रेशों से मंडराते

हुये मेघ मेहरुन्निसा के मन को अच्छे लगे। उसका संतप्त मन कपास के फूल की तरह खिल गया। वर्षा की पुरनम हवा के झोकों ने उसके सिर का रेशमी सितारों जड़ा दुपट्टा खिसका दिया। वह शरमा गई। नारी सुलभ लज्जा उसके कपोलों पर दौड़ आई। मेहरुन्निसा ने दुर्ग के चारों ओर निहारा। दूर्वा और झाड़ियों से सजी धरती हरी चूनरी ओढ़े एक नई नवेली दुलहन की तरह घूंघट में विहंसती सी लग रही थी। ये ऊंदी ऊंदी घटायें। हवा के मंद-मंद झोकों में लरक-लरक उछलती हुई टहनियाँ, अठखेलियाँ करती फुनगियाँ और झूमती हुई पात्तयाँ ऐसी लग रही थीं जैसे कोई अल्हड़ नव युवती मुग्धभाव से मेघ मल्हार गा कर हिण्डोला झूल रही हो।

जब श्यामल मेघों का झीना आवरण चन्द्रमुख पर आ पड़ता तो कुछ देर के लिए सारा दुर्ग एक गहरे से अन्धेरे में डूब जाता। थोड़ी देर बाद ज्योत्सना स्नात आकाश पुनः चमक उठता तब मेहरुन्निसा की आंखों में यमुना के कछारों में फैली हुई हरीतिमा उभर पड़ती। मन पुलक-पुलक कर लोटन कबूतर की तरह पैंगें भरने लगता। यमुना नदी की उफनती लहरों का नर्तन और प्रकृति की बिखरी हरी भरी सुषमा को देखकर शहजादी मेहरुन्निसा का हृदय नई कल्पना, नई भावना और नई उमंग से भर जाता। वह कुछ क्षण के लिए भावोद्रेक हो अपने विचारों में झूम जाती। जैसे कोई गुलाबी मदिरा के सरूर में मस्त हो झूमने लगता है। सहसा शहज़ादी मेहरुन्निसा का प्रफुल्लित चेहरा कुम्हला गया जैसे अधिक उष्णता से फूल की मुलायम पांखुड़ियाँ मुरझा जाती हैं। सहसा उसके मन में एक वेदना एक कसक और एक स्मृति यमुना नदी की उफनती बाढ़ की तरह फैल गई। वह फिर संतप्त और व्याकुल हो गई। उसने आकाश में घुमड़ते बादलों की ओर व्याकुल दृष्टि से निहारा और कहा—"रेशमा, आसमान से झरती हुई फुहारों ने धरती की प्यास को बुझा दिया, लेकिन मेरा दिल अब भी प्यासा, अतृप्त और बेचैन है।

धरती का जर्राजर्रा गुलजार हो गया। लेकिन मेरे दिल का चमन अब भी उजड़ा, सूखा और खाकजार है। रेशमा, जब मैं अपनी अतृप्त आँखों से इन काली काली घटाओं को निहारती हूं तो मेरा मन मयूर नाचने के बजाय रो उठता है। आँखों से आंसुओं का सागर फूट पड़ता है। और रोते रोते हृदय का सागर रीत जाता है। चलो रेशमा ड्योढ़ी में लौट चलें। वर्षा की इन काली घटाओं को देखकर दिल का दर्द और बढ़ जाता है।"

शहजादी मेहरुन्निसा और बाँदी रेशमा दोनों ड्योढ़ी के भीतर लौट आईं। शहजादी अपनी अलसाई देह लिए मसनद पर लेट गई। जैसे कोई आँधी के तीव्र वेग में पेड़ से टूटी हुई टहनी जमीन पर आ गिरती है।

रात्रि का अर्द्ध प्रहर बीतने को था। अष्टमी का चाँद शाही मस्जिद की एक विशाल गुम्बद की ओर आ गया था। धीरे-धीरे मस्जिद का वह विशाल गुम्बद जो फूलदार छत्र एवं अर्धचन्द्र युक्त कलश से सुशोभित था मेघों की कालिमा में छुप गया ड्योढ़ी के भीतर भाड़ फानूस का प्रकाश फैला हुआ था। कक्ष के एक झरोखे से बाहर झांकते हुए बाँदी रेशमा ने देखा। उसे दुर्ग में चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा बिखरा हुआ लगा। अंगूरी बाग के पास बनी शाही ड्योढ़ियों में रोशनी नहीं थी। दीवाने खास, बारहदरी, खास महल और शीश महल से चिरागों, मशालों और झाड़ फानूसों का कहीं कहीं मद्धिम प्रकाश छिटका हुआ था। सारा दुर्ग नींद में डूबा हुआ था, लेकिन ड्योढ़ी के भीतर शहजादी मेहरुन्निसा मसनद पर पड़ी अभी भी करवटें बदल रही थी।

बाँदी रेशमा ने कहा—हुजूर—"अबआप सो जाइये, रात आधी ढल चुकी है।"

"रेशमा, मुझे नींद नहीं आती। आँखों में तरह तरह के ख्वाब आते है और आंसूओं का सागर पलकों पर छलका जाते हैं। दिल बड़ा

परेशान और बेचैन है। मेरा जीवन अभिशाप बन गया है। मुझे इस जिन्दगी से शदीद नफरत हो गई है। ये निहायत नफीस गद्दे तोषक, मोतियों की लड़ियां टकी मखमली चादरें, झाड़ फानूसों की झिलमिलाती रोशनी, इत्र फुलेल, फूलों की खुश्बू और अंगूरी,शराब-ये तमाम शाही ऐशो इसरत मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। मन कुछ विरक्त सा हो गया है। चाहती हूं, यहां से कहीं दूर बहुत दूर, चली जाऊं। जहां गहन घाटियाँ और वादियां हों। बीयावान ही बीयावान हो। रेगिस्तानी आंधियों के बवंडर हों जहां फंसकर मैं अपनी जिन्दगी खाकजार करलूं।"

"ऐसा न कहो शहजादी साहिबा। बादशाह सलामत फतहपुर सीकारी से कल लौट आयेंगे। आप अपनी मंशा मां बदौलत के सामने जाहिर कर दीजिए। यूं कब तक आप दिल के आइने में छुप-छुपकर दिलवर की झलकियाँ निहार-निहार कर तड़पती रहोगी"।

"रेशमा, मैं गुजारिश किससे करूं ? मेरी आवाज कोई नहीं सुनता। कोई क्यों सुने ? मैं अनाथा हूं। दुनियाँ में मेरा कोई भी तो नहीं है। वालिद और अम्मी दोनों काबुल में फौत हो गये। किसी दिन मेरी जिन्दगी का काफिला भी यादों के तूफान में फंसकर नष्ट हो जावेगा। माँ बदौलत मेरा दर्द जानते हैं। लेकिन वे मजबूर हैं। मजहब का भय और शाही खानदान की बदनामी से वे ऐसा कोई कदम उठा नहीं सकते। तानसेन हिन्दू है। एक हिन्दू के साथ मुगल शहजादी की शादी कैसे हो सकती है ! तमाम शाही बंदिशे हैं। मजहबी रुकावटें हैं।"

"शहजादी साहिबा, आप एक बार बादशाह सलामत के सामने अपने दिल का दर्द भरा अफसाना जाहिर करके तो देखिए। मुझे यकीन है कि आलमपनाह का दिल तुम्हारी गिरती हुई सेहत को देखकर जरूर पिघल जावेगा।"

"रेशमा, शहंशाह के सामने अब गुजारिश करना फिजूल है। आमलपनाह ने चित्तौड़ और रणथम्भोर की फतह और कामयाबी से

खुश होकर सिपहसालार उजवेग हुसैन कुली खां को खानजहां का खिताब दिया है और मेरे साथ रिश्ता कबूल किया है। उजवेग हुसैन कुली खां आज पन्द्रह दिन से किले के महमानखाने का शाही महमान बना हुआ है। शायद शहंशाह सीकरी से लौटते ही मेरा निकाह कर दें।"

"हुजूर शहजादी, जां बख्शी पाऊँ तो एक अर्ज पेश करूं।"

"रेशमा, तुम हमारी खादिमा ही नहीं हमजोली भी हो। हम तुम्हारी हर बात सुनने को तैयार हैं।"

"शहजादी साहिबा, उजवेग हुसैन कुली खां का चेहरा बड़ा खूंखार लगता है। मर्दूद की आंखों से सदैव खून टपकता रहता है। आपको जंगखोर शौहर मिला है।"

"रेशमा, उजवेग हुसैन कुली खां मुझे भी कतई पसन्द नहीं है। लेकिन बादशाह सलामत इस रिश्ते को चाहते हैं। उनका ख्याल है कि इस रिश्ते से तैमूर के दो खानदानों में चली रही पुरानी दुश्मनी खत्म हो जावेगी।"

"शादी के बाद शायद उजवेग हुसैन कुली खां को शहजादों जैसा दर्जा भी मिल जाय। लेकिन रेशमा उजवेज हुसैन कुली खां शाहजादा बने, चाहे सिपहसालार वह मेरी जिन्दगी के उन तमाम खूबसूरत ख्वाबों का ताबीर नहीं बन सकता। मैं तानसेन के साथ शादी करने का अपना मुकम्मिल इरादा कर चुकी हूं।"

सहसा आकाश में बादलों की तेज गड़गड़ाहट हुई। विद्युत की कौंध में सारा दुर्ग चमक गया। मसनद पर पड़ी शहजादी मेहरुन्निसा कांप गई। उसने हलके स्वर में कहा—

"रेशमा, कहीं बिजली गिरी है।"

"हां, शहजादी साहिबा। बिजली की चमक और बादलों की आवाज बड़ी तेज थी। आसमान भी कांप गया।"

थोड़ी देर बाद शाही मस्जिद से अजान के बोल गूंजे। बाँदी

रेशमा ने ड्योढ़ी के एक झरोखे से झांकते हुए देखा। पानी बरस कर थम चुका था। अन्धकार में डूबी मस्जिद की मीनार सुबह के प्रकाश में उभरती चली आ रही थी। बांदी ने कहा—"हुजूर शाहजादी साहिबा, सुबह हो गई। आज सारी रात खुली पलकों में ही बीत गई।"

शाहजादी मेहरुन्निसा ने धीरे धीरे मोतियों जड़ी मखमली चादर से अपनी गोरी देह ढांकली और गद्दे पर करवट बदल कर लुढ़क गई। इस समय वह मौज में थी। यादों और अवसादों से भरी वर्षा की रात बीत गई थी।

१६
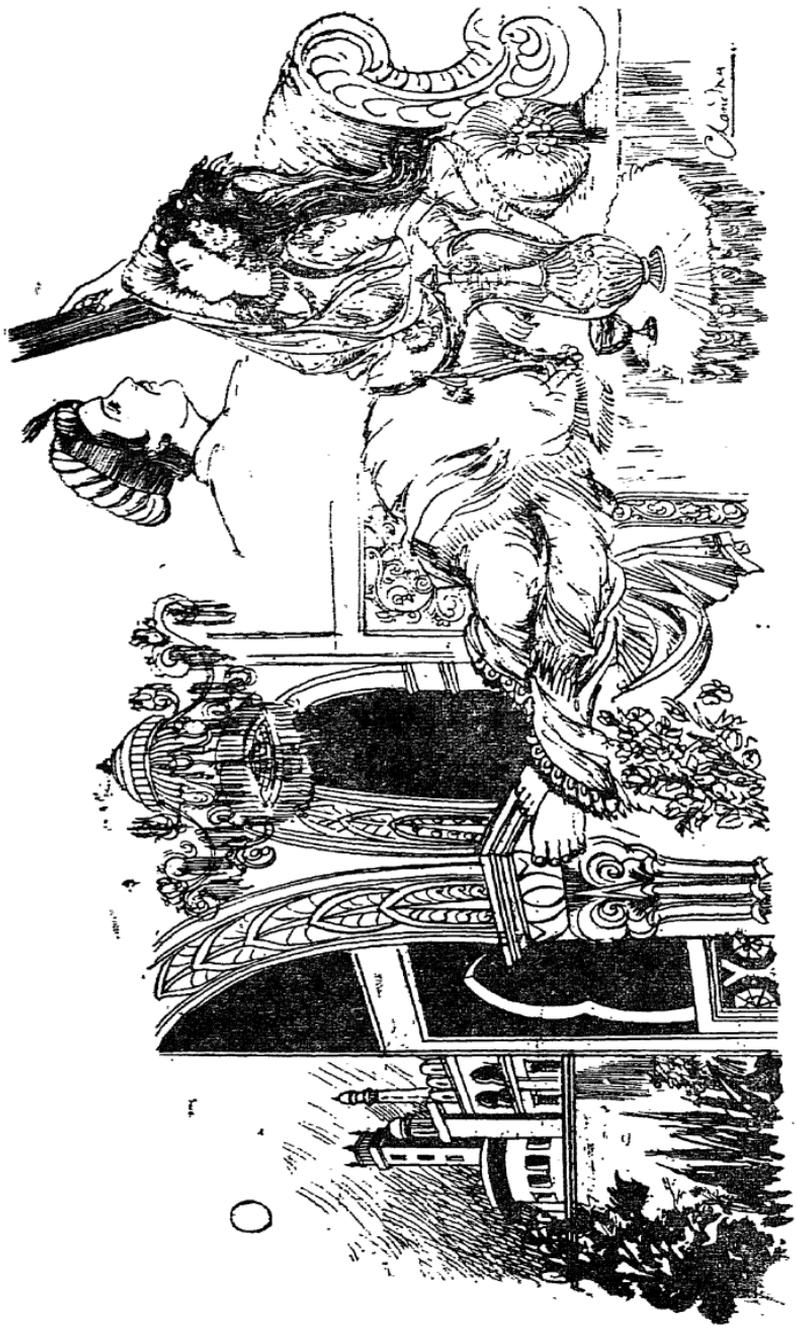
गुस्ले सहर

भादों मास का सबेरा था। आगरा दुर्ग में हलचल पैदा हो गई थी। शाही हरम में भी जागरण हो गया था। वेगम मरियम जमानी, बेगम सलीमा और बाँदियां तथा लौडियों के साथ दुर्ग के उत्तर पूर्व में स्थित एक शाही बुर्ज पर चढ़कर यमुना नदी की बाढ़ को देख रही थी लेकिन शाहजादी मेहरुन्निसा ड्योढ़ी के भीतर मसनद पर नीला रेशमी दुशाला ओढ़े सुबह की मधुर नींद ले रही थी।

यमुना की बाढ़ में डूबे कूलों कछारों और पेड़ों की टहनियों से उठकर सूर्य की कोमल किरणें जब दुर्ग की लाल प्राचीरों, गोल गोल बुर्जों और टेड़े मेढ़े कंगूरों पर पड़ने लगी, डयोढ़ी के बाहर पहरे पर खड़ी एक तातारी बाँदी को आश्चर्य हुआ। सुबह की धूप कहां तक चढ़ आई है। शाहजादी अभी तक सो रही है। उसने ड्योढ़ी के कक्ष में प्रवेश किया। और देखा मसनद पर पड़े लाल मखमली गद्दे पर नीले रेशमी दुशाले से अपना गोरा गात लपेटे शाहजादी सो रही है। ड्योढ़ी रोशनदानों, झिझरियों और स्फटिक जालियों से छन-छन कर सूर्य की आभा मेहरुन्निसा के मुख पर पड़ रही है। कक्ष के वामपार्श्व में बाँदी रेशमा पड़ी सो रही है। तातारी बाँदी से न रहा गया। उसने बड़े धीमे स्वर

से कहा—'हुजूर' में सदके जाऊं। आप हुत भोली हैं। उठिये शाहजादी साहिबा। गुश्ले सहर का समय हो गया है।"

शाहजादी के कानों में एक हल्की सी भनक पड़ी। नींद की मीठी झपकियाँ टूट गईं। उसने अपनी उनींदी आँखे खोलीं। लाल मखमली गद्दे पर बिखरी काली-काली जुल्फों को अपनी गोरी-गोरी बाँहों से सभाला और हवा में झूमती गुलाब की एक नम्र टहनी की तरह अगड़ाई ली और फिर उस तातारी बाँदी की ओर त्योरियां चढ़ाये हुए कहा—"निगोड़ी" अभी-अभी हमारी पलकें झपी थीं। रात भर तेज वारिश गड़गड़ाते बादल और वार-वार चमकती बिजली ने सोने नहीं दिया।"

मेहरुन्निसा की आवाज को सुन रेशमा भी जाग गई। उसने तत्क्षण उठकर आदाब बजाया और कहा—"हुजूर" गुस्ल करेंगी। आज रात वारिश अच्छी हुई है। बावड़ी और हौज में पानी उतर आया होगा।"

मसनद से मेहरुन्निसा उठी। तातारी बाँदी ने कपड़े सभाले। शाहजादी ने कहा—" हम शीशमहल के हौज में गुस्ले सहर करेंगे। हमारे गुस्ल का बन्दोबस्त हो"

अगूरी बाग के उत्तरी पूर्वी सिरे पर अवस्थित शीशमहल इसमें दो विशाल कक्ष हैं। प्रत्येक कक्ष में स्फटिक जलाशय है। नयनाभिराम भित्ति चित्रों और काँच की कलापूर्ण कारीगरी से हमाम सुशोभित है। हमाम की छत एवं भित्तियों पर अनगिन रंग बिरगे दर्पण के टुकड़े जड़े हैं। अष्टभुजी स्फटिक जलाशय में जब मुगल शाहजादियां और बेगमें गुस्ल करती हैं तो उनका प्रतिबिम्ब काँच के टुकड़ों पर झलकने लगता है।

शीशमहल का पूरा हमाम संगमरमर का बना हुआ है। इसके मध्य में एक खिले कलम के आकार का एक हौज है। चारों ओर फूलदार बेलें हैं। हमाम का फर्श वर्गाकार स्फटिक टुकड़ों से जड़ा है। हमाम अत्यन्त सुसज्जित है। तातारी बाँदी ने हौज के सुप्त जल में गुलाब के फूल डाले

और फिर ढेर सा इत्र और गुलाब जल उँडेल दिया। समूचा हमाम सुगन्धित हो उठा। रेशमा ने मेहरुन्निसा के बस्त्र उतारे। शाहजादी के यौवन की आभा से सारा हमाम दीप्त हो उठा। वह धीरे से हौज में उतरी और एक जलपरी की तरह जल क्रीड़ा करने लगी। हमाम की खवाशिनों ने हौज के चारों ओर खड़े होकर फूल बरसाए। इत्र और गुलाब जल छिड़का। इत्र की खुश्बू से जल में तैरता हुआ शाहजादी का स्वर्णगात फूल सा महक उठा। रेशमा ने हमाम के भीतर रंगीन रोशनी चटकाई। मेहरुन्निसा का अप्रतिम सौन्दर्य दीवारों पर जड़े अनगिन दर्पणों में झिलमिलाने लगा। एक मुगल शाहजादी अपने अनेक सुन्दर रूपों में बंट गई। शाहजादी कभी संगमरमर के आनेदार स्वच्छ तल में जा बैठती तो कभी हौज के तरंगित ज़ल के ऊपर गुलाब के फूल की तरह तैरने लगती।

कुछ क्षण के बाद मेहरुन्निसा हौज से बाहर निकली। खवाशिन ने जूड़े की बिखरी काली-काली लटों को संभाला। मुलायम मखमली कपड़े से पौंछा। सुगन्धित तेल और इत्र तन से मलकर सिंगार किया। रेशमा ने रत्नजटित रेशमी पौशाक से उसका गोरा तन ढाँक दिया। फिर शाहजादी हमाम से बाहर आई। ड्योढ़ी की ओर लौटते समय उसकी निगाह अंगूरी बाग के दूसरी ओर स्थित तानसेन की हवेली पर पड़ी। उसने कहा-"रेशमा किसी तातारी बाँदी से कहो शाहजादी तानसेन को याद फरमाती है।'

१७

मेहरुन्निसा, तानसेन और हुसैन कुली खां

तातारी बाँदी चली गई। मेहरुन्निसा रेशमा के साथ ड्योढ़ी में लौट आई। कुछ देर बाद तातारी बाँदी ने ड्योढ़ी के भीतर प्रवेश कर पहले शाहजादी को आदाब बजाया और कहा—"तानसेन तशरीफ लाए हैं।

मेहरुन्निसा का मोहब्बत की किरणों से दमकता चेहरा फूलसा खिल उठा। दिलरुबा के तारों पर द्रुतगति से थिरकती कोमल उंगलियाँ सहसा रुक गईं।

शाहजादी ने अदब से कहा—"यहां मसनद के पास आकर बैठिये।"

तानसेन ने झुककर सलाम किया और मसनद के वाम पार्श्व में पड़ी एक चौकी पर बैठते हुए कहा—"शाहजादी साहिबा, आपने मुझे याद किया है।"

"हां तानसेन। बारिश के मौसम में आज तुम्हारे संगीत को सुनने की बेहद इच्छा हुई है और हकीकत यह है कि इस बहाने हम तुम्हारा दीदार भी कर लेते हैं।"

तानसेन निरुत्तर रहा। उसके हृदय के बोल तान पूरे पर बिखर गये। तानसेन का मधुर कण्ठ स्वर तानपूरे के तारों के कम्पन के साथ ड्योढ़ी के भीतर उन्माद बिखेर गया। मेघ—मल्हार के मधुर आलाप से

मेहरुन्निसा के हृदय में प्रेम की धारा पावस कालीन सरिता की तरह प्रवाहित हो उठी। तानसेन के स्वरों के विविध आरोह-अवरोह पर मेहरुन्निसा का रोम-रोम प्रफुल्लित था। तानपूरे के निनादित तार ड्योढ़ी के स्फटिक पाषाणों में एक कम्पन सी भर रहे थे।

सहसा हुसैन कुली खां ने ड्योढ़ी पर दस्तक दी। तत्क्षण एक तातारी बांदी ने ड्योढ़ी के भीतर जाने से उसे रोक दिया। हुसैन कुली खां क्रोध में आग बबूला हो गया। उसने कड़कते स्वर में कहा—"तातारी, तेरी यह जुर्रत। तू मुझे ड्योढ़ी के भीतर जाने को रोकती है।" और इतना कहते-कहते क्रोध के आवेश में हुसैन कुली खाँ ड्योढ़ी के भीतर चला गया। सिपहसालार उजवेग हुसैन कुली खां का शाही हरम के कक्ष में इस तरह प्रवेश करना मुगल दस्तूर और अदब के खिलाफ था।

तानसेन का संगीत रुक गया। झंकृत तानपूरा निस्पंद हो गया। शाहजादी को हुसैन कुली खां का एकाएक आना अच्छा नहीं लगा। उसने हृदय के भावों को मुख मण्डल पर व्यक्त नहीं होने दिया। वह बड़े धीमे स्वर में बोली उजवेग सरदार—"तुम शाही दस्तूर और अदब भी भूल गए।"

"वेअदबी मुआफ हो शाहजादी, उजवेग आपको आदाब बजाता हैं।

"उजवेग, हम तुम्हारे आने का मकसद जान सकते हैं।"

"बेशक शाहजादी, जहांपनाह ने मुझसे एक वायदा किया हैं।"

"हम जहांपनाह के वादे को जानना चाहते हैं।"

"मुगल सल्तनत के इस उजवेग सिपहसालार को शाहजादी से निकाह करने का हक मिला है।"

"यह गैर मुमकिन है। हुजूर ने वगैर मेरी मर्जी के यह निकाह तय किया है। हम आलमपनाह से अर्ज करेंगे।"

"ऐसा क्यों शाहजादी क्या आपको मुझसे नफरत है।"

"उजवेग सिपहसालार, हकीकत यह है कि मैं तानसेन से मुहब्बत करती हूँ। मेरा निकाह या तो तानसेन से होगा या मैं किले की बुर्ज से जमुना में कूदकर खुदकशी कर लूंगी।"

तानसेन का नाम सुनते ही उजबेग हुसैन कुली खाँ का क्रोध मुख से ज्वालामुखी बन फूट पड़ा। उसने गरजते हुए कहा—"मैं उस काफिर गवैया को कत्ल कर दूंगा।"

सहसा शाहजादी मेहरुन्निसा समुद्र में उठे तूफान की तरह गरज उठी। उसने कहा—"उजवेग, तुम एक अदना सिपहसालार हो। मुगल शाहजादी की खुशियों को बरबाद करने की तुम्हारी यह जुर्रत। यह हिमाकत। हम चाहते हैंकि तुम हमारी निगाहों से जल्द सेजल्द दूर होजाओ।"

"शाहजादी हुजूर आप मेरी अर्ज तो सुनिये।"

"क्या अर्ज है ?"

"हुजूर, तानसेन हिन्दू है। एक काफिर से मुगल शाहजादी का निकाह कैसे हो सकता है ?"

"उजबेग, तुम्हारी आंखों में मजहब का पर्दा पड़ा है। मुहब्बत करने वाले न हिन्दू होते हैं और न मुसलमान। उनका कोई मजहब नहीं होता। वे तो इन्सान की रूह में एक नेक फरिश्ते होते हैं। जो जमीं पर आते हैं और अपनी दास्तां छोड़कर चले जाते हैं। मैं तानसेन से मुहब्बत करती हूं। उसके लिए मुझे बड़ी से बड़ी कुरवानी भी क्यों न देना पड़े। मैं इसके लिए हरदम तैयार हूं।"

"मगर शाहजादी.........।"

"बस खामोश, हम तानसेन के बारे में एक लब्ज भी सुनने को तैयार नहीं। तुम जा सकते हो"

उजवेग हुसैन कुली खां तेजी से चला गया। मेहरुन्निसा आंखों में

क्रोध और घृणा का भाव लिए उसे देखती रही। कुछ देर बाद तानपूरे को उठाते हुए तानसेन ने कहा "शाहजादी साहिबा
दीजिए। इस समय आपकी तबियत नासाज है। उजबेग सिपहसालार ने आपके दिल को परेशानी और उलझन में डाल दिया है।"

शाहजादी खामोश रही। यादों के क्षितिज में वह इस प्रकार डूब गई जैसे संध्या के समय सूरज छुप जाता है।

१८

जश्ने पैदायश

सीकरी से लौटकर बादशाह अकबर ने खुशी का एक समाचार दुर्ग में सुनाया। सीकरी में शेख सलीम चिश्ती के खानकाह में कछवाहा रानी जोधाबाई के गर्भ से एक शाहजादा पैदा हुआ था। बादशाह सलामत की दिली मुराद आज पूरी हुई थी। हरम में कितनी बेगमें थीं लेकिन किसी के भी सन्तान नहीं थी। जीवन की यही एक चिन्ता थी जिससे बादशाह अकबर दिन रात उदास, उद्विग्न और अधीर रहता था। पुत्र प्रप्ति की एक प्रबल आकांक्षा हृदय में लिए वह कहां-कहां भटका।

शहंशाह अकबर कभी पीरों-फकीरों की कब्रों पर मुराद पाने के लिए नंगे पांव दौड़ता। कभी दिल्ली के निजामुद्दीन औलिया की कब्र पर जियारत करता और कभी ख्वाजा अजमेरी की मजार पर घण्टों मौन खड़े होकर अश्रुपूरित आंखों में एक अभिलाषा, आकांक्षा और एक जिज्ञासा लिए सिजदा करता। तो कभी आगरा से तेईस मील दूर जाकर घने वन से आच्छादित पहाड़ी पर चढ़कर शेख सलीम चिश्ती के चरणों में माथा रगड़ता। आज बहुत दिनों बाद बादशाह सलामत के मन की साध पूरी हुई थी। आगरा लौटकर बादशाह अकबर ने हुक्म दिया सीकरी को एक नई नवेली दुलहिन की तरह सजाया जाये। अन्धकार में डूबा सीकरी के नसीब का सितारा सहसा चमक गया। चारों ओर

लाल पत्थरों की दीवारें उठने लगीं। पहाड़ी का घना जंगल काटा गया। पहाड़ी पर ऊची ऊची हवादार महरावें उठीं। गगन चुम्बित मीनारें और भव्य अट्टालिकायें बनने लगीं।

लगभग सवा महीने के बाद कछवाहरानी जोधाबाई अपने नवजात शाहजादे को लेकर सीकरी से आगरा लौट आई। बादशाह अकबर अपनी लाड़ली बेगम को देखकर बेहद खुश हुआ। बेगम की गोद में नवजात शाहजादे को कुलबुलाता हुआ देख शहंशाह का मन आनन्द, हर्ष और उल्लास में डूब गया। हृदय में पुत्र के लिए अपार प्रेम सागर के ज्वार की तरह उमड़ आया। आंखों में भावनाओं का उन्माद इतना उमड़ा कि शाहंशाह ने पुलककर बेगम की गोद से शहजादे को अपने हाथों में ले लिया। शाहजादे को हाथों में लेते समय शहंशाह को लगा जैसे उन्हें जिन्दगी का एक बेशकीमती खजाना मिल गया हो। वे सोचने लगे संतान के बिना सल्तनत का सुख, ऐश्वर्य और विपुल सम्पत्ति सब व्यर्थ है। अल्लाह का दिया हुआ आज उसके पास सब कुछ है, सन्तान है, सल्तनत और शक्ति है। न जाने जीवन की किस भावना से प्रेरित होकर बादशाह अकबर ने अपने दोनों हाथों से शाहजादे को आकाश की उस मूक सत्ता की ओर उठाते हुए कहा—"परवरदेगार आलम, यह शाहजादा तेरी दी हुई अमानत है, मैं क्या कहूँ ? मात्र एक हाड़-मास का पुतला हूं। तू सब बादशाहों का बादशाह है। तू ही इसकी रक्षा करना।" जब वह आगे सोच ही रहे थे कि गोद में लौटन कबूतर की तरह कुलाटें भरते शाहजादे ने किलक कर उनकी विचार श्रृंखला तोड़ दी। बादशाह सलामत ने शाहजादे को हृदय से लगा लिया और प्रमुदित होकर वात्सल्य भाव से शहजादे के गुलाब से महकते मुखड़े को दो-तीन बार चूम लिया। और फिर शाहजादे को एक तातारी कनीज को सुपुर्द करते हुये बेगम जोधाबाई से कहा—"बेगम साहिबा, देखिये शाहजादे का चेहरा बिलकुल चौदहवीं के चांद की मानिन्द लगता है। हम तुमसे बेहद

खुश हैं। तुमने अपनी कोख से खानदान ए-मुगलिया को एक नया लख्ते जिगर और तख्तोताज का वारिस दिया है। हम तुम्हें शाह बेगम का ओहदा इनायत करते हैं।"

दुर्ग में शाहजादे के आगमन पर खुशी की शहनाइयाँ बजीं। दुंदभी और नगाड़े बजे। शाही हरम की बेगमों और शाहजादियों ने बधाये गाये। शहंशाह की बूढ़ी माँ मरियम मकानी ने अपने महलसरा में शाह-जादे का जश्ने पैदायश बड़ी धूमधाम से मनाया। हरम की बेगमें उसमें शरीक हुईं। बादशाह सलामत को भी बुलावा दिया गया। शहंशाह अकबर की तरफ से हरमसरा की बेगमें, कनीजे, बाँदियाँ और ख्वाजासरा आदि सभी को नये-नये कीमती वस्त्र, स्वर्ण आभूषण, रत्नजटित हार और इनाम-इकरान बाँटे गये। इस तरह दुर्ग में रोज शाहजादे के जन्म की खुशियाँ मनाई जातीं। रोज दरबार होते। दावतें होतीं। गरीबों को खैरात बटती। नाच गाने की रंगीन महफिलें जमतीं, रोशनी और आतिशबाजी का निराला ठाट जमता। आगरा शहर ने भी अपने हरदिल अजीज शाहजादे का जन्म महोत्सव बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाया।

एक दिन दुर्ग में बड़े पैमाने पर शाहजादे का जश्ने-पैदायश मनाया गया। दुर्ग के मुख्य द्वार को तोरणों और बन्दनवारों से सजाया गया। दूर-दूर के अमीर उमराव, सिपहसालार, राजा और सामन्त एकत्रित हुए। दीवान-ए-खास के प्रांगण में एक बड़ा सा शामियाना ताना, गया। रात्रि का समय था। असंख्या दीपों, मशालों और रंग बिरंगे बड़े-बड़े झाड़ फानूसों से दीवान-ए खाश आलोकित था। फर्श पर कीमती ईरान और काश्मीर के कालीन बिछाए गए। दीवान-ए-खाश की छतें, दीवारें और खम्भे रंगीन रेशमी पर्दों से सुशोभित किए गए। नौबत खाने में शहनाइयाँ और नगाड़े की ध्वनि गूंज रही थी। सारा दुर्ग उमंग और उल्लास में डूबा हुआ था।

दीवान-ए-खास के एक ओर एक रंगीन चिलमन के पीछे हरम की

बेगमें बैठी हुई थी । बेगमों के बीच एक पालने में शाहजादा झूल रहा था । कनीजें, और बांदियाँ शाहज़ादे की खिदमत में लगीं थी । दीवान-ए-खास में बादशाह सलामत के आने में अभी कुछ देर थी । कनीज रेशमा का दिल रह रहकर धड़क रहा था । अभी तक शाहज़ादी मेहरुन्निसा तशरीफ नहीं लाई थीं । वह दौड़ी हुई शाहज़ादी की डयोढ़ी पर पहुंची । और अदब से बोली—"हुजूर, जल्द तशरीफ ले चलिए । महफिल शुरू होने वाली है ।

"रेशमा, बादशाह सलामत तशरीफ ले आये ।"

"शाहजादी साहिबा, बादशाह सलामत पहुंचने वाले ही हैं । नगाड़े पर धोंसा पड़ चुका है । मगर बड़ी बेगम और शाहजादा दोनों दीवान-ए-ख़ाश की महफिल में रौनक फरमा रहे हैं ।"

"ओ, हो, रेशमा, हमें कुछ भी मालूम नहीं ।" और इतना कहते-कहते शाहजादी मेहरुन्निसा ने मोतियों की रग बिरंगी लड़ियों से अपना गला अलंकृत कर लिया । फिर कदे-आदम आईने में मुखड़ा निहार बिखरी जुल्फों को संवारा । जल्दी-जल्दी नई पोशाक पहनी । लाल रेशमी सलवार, सलमें सितारों वाला सफेद कुरता, और जरी के काम का हरा दुपट्टा । शाहजादी मेहरुन्निसा दौड़कर दीवान-ए-खास की ऊपरी मंजिल में पहुँची । दादी मरियम मकानी और बड़ी बेगम को पहले आदाब बजाया और फिर पालने झूलते नन्हें से शाहजादे की बलायें लीं और फिर गले से मोतियों की लड़ियां उतार शाहजादे पर न्योछावर कर दीं ।

सहसा नगाड़े पर दूसरा धोंसा पड़ा । नगाड़े की आवाज दूर तक गूंजती चली गयी । फिर नकीब की आवाज बुलन्द हुई । सभी अमीर उमराव, राजा और सामन्तों ने खड़े होकर बादशाह को कोर्निस किए । शहशाह अकबर एक जड़ाऊ तख्त पर आकर बैठे । शहंशाह ने एक निगाह भरकर दीवान-ए-खास को देखा । फिर शहंशाह की दृष्टि चिलमन के पीछे बैठी बड़ी बेगम जोधाबाई पर पड़ी । बेगम लजा गई ।

नारी सुलभ लज्जा उसके कपोलों पर थिरक गई। बादशाह के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ आई। बेगम से दृष्टि हटाकर बादशाह ने एक-सम्मोहन भरी दृष्टि से मखमली पर्दे के पास पालने में झूलते शाहजादे को देखा। बादशाह का रोम-रोम खिल गया। कुछ क्षण के लिए वे जीवन के एक अनिर्वचनीय आनन्द में डूब गये। तातारी बांदियाँ बादशाह की निगाह से दूर हट गईं। बादशाह सलामत आँखों में असीम अनुराग, दुलार और स्नेह लिए अपने लाड़ले शाहजादे को मौन अपलक दृष्टि से निहारते रहे। नन्हा सा शाहजादा पालने में एक परिन्दे की तरह पैंगे भरता रहा। सहसा शाहजादा कुल बुलाया। बादशाह सलामत ने सोचा जैसे उनकी नजर लग गई हो। उन्होंने अपनी दृष्टि हटाली। तातारी बांदियों ने रेशम की डोरी खींची। पालना हिलने लगा। किसी बाँदी ने पंखा झला, किसी ने शाहजादे को दुलराया। किसी ने मंद-मंद स्वर में लोरी गाई।

शाहजादे के जश्ने पैदायश की मौलवियों और पंडितों ने रस्में अदा की। फिर बादशाह अकबर ने अमीरों, और सिपहसालारों को ओहदे दिए। तरकियाँ दीं और दान इनाम-इकराम बाँटे। फिर नृत्य और संगीत का समा बंधा। सारंगी, सरोद, तबला और तानपूरा झंकृत हो उठे। ईरान और तातारी नृत्य परियों हूरियों का महफिल में नूर सा बरस पड़ा। महफिल में यौवन की मदमाती, इठलाती और बलखाती बिजली की भांति द्रुतगति से थिरकती उन अपूर्व रूपवती नृत्य परियों पर अमीर उमरावों का मन मोहित हो आता। महफिल में जाम के दौर चल रहे थे। नृत्य परियां हर क्षण में अंगूरी शराब के जाम भर भरकर अमीरों को दे रही थी। कुछ देर बाद नृत्य समाप्त हुआ। बादशाह सलामत ने उन नृत्य परियों को दान और खिलअत बांटी। नृत्य परियां बादशाह को कोर्निश कर दीवान-ए-खास के बाहर चली गईं।

तानसेन ने झुककर बादशाह को सलाम किया और फिर तानपूरे

के तार दीवान-ए-खास में निनादित हो उठे। तानसेन ने राग कान्हड़ा दरबारी अलापा। तानसेन के एक एक स्वर वेगवती सरिता की धार की तरह मुख से उमड़ते चले आ रहे थे। समस्त महफिल मुग्ध और चकित थी। स्वरों के मधुर आरोह अवरोह पर एक एक अमीर उमराव हवा के आवेग में कांपते वृक्ष की तरह झूम जाते थे। सहसा कान्हड़ा दरबारी का एक मधुर आलाप फूटा। दीवान-ए-खास की दीवारों पर बहुत देर तक प्रतिध्वनि गूंजती रही। राग का आर्कषण और सम्मोहन ऐसा था कि सब लोग चकित से मौन हत्प्रभ हो गए। तानसेन के मधुर आलाप पर शाहजादी मेहरुन्निसा का गौर मुखड़ा चिलमन के बाहर चांद सा झांक पड़ा। शाहजादी को अपने तन की सुधबुध विसुरा चुकी थी। आलाप के खुमार में डूबी वह एकटक तानसेन को निहारती रही। कनीज रेशमा के एकाएक टोकने पर शाहजादी ने अपना मुख चिलमन की ओट में किया। लेकिन उसका हृदय भावनाओं के उन्माद में ऐसा डूब गया था जैसे बाढ़ के पानी में नदी के दोनों किनारे डूब जाते हैं।

राग कान्हड़ा दरबारी समाप्त हुआ। सभी अमीर उमराव वाह-वाह की ध्वनि कर उठे। तानसेन ने उठकर पुनः मुजरा झुकाया। बादशाह अकबर ने तानसेन के संगीत की तारीफ करते हुए कहा—"फनकार तानसेन, हम तुम्हारे दिलकश संगीत को सुनकर आज बेहद खुश हैं। तुम जैसा मौसिकार इस रूये जमीन पर मिलना मुश्किल है। तुम हमारे दरबार के एक बेसब्हा और कीमती रत्न हो। दुनियां के अजीम मौसिकार हो। मा बादौलत तुम्हारी इज्जत अफजायी करते हैं। शाहजादे के जन्म की खुशी में हम तुम्हें एक लाख स्वर्ण मोहरें इनायत करते हैं।

चांदी के थाल में एक लाख स्वर्ण मुद्राएं लेकर एक तातारी खादिम आगे बढ़ा। तानसेन बादशाह के द्वारा दो गई खिलअत को कबूलकर पुन: दरबारी कलावन्तों के बीच आकर खड़ा होगया।

कुछ देर बाद शंहशाह अकबर की निगाह उजबेग हुसैन कुली खां

पर पड़ी जो दीवान-ए-खास में अन्य मुगल सिपहसालारों के बीच में कमर में तलवार लटकाये खड़ा था। शंहशाह की निगाह पड़ते ही हुसैन कुली खां ने आगे बढ़कर बड़े अदब से कोर्निस की।

बादशाह अकबर ने सिपहसालार हुसैन कुली खां की हौंसला अफ-जाई करते हुए कहा—"उजवेग सरदार, हम तुम्हारी हिम्मत, दिलेरी और बहादुरी पर बेहद खुश हैं। चितौड़ की जंग में रण बांकुरे मेवाड़ी राजपूतों पर फतह हासिल करने में तुमने जो बहादुरी दिखलाई है उसे हम हमेशा याद रखेंगे। तुम्हारी बहादुरी और हिम्मत की कद्र करते हुए हम तुमसे रिश्ता जोड़ना चाहते हैं।"

"जहांपनाह, जानकी अमा पाऊं तो एक अर्ज करू"

"उजबेग सरदार, तुम वेखौफ होकर दिल की वात कह सकते हो।"

"आलीजहां, मैं शाहजादी मेहरुन्निसा से निकाह करने को बिलकुल तैयार नहीं।"

"उजबेग हुसैन कुली खां, ऐसा क्यों? क्या हमारा खानदान कोई मामूली खानदान है। क्या मुगलों के जिस्म का खून तब्दील हो गया है? हम जानते हैं, तुम जो कहना चाहते हो। तुम कहना चाहते हो कि मुगल खानदान में जिस शाहजादे ने जन्म लिया है उसके जिस्म में एक हिन्दू राजकुमारी का खून है।" बादशाह के स्वरों में एक कडक थी और एक आक्रोश था।

"हुजूर, मुगल खानदान बड़ा नेक और पाक है। मुझे मुगलिया खानदान से कोई गिला या शिकवा नहीं है।"

"फिर तुम्हें किससे शिकायत है?"

"जहांपनाह, गुस्ताखी मुआफ हो। शाहजादी की आशनाई तानसेन से है। मेहरुन्निसा तानसेन को दिलो-जान से चाहती है। उन्हें मेरा रिश्ता कबूल नहीं है। अगर शाहजादी से मेरा निकाह जबरन हो भी

गया तो शायद मुझे उनका गोरा खूबसूरत जिस्मही मिलेगा, दिल नहीं। शाहजादी मेहरुन्निसा मेरे लिये आइने में जड़ी एक बेजुबान तस्वीर की तरह होंगी जिससे मैं जिन्दगी भर कभी मुहब्बत की दो बात भी न कर सकूंगा। हुजूर आप ही फरमाइये, मैं ऐसी बेजुबान और बिना दिल के जिस्म की शाहजादी से निकाह करके क्या करुंगा ? अच्छा हो यदि आप शाहजादी का निकाह तानसेन से कर दें।"

सिपहसालार हुसैन कुली खां की बात को सुनकर बादशाह अकबर का मन जीवन के गहन विचारों में डूब गया। वे कभी सामने खड़े सिपहसालार उजवेग हुसैन कुली खां की ओर देखते तो कभी कलावन्तों की कतार में खड़े तानसेन को निहारते। चिलमन में बैठी शाहजादी मेहरुन्निसा बादशाह सलामत के विचारों से अवगत होने के लिए उत्सुक थीं। वह कभी झरोखे पर पड़े चिलमन को हटाकर अपने उत्सुक नेत्रों से बाहर झांकती तो कभी अपना मुंह चिलमन में छुपा लेती।

बादशाह अकबर की मनोदशा ठीक वैसे ही थी जैसे कोई व्यक्ति सरिता की वेगवती धारा के बहाव में आकर बहता ही चला जाता है। शहंशाह के मस्तिष्क में एक के बाद एक विचार सावन भादों की घटाओं की तरह उठते चले आ रहे थे। वे बार-बार सोचते किन्तु किसी एक निर्णय पर स्थिर नहीं हो पाते थे। उनकी आंखों में फनकार तानसेन और सिपहसालार हुसैन कुली खाँ का रूप उभर आता था। शहंशाह किसको प्राथमिकता दे। एकाएक उनका मन नारी जीवन की विवेचना कर उठा। नारी का हृदय एक बार जिसके प्रति आकर्षित और आसक्त हो जाता है, फिर वह अपने जीवन का अपरमित कोष, कौमार्य, और सौन्दर्य सब कुछ उस पुरुष के चरणों में समर्पित कर देती है। शाहजादी मेहरुन्निसा ने तानसेन को दिल दे डाला है। हम अगर जबरन उजबेग हुसैन कुली खां के साथ उसका निकाह कर दें तो दोनों का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रह सकता। अन्त में सोचते सोचते बादशाह अकबर ने नारी

जीवन की उस कठिन और उलझी हुई पहेली को सुलझा लिया। उन्होंने बड़े धीरे से कहा—"हुसैन कुली खां, हम शाहजादी मेहरुन्निसा के मुहब्बत भरे दिल को दुखाना नहीं चाहते। हम शाहजादी की हर ख्वाहिश को पूरा करेंगे। मा बदौलत तानसेन के साथ शाहजादी मेहरु-न्निसा के निकाह की इजाजत देते हैं।"

झरोखे में चिलमन के पीछे बैठी शाहजादी एकाएक बादशाह का हुक्म सुन प्रसन्न हो गई। उसे स्वप्न में भी यह विश्वास नहीं था कि शहंशाह अकबर तानसेन के साथ उसके निकाह की इतनीं जल्दी इजाजत दे देंगे। मेहरुन्निसा को अब तक अपना जीवन निराश और नीरस लग रहा था वह तानसेन को पाकर सरस हो गया। उसे लगा जैसे जीवन का किनारा मिल गया हो। उसका रोम रोम तानपूरे की तरह झंकृत हो उठा। उसे लगा जैसे उसका रोम रोम प्रफुल्लित होकर कोयल की तरह कुहुक रहा हो और वह झूम झूम कर नाच रही हो। दीवान-ए-खाश कब का ख़त्म हो चुका था। इसका अभी तक उसे कुछ भी पता नहीं था। शाहजादी मेहरुन्निसा हर्ष और उल्लास के सागर में डूबी हुई थी।

रेशमा बांदी ने मुजरा झुकाते हुए कहा—"हुजूर, दरबार खत्म हो चुका है चलिए।"

१६

कुँअर मानसिंह का अपमान

शोलापुर का युद्ध जीतकर कुंवर मानसिंह ने मुगल सेना का मुख मेवाड़ की पश्चिमी सीमा ओर मोड़ दिया। एकाएक महाराणा प्रताप से मिलने की अभिलाषा कुंवर मानसिंह के मन में उत्पन्न हुई। उदयपुर नगर के उत्तर में चालीस मील दूर कोमलमेर स्थित था। चारों ओर सघन वन। अरावली पर्वत की भयावह कंदरायें और उपत्यकायें। रण-भूमि में दुश्मन के सम्मुख खड़े स्वाभिमानी सिसौदिया सैनिकों की तरह शीश ताने पर्वतों के गगन चुम्बित शिखर। कोमलमेर के आसपास सुरम्य जल-प्रपात। मनोरम स्वच्छ लहराती नीली झीलें। दूर एक पहाड़ी पर छोटा सा दुर्ग जिसके ऊपर सिसौदिया राजपूतों का सूर्यमुखी केशरिया ध्वज फहरा रहा था।

दो पर्वत शृंखलाओं के बीच तरु, लता और गुल्मों से आच्छादित एक सकीर्ण पगडण्डी पर एक मुगल आश्वारोही बड़ी तेजी से कोमलमेर दुर्ग की ओर दौड़ा चला जा रहा था। कुछ देर बाद वह कोमलमेर दुर्ग के मुख्य द्वार पर आकर रुका। अश्वारोही मुगल सेनापति कुंवर मानसिंह का एक संदेश वाहक था। महाराणा की अनुमति से मुगल दूत ने दरबार में प्रवेश किया। महाराणा प्रताप को मुगल दूत ने मुजरा झुकाते हुए कहा—"महारणा की जय, शहंशाह जलालुद्दीन अकबर के

सिपहसालार कुंवर मानसिंह अहमद नगर और शोलापुर के युद्ध जीत-कर दिल्ली लौट रहे हैं । उनकी ख्वाहिश है कि दो दिन आपके यहां मुकाम करें ।"

महाराणा प्रताप का मुख मुस्कान से भर गया । पल भर विचारों में मग्न होकर मौन मुस्कराते रहे । फिर कहा—"मेवाड़ की भूमि बड़ी उदार और विशाल है । आमेर के राजकुमार मानसिंह मेवाड़ के मह-मान बनकर आये हैं तो हम उनका हृदय से स्वागत करेंगे । और यदि वे युद्ध की आकांक्षा लेकर आये हैं तो मुगलों की उस विशाल वाहिनी और तोपखाने की शक्ति का सुदृढ़ प्रतिरोध हम रण-भूमि में करने को भी तैयार हैं ।"

दूत ने पुन: आदाब बजाया और कहा—"नहीं महाराज ! मुगल सेनापति मानसिंह आपसे मुलाकात के लिए तशरीफ ला रहे हैं । युद्ध के लिये नहीं ।"

"मुगलदूत, मेवाड़ का राजवंश, आमेर के राजकुमार का यथोचित्त सम्मान करेगा । मार्ग में हमारे सैनिक कोई प्रतिरोध नहीं करेंगे । मुगल वाहिनी निसंकोच मेवाड़ भूमि की सीमा में प्रवेश कर सकती है ।"

सहसा सादुड़ी के सामन्त मन्ना झाला ने प्रताप को टोकते हुए कहा—" महाराज, शत्रु पक्ष के सेनापति का स्वागत करना रण नीति के विपरीत है । सूर्य का स्वभाव ताप देना, सर्प का गुण विष उगलना और शत्रु का गुण आघात करना होता है । कुंवर मानसिंह के एकाएक रहस्यपूर्ण ढग से मेवाड़ की भूमि पर विशाल सेना के साथ प्रवेश करना मुझे अशुभ, आशका और अमंगल लिए हुए लगता है ।"

"झाला, वीर बाप्पा रावल के पुत्र शत्रु और सर्प को अच्छी तरह कुचलना जानते हैं । हम तुर्क अकबर के सेनापति का स्वागत नहीं कर रहे । हम आमेर के राजकुमार मानसिंह को भोजन पर आमंत्रित कर रहे है ।"

मुगल दूत चला गया। मेवाड़ के सामन्त कुंअर मानसिंह के सम्मान में जुट गये। अरावली पर्वतों की छाया में जगह जगह विशाल भव्य तम्बू, डेरे, छोलदारियां और शामियाने ताने गए। एक मनोरम पहाड़ी झील के किनारे मानसिंह के लिये बांसों का नया आवास-गृह निर्मित किया गया। दूसरे दिन मुगलों की विशाल सेना मानसिंह के नेतृत्व में कोमलमेर पहुंची। मेवाड़ के राजकुमार अमरसिंह ने मानसिंह की अगवानी की। दोनों प्रफुल्लित होकर गले मिले।

रात्रि के समय राजमहल में कुंवर मानसिंह के सम्मान में एक राजकीय भोज का आयोजन किया। मेवाड़ राज्य के सभी सरदार और सामन्त भोज में सम्मिलित हुए। महाराणा प्रताप का पुत्र अमरसिंह और कुंवर मानसिंह दोनों भोजन की थाली पर बैठे। लेकिन महाराणा प्रताप उस भोज में सम्मिलित नहीं हुए। कुंअर मानसिंह का माथा ठनका। उसने कहा—"अमरसिंह, अभी तक महाराणा जी नहीं पधारे।"

आप भोजन करिये। "आज महाराज भोजन नहीं करेंगे। उनके पेट में दर्द है।" अमरसिंह ने कहा।

"नहीं अमरसिंह, मैं बिना महाराणा जी के भोजन नहीं करूंगा।"

कुंवर मानसिंह की आंखों में क्रोध की अग्नि भड़क उठी। वह कक्ष से बाहर निकल आया। अमरसिंह ने रोकना चाहा। लेकिन मानसिंह का घोर अपमान हुआ था। मानसिंह ने पुनः गरजते हुए कहा—"अमरसिंह, मैं महाराणा जी के पेट का दर्द अच्छी तरह समझता हूं। आमेर का रक्त विदेशी वैवाहिक सम्पर्क स्थापित कर दूषित हो गया है। सिसौदिया रक्त राजस्थान के रजवाड़ों में पवित्र है। कुल की मान-मर्यादा और जाति-गौरव के कारण ही महाराणा जी भोज में सम्मिलित नहीं हुए।"

तत्क्षण सादड़ी के सामन्त मन्ना झाला ने कहा "कुंवर मानसिंह जी, महाराणा आपके साथ भोजन करने में असमर्थ हैं। जिस राज परिवार

ने तुर्कों के साथ अपने वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लिए हों वह हमारी दृष्टि में पतित है।"

मेवाड़ी सामन्त मन्ना झाला के मुख से दर्प के वचन सुन कुंवर मानसिंह का हृदय सागर की उत्ताल तरंगों की तरह तूफानी बन गया। उसने कड़कते हुए स्वर में कहा—"झाला, जी मैं महाराणा प्रताप के पेट की दवा लेकर शीघ्र लौटूंगा। युद्ध में राणा के दर्प को नष्ट करने की शक्ति मानसिंह की तलवार में है। "उज्जवल रक्त की पहचान अब युद्ध के मैदान में होगी भोजन की थाली पर नहीं।"

सहसा महाराणा प्रताप राजमहल के एक उत्तरी प्रकोष्ठ से बाहर आये। उन्होंने मानसिंह के द्वारा दी गई युद्ध की चुनौती को स्वीकार करते हुए कहा—"कुंवर मानसिंह, तुम युद्ध में अपने साथ तुर्क अकबर को भी लाना। सिसौदिया राजपूतों की तलवारें कब से मुगलों का लहू पीने को ललक रही हैं।"

कुंअर मानसिंह राजमहल से बाहर चला गया। सुबह होते-होते हाथियों की घोर चिंघाड़ों और घोड़ों की कर्कश हिनहिनाहटों के साथ मुगल सेना ने अजमेर की ओर कूच कर दिया।

⁂ ⁂ ⁂

२०

अजमेर में युद्ध का उन्माद

मानसिंह उदयपुर से अपमानित, असफल और क्रुद्ध होकर अजमेर लौटा। उस समय दरबार अजमेर में था। बादशाह अकबर ख्वाजा की मजार पर इबादत के लिये आया था। राणा ने मानसिंह का मैत्री पूर्ण स्वागत तो किया पर उसके साथ भोजन नहीं किया। आमेर के कछवाह राजवंश ने मुगलों से रोटी और बेटी का सम्बन्ध जोड़ लिया था। मेवाड़ के स्वतन्त्रत प्रेमी सिसौदिया राजपूत सदियों तक अपने जातीय गौरव की रक्षा के लिए दिल्ली के दख्त से लोहा लेते रहे। वंश की मर्यादा, मेवाड़ की स्वतन्त्रता और अपने पूर्वजों की पवित्रता को कलंकित न करने के लिए प्रताप ने अकबर की पराधीनता स्वीकार नहीं की। उसने बादशाह के द्वारा भेजे गये सुलह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

राजा भगवानदास अहमदाबाद की विजय के बाद आमेर में विश्राम कर रहा था। जब उसने अपने पुत्र मानसिंह के अपमान का समाचार सुना तो वह आग बबूला हो गया। वह कछवाह राजपूतों की एक विशाल सेना लेकर बादशाह अकबर से मिलने अजमेर आया। युद्ध की योजना बनाने के लिए शहंशाह अकबर ने सल्तनत के खाश-खाश सूबेदार, मन्सबदार, और सिपहसालारों को खत भेजकर अजमेर में बुला लिया। बंगाल से मुनीम खाँ, मालवा से सिहाबुद्दीनखां, गुजरात से

जलाल खाँ कुरची, जौनपुर से सैयद अहमद और गाजीखां, फतहपुर सीकरी से मसरिफे टोडरमल । मीर बख्शी आसफखां, बजीर मुजफ्फर खां और तानसेन बादशाह अकबर के साथ पहले ही मौजूद थे। अजमेर युद्ध के उन्माद में डूब गया। अजमेर के चारों ओर फौजी तम्बू, डेरे और शामियाने तन गये।

अजमेर के नव-निर्मित शाही महल में छोटा सा दरबार लगा। दरबार में खाश-खाश मन्सबदार, अमीर और सिपहसालार ही थे। और कोई वहां नहीं था। दरबार में तानसेन ने तान पूरा झंकृत किया। लेकिन बादशाह ने संगीत सुनने की इच्छा जाहिर नहीं की। तानपूरे के झंकृत तार कुछ क्षण गूंजकर मौन हो गये। शहंशाह अकबर सल्तनत के हालात जानने को उत्सुक थे। उन्होंने सिपहसालार मुनीमखां की ओर देखा। मुनीमखां ने बादशाह को बन्दगी की और बंगाल की फतह का समाचार बादशाह को सुनाया। शाहबाजखां ने जोधपुर के चन्द्रसेन राठौर के विद्रोह को कुचलने का व्यौरा प्रस्तुत किया। मशरिफे दीवान टोडरमल ने गुजरात की मालगुजारी के आंकड़े सम्राट के सामने पेश किये। फिर राजा भगवानदास ने शहंजाह अकबर को मुजरा झुकाते हुये कहा—"जहाँपनाह, प्रताप ने संधि का प्रस्ताव ठुकरा दिया है। और हुजूर, कुंअर मानसिंह के साथ प्रताप ने जो गैर-इन्सानी सुलूक किया है, उससे अजमेर का समूचा राजवंश तिलमिला उठा है। प्रताप ने कुंवर मानसिंह के साथ भोजन नहीं किया। उदयपुर के भरे दरबार में प्रताप ने कुंवर मानसिंह को नीच, अपवित्र और कलंकित कहा। आलमपनाह राणा ने कछवाह राजपूतों और मुगलों को युद्ध की चुनौती दी है। हुजूर आमेर का राज घराना राजपूत राजाओं में बदनाम हो गया है। कोई भी राजपूत राजा हमें अच्छी निगाह से नहीं देखता। अपमान की आग में झुलसता आमेर अपनी बेइज्जती का मेवाड़ से बदला लेना चाहता है"

एकाएक शहंशाह अकबर का क्रोध ज्वालामुखी बन मुख से फूट पड़ा।

बादशाह ने गरजते हुए कहा—"कुंअर मानसिंह की तौहीनी, मुगल शाहजादे सलीम की तौहीनी है। मुगल सिपहसालार की बेइज्जती तख्तोताज की बेइज्जती है। आमेर का राजपूत घराना तख्ते मुगलिया का पहला खैरख्वाह और नजदीकी रिश्तेदार है। हम जिन्दगी के बड़े से बड़े हादसा को भूल सकते हैं, लेकिन इस तौहीनी के दाग को खुदा की कसम कयामत तक नहीं भूल सकते।" और इतना कहते–कहते बाद–शाह सलामत का चेहरा आक्रोश और विक्षोभ से भर गया।

कुछ देर तक दरबार में सन्नाटा रहा। किसी ने बादशाह से दृष्टि नहीं मिलाई। सब नत सर किये जमीन की तरफ देखते रहे। बादशाह ने पुनः गरजते हुए कहा—"अफसोस, हमने चित्तौड़ की जंग में काम-याबी तो हासिल की मगर मेवाड़ी राजपूतों का सर झुकाने में हम ना-कामयाब रहे। प्रताप, शान से चट्टान की तरह सर उठाये आज भी हमारे सामने खड़ा है। वह तलवार की ताकत से तख्ते तैमूरी को हिन्दु-स्तान से हटाने के मन्सूबे गाँठ रहा है।"

"जहाँपनाह, प्रताप स्वेच्छा से अपनी स्वतन्त्र सत्ता का परि-त्याग नहीं करेगा। युद्ध ही उसे डिगाकर अपनी आधीनता स्वीकार कराने में मजबूर कर सकेगा।" आमेर के राजा भगवानदास ने बाद-शाह को बन्दगी करते हुये कहा।

"आलम पनाह, मेवाड़ का राणा आपका जानी दुश्मन है। तख्ते मुगलिया सल्तनत की हिफाजत के लिये हमें मेवाड़ के खिलाफ जल्द से जल्द फौजकशी करना चाहिए। मेवाड़ पर चढ़ाई करने का यही मौका है। इस वक्त सल्तनत के सभी सिपहसालार तख्ते मुगलिया की हिफा-जत और खिदमत के लिये फौज के साथ यहाँ मौजूद हैं। आप कूच का हुक्म अता कीजिये।" मीरबख्शी आसफ खाँ ने कहा।

"मीरबख्शी, हम प्रताप से जंग करना नहीं चाहते थे। लेकिन आज उसने हमें जंग के लिये मजबूर कर दिया है। हमने सिपहसालार

जलाल खां कुरची, मशरिके दीवान टोडरमल और कुंअर मानसिंह के हाथों दोस्ती के पैगाम प्रताप के पास भेजे। मगर गरूरी प्रताप ने हरबार सुलह के पैगाम को ठुकराकर हमारी बे इज्जती की। हमें युद्ध की धमकी दी।" बादशाह अकबर ने लरजती आवाज में कहा।

सहसा नकीव ने कुंअर मानसिंह के आगमन की सूचना एक बुलन्द आवाज में दी। रात्रि के सन्नाटे में नकीब की आवाज आकाश में दूर-दूर तक फैल गई। कुंअर मानसिंह ने दरबार में आकर बादशाह सलामत को आदाब बजाया। बादशाह अकबर ने कुंअर मानसिंह की ओर मुखातिब होकर पुनः कहा—"कुंअर मानसिंह, हम तुम्हारी तौहीनी का बदला गरूरी प्रताप से जरूर लेंगे। मा बदौलत, तुम्हारे जेरे कमान में शाही फौजों का एक काफिला मेवाड़ को कूच करने का हुक्म अता करते हैं। और जंग में तुम्हारी इमदाद के लिये मीरबख्शी आसफ खाँ तौपखाने के साथ मुस्तैद रहेंगे।

मेवाड़ के विरुद्ध शाही फौजों को कूच का हुक्म देकर बादशाह तख्त से उठकर ख्वाबगाह की ओर चले गये। उस समय रात्रि का तीसरा पहर ढल गया था।

⁂ ⁂ ⁂

२१

महाराणा प्रताप

अरावली पर्वत श्रृंणियों के पीछे सूरज डूब गया था। पश्चिम दिशा को धीरे-धीरे साँझ का धुंधलका अरावली पर्वतों की भयावह कन्दराओं, उपत्यकाओं और शिखरों पर फैलने लगा था। वन में सांझ का सन्नाटा गूंजने लगा था। महाराणा प्रताप एक पहाड़ी झील के किनारे खड़े थे। वे सांझ धुंधलके में डूबते अरावली के ऊंचे-ऊंचे श्रृंगों को एक सम्मोहन भरी दृष्टि से निहार रहे थे। उनके सतप्त मन में कल्पना का वितान इतना विस्तृत था मानो भादों की भयावह काली घटाओं का वितान आकाश में तना हो। उनके हृदय में जीवन की कोई एक स्मृति थी, कोई एक वेदना थी, कोई एक कसक थी जो रह-रह कर उनके मस्तिष्क के तन्तुओं को झकझोर रही थी। बार-बार उनकी आंखों में पराधीन चित्तौड़गढ़ की ध्वस्त प्राचीरें उभर आती थीं। चित्तौड़गढ़ के गौरव और गरिमापूर्ण इतिहास का जब उन्हें स्मरण हो आता तो वे अत्यन्त ही व्याकुल, उद्विग्न और चिन्तित हो जाते। उनकी अन्तरात्मा कराह उठती और वे पुन: व्याकुल दृष्टि लिये सांझ के धुंधलके में डूबते अरावली पर्वतों के ऊंचे-ऊंचे शिखरों को देखने लगते।

महाराणा प्रताप को आज रह-रह कर मेवाड़ की विघटित होती हुई शक्ति से बड़ा दुख: हो रहा था। अनुज शक्तिसिंह का अकबर की

शरण में एकाएक चला जाना मेवाड़ के लिये अमगल था। मानसिंह युद्ध की चुनौती देकर गया था। राजस्थान में कोई भी स्वतंत्र राजपूत राजा नहीं था। आमेर, जोधपुर, बीकानेर मुगल बादशाह अकबर की शरण में चले गये थे। सबने रोटी और बेटी का संबध स्थापित कर लिया था। महाराणा बिखरी हुई राजपूत शक्ति को फिर से जोड़ना चाहते थे। लेकिन असमर्थ थे। आक्रान्ता मुगलों से पदाक्रान्त मेवाड़ भूमि की रक्षा के लिये वे बार-बार सोचते। किन्तु कोई भी युक्ति उनके मस्तिष्क में नहीं आ रही थी। सहसा उनके नेत्र आकाश की उस मूक सत्ता की ओर उठ गये। उन्होंने मन ही मन भगवान् एक लिंग को नमन किया और कहा......"हे भगवान् एक लिंग, मेवाड़ की मर्यादा तुम्हारे हाथ में है। मातृभूमि मेवाड़ की माटी को आक्रान्ता मुगलों से मुक्त कराने के लिए हमें शक्ति दो।"

सहसा अधकार में डूबे निर्जन वन में अश्व के टापों की ध्वनि सुनाई पड़ी। महाराणा चौक पड़े। वे इधर-उधर वन के मार्गों को निहारने लगे। ज्यों-ज्यों अश्व के टापों की आवाज निकट आती जाती त्यों-त्यों उनके मन की जिज्ञासा बढ़ती जाती। सहसा एक भील अश्वारोही उनके सम्मुख आकर रुका। भील सैनिक ने अश्व से उतर कर महाराणा प्रताप का अभिवादन किया और कहा—"महाराज, मुगलों की विशाल सेना निरन्तर आंधी की तरह उदयपुर की ओर बढ़ती चली आ रही है। सेनापति मानसिंह और मीर बख्शी आसफ खाँ सेना के साथ हैं।

"और वह अधम देशद्रोही शक्तिसिंह मुगलों के साथ है या नहीं।"

"महाराज' शक्तिसिंह भी मुगल सेना के साथ है।"

"सैनिक, शक्तिसिंह के इस कुकृत्य ने सिसौदिया वंश की मर्यादा को धूल में मिला दिया है। बाप्पा रावल के वंश में आजतक कोई विश्वासघाती, अधम और देशद्रोही पैदा नहीं हुआ। मेवाड़ के राजपूत शत्रु से युद्ध में सदैव जूझते रहे हैं। उनके आगे कभी समर्पण नहीं किया।

अधम शक्तिसिंह आज तूने जयचन्द बनकर सिसौदिया कुल को कलंकित किया है।

भील सैनिक अपनी सुरक्षा चौकी पर वापिस लौट गया। कुछ देर बाद महाराणा प्रताप सीधे राजमहल में चले आए। उन्होंने सामन्तों को मंत्रणा गृह में बुलाया और कहा–"मेवाड़ पर विपत्ति के काले बादल मण्डरा उठे हैं। मुगलों ने एक बार फिर से मेवाड़ी रणबांकुरों को युद्ध के लिए ललकारा है। आज मेवाड़ की मर्यादा-रक्षा के लिए हजारों राजपूत सैनिकों को अपने प्राणों की आहुति देनी होगी।

मंत्रणा-गृह में क्षणिक मौन छा गया। सबके ललाटों में बल पड़ गये। कुछ देर बाद सादड़ी के सामन्त मन्ना झाला ने सभा का मौन भंग करते हुए कहा—"महाराणा, मेवाड़ मातृभूमि की रक्षा करना हमारा धर्म है, कर्त्तव्य है। हमारे जीवित रहते हुए मुगल सेना मेवाड़ के गौरव को कलकित नहीं कर पायेगी। आप चिन्तित न हों। मेवाड़ का एक-एक वीर राजपूत सैनिक अपने प्राणों की आहुति देकर मातृभूमि की रक्षा करेगा।

सहसा एक सीसौदिया सामन्त शंकरदास राठौर ने उत्तेजित होकर मंत्रणा-गृह में अपनी खड्ग खींच ली और बादलों की तरह भीषण अट्टहास करते हुए कहा—'जय भवानी। जय दुर्गे।। जय अम्बे।।। मैं तेरी पिपासा युद्ध में शत्रु का लाल-लाल लहू पिलाकर शांत करुंगा। महाराणा जी, मैं आपको वचन देता हूं, कि मेरे जीते जी मेवाड़ का मान खंडित नहीं होगा।"

"मेरे वीर सेनानियों, हमारे प्राण न्योछावर हो जावें, लेकिन मेवाड़ भूमि का मान खण्डित न होने पावे। वीर पुरुष ही अपने प्राणों का बलिदान देकर मातृभूमि की शत्रु से सदैव रक्षा करते आये हैं।" सहसा एक गुप्तचर ने मंत्रणा गृह में प्रवेश किया। और अभिवादन करते

हुए उसने कहा—" महाराज, मुगल फौज, गोगुन्दा से बीस भील दूर रह गई है। एक विशाल तोपखाने के साथ मुगल सिपहसालार आसफ खाँ मण्डलगढ़ से चल दिया है।"

क्षण भर के लिए वातावरण फिर गंभीर हो गया। कुछ देर बाद उस गंभीर मौन को तोड़ा उनके एक वीर सिसौदिया सामन्त ने। वह बोला—"महाराज, युद्ध राजपूत जीवन की एक परीक्षा है। कसौटी है। आज युद्ध का यह पर्व हमको वड़ी कठिनता से प्राप्त हुआ है। जब तक रक्त की एक बूंद भी हमारे तन में रहेगी हम मेवाड़ की अखण्डता और आजादी पर आंच नहीं आने देंगे।

"मेरे वीर सामन्तो, मुझे आप लोगों से यही आशा थी और यही विश्वास था। आज मेवाड़ की भूमि को शत्रु के पाँव अपमानित कर रहे हैं। हमें दूसरी बार शत्रु ने युद्ध के लिये ललकारा है। युद्ध तो राजपूत जीवन की कसौटी है। हमारा जीवन सदियों से तलवार के खेल खेलता आया है। आओ हम सब एक बार फिर समर भूमि में शत्रु से लोहा लें।

महाराणा प्रताप के आव्हान पर सभी सामन्तों ने एक स्वर से एक लिंग भगवान का जयकार किया और प्रतिज्ञा की कि हम सब एक है और एक होकर मेवाड़ की रक्षा के लिये हंसते-हंसते अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देंगे।

□ □ □

२२

हल्दी घाटी का युद्ध

सूर्य की रक्ताभ किरणें आकाश में फूटीं। अरावली की घाटियों और भयंकर वादियों में रण दुंदभी गूंज उठी। नगाड़े बादलों की तरह गरज उठे। घोड़ों की तीव्र हिनहिनाहटों और हाथियों की कर्कष चिघाड़ों से अरावली पर्वत कांप उठा। मुगलों की सेना के प्रचण्ड वेग का प्रतिरोध करने के लिये रणवांकुरे भीलों के पैने वाण बर्षा की भीषण फुहारों की तरह बरसने लगे। कुछ देर के लिए मुट्ठी भर राजपूतों ने मुगलों की विशाल वाहिनी को घाटी में रोक दिया। सेनापति मानसिंह सहम गया। सिपहसालार आसफ खां को स्वप्न में भी यह विश्वास नहीं था कि राजपूत सैनिक मुगल तोपों के दहानों को भी ठण्डा कर देंगे।

सेनापति मानसिंह ने एक विशाल अश्व वाहिनी को आगे बढ़ाया। अरावली की दो घाटियों के बीच से निकल सिपहसालार आसफ खाँ तोपखाने के साथ एक चौड़े मैदान में आ गया। फिर धीरे-धीरे मुगल सैना ने गौगुदा के दुर्ग की ओर कूंच किया जो अरावली शृंखला के दक्षिण भाग में स्थित था। महाराणा प्रताप दुश्मन की चाल भांप गये। उन्होंने तुरन्त अपने सैनिकों को हल्दी घाटी के दर्रे के निकट एकत्रित किया। युद्ध क्षेत्र से सटी चट्टानों और पहाड़ों की चोटियों पर निष्ठावान भील सैनिक अपने प्रकृतिगत शस्त्र, धनुषवाण, भाले, 'और भारी भर-

कम पाषाण खण्डों से सुसज्जित होकर युद्ध रत शत्रुओं पर लुढ़काने के लिये तैयार हो गये।

हल्दी घाटी बारूदी आग में सुलग उठी। लहू से लथपथ सिसोदिया राजपूत शत्रु की नई शक्ति से जूझकर वीरगति प्राप्त करने लगे। हर-हर महादेव, हर-हर महादेव की गगन भेदी रण गर्जना से हल्दी घाटी गूंज उठी। तोपखाने की विकराल अग्नि ने अनगिन राजपूत शूरमाओं को रणभूमि में स्वाहा कर दिया। मेवाड़ की स्वाधीनता के लिये न जाने कितने रण बांकुरे राजपूत तीर, तलवार और तोपों के निशाने बने। राजपूतों के लाल-लाल लहू की पावन सरिता हल्दी घाटी में प्रवाहित हो रही थी। राजपूत सैनिक बड़े शौर्य, साहस और वीरता से शत्रु के हर हमले को निष्फल कर रहे थे। मुट्ठी भर राजपूत कब तक दुश्मन की अपार सैन्य शक्ति से टक्कर लेते रहें। मुगल सेना का दवाब निरन्तर बढ़ता गया।

युद्ध में शत्रु से जूझते-जूझते सहसा वीर मन्नाझाला की दृष्टि महाराणा प्रताप पर पड़ी। प्रताप अरावली की एक ढलावदार घाटी में अकेले मुगल सैनिकों से जूझ रहे थे। अद्भुत रण कौशल था। प्रताप के पराक्रम को देख कुछ क्षण के लिये मन्नाझाला का मन मुग्ध हो गया। फिर सहसा एक अज्ञात भय से मन्नाझाला का हृदय धड़कने लगा। उन्हें लगा कहीं मेवाड़ मुकुट विहीन न हो जाय। वह राणा प्रताप की रक्षा के लिये तेजी से दौड़े। मन्नाझाला के तूफानी हमले को शत्रु न रोक पाये। मुगल सैनिक भयभीत होकर पीछे हट गये। कुछ मारे गये। मन्नाझाला ने झपटकर चेतक की लगाम थाम ली। चेतक रुक गया। मन्नाझाला ने कहा—"राणाजी, दुश्मन की शक्ति निरन्तर बढ़ती जा रही है। तोपखाने की भीषण मार राजपूतों को आगे बढ़ने से रोक रही है। हमारे पास सैनिक संख्या कम है। दुश्मन प्रतिपल आगे बढ़ता जा रहा है। लगता है गोगुन्दा दुर्ग की रक्षा करने में हम असमर्थ रहेंगे।

राणाजी आप अरावली की किसी कन्दरा में चले जाइये। आप मेवाड़ के भाग्य-सूर्य हैं। मुझे भय है कहीं मेवाड़ का भाग्य-भास्कर युद्ध स्थल में अस्त न हो जाय।"

"वीर मन्नाझाला, तोपों की विकराल अग्नि में अपने वीर राजपूत भाइयों को झोंककर मैं रणभूमि से हट जाऊं। यह कैसे हो सकता है। मुझे दुनियां कायर कहेगी। मैं जीवन की अंतिम सांस तक आताताई मुगलों से मेवाड़ की स्वाधीनता के लिये लड़ता रहूंगा।" राणा प्रताप ने युद्ध स्थल में गरजते हुए कहा और फिर चेतक का मुख मानसिंह के हाथी की ओर मोड़ दिया। सहसा राणा का क्रुद्ध घोड़ा चेतक चीते की तरह मानसिंह के हाथी के मस्तक पर झपटा।

उत्तेजित होकर प्रताप ने मानसिंह पर भाले से वार किया। राणा के एकाएक हुये आक्रमण से मानसिंह सहम गया। उसने हौदे में झुककर प्रताप के भाले का वार बचा लिया। कछवाह राजपूत और मुगल सैनिकों का एक समूह सिपहसालार मानसिंह की रक्षा के लिए दौड़ा। मेवाड़ी रण बांकुरे प्रताप की प्राण रक्षा के लिये आ गये। शत्रुता और कटुता से भरा हल्दी घाटी का यह युद्ध मुगलों और सिसोदियों के बीच और भी भीषण हो उठा।

युद्ध सूर्योदय से मध्यान्ह तक होता रहा। एक ओर मुगल साम्राज्य की अग्नि उगलती तोपें और विशाल सैन्य शक्ति थी। तो दूसरी ओर मेवाड़ के मुट्ठी भर राजपूत तीर, तलवार और भालों से सुसज्जित थे। एक-एक राजपूत मेवाड़ की मर्यादा की रक्षा के लिए अपने अमूल्य प्राणों की आहुति दे रहा था। न जाने कितने रण बांकुरें युद्ध भूमि में सो गये। निरन्तर लड़ते-लड़ते प्रताप भी घायल हो गये। स्वामिभक्त चेतक अपने आहत स्वामी को शत्रु की सैनिक पंक्ति चीरकर सघन वन से आच्छादित अरावली की पर्वत श्रृंखलाओं की ओर लेकर भागा। स्वयं मर गया पर चेतक ने मेवाड़ मुकुट प्रताप को बचा लिया। युद्ध में मुगलों की विजय हुई। मेवाड़ पराजित हो गया।

२३

फतहपुर सीकरी का दीवान-ए-खास

फतहपुर सीकरी में बादशाह अकबर द्वारा निर्मित दीवान-ए-खास प्रस्तर शिल्पकला का विश्व में एक अदभुत और उत्कृष्ट नमूना है। बाहर से देखने पर यह दो मंजिला भवन दिखाई देता है। किन्तु प्रवेश करने पर नीचे से ऊपर तक वह एक ही कक्ष है। कक्ष के मध्य में शिल्प कला से सुसज्जित नयनाभिराम एक चतुष्कोण पाषाण-स्तम्भ है। इसी चतुष्कोण पाषाण-स्तम्भ पर एक राजसिंहासन है। जिसपर सम्राट अकबर राज्य के कार्यों का अवलोकन करता था। कक्ष के चतुष्कोणों पर चार वरिष्ठ मन्त्री खड़े होते थे जो अपने-अपने विभागों की जानकारी नित्य प्रति बादशाह को देते थे।

चित्तौड़ और गुजरात के सफल अभियान के बाद आज नव निर्मित दीवान-ए-खास में दरबार जुड़ा था।। बादशाह अकबर प्रसन्न मुद्रा में थे। मझोला कद, गेंहुआं रंग, बलिष्ठ शरीर, छोटी चमकीली मंगोल आकृति जैसी आंखे, उभरी हुई नासिका, खुली और चौड़ी पेशानी, धनुषाकार काली घनी भोंहें। कटी हुई मूछें। सिर पर जरी की पगड़ी। मणि मुक्ताओं से खचित सरपेच। गले में अलभ्य हीरों का जगमगाता हार। देह पर लम्बी फूल पत्ते दार रेशमी चौबंदी और ईरानी कमर बंद। तथा मोतियों की झालरों से टका श्वेत पायजामा।

दीवाने-ए-खाश में मौन वातावरण था। कुछ क्षण के बाद बादशाह अकबर ने कुंअर मानसिंह का हौसला अफजायी करते हुये कहा—"कुंअर मानसिंह, हाल्दी घाटी और गुजरात के युद्धों में तुम्हारी वीरता रण कुशलता और वफादारी को देखकर मा वदौलत वेहद मशरूर हैं। तुम्हारी वहादुरी और वफादारी के पेशे नजर हम तुम्हें पाँच हजारी का खिताब आता फर्माते हैं।"

कुंअर मानसिंह ने कक्ष के एक कोण में कुछ कदम आगे बढ़ते हुये तीन बार बादशाह अकबर को मुजरा झुकाया और खिताब कुबूल करते हुए कहा—"आलम पनाह, आमेर का घराना पीढ़ी दर पीढ़ी शाही तख्त का खैरख्वाह और खिदमतदार रहेगा।"

"कछवाह कुंअर हमें तुमसे यही उम्मीद है। हम चाहते हैं कि तुम्हारी जेरे कमान में वहादुर राजपूतों का एक फोजी काफिला काबुल भेजें। मिर्जा मोहम्मद हकीम ने हमारे खिलाफ़ बगावत की है। वह लाहौर फतह करने का ख्वाव देख रहा है। हमें उम्मीद है, तुम जरूर कामयावी हासिल करोगे।"

कुंअर मानसिंह ने फिर सिर झुकाकर आदाव बजाया और कहा—"जहांपनाह, आपके हर हुक्म की तमील करना मानसिंह का धर्म है। शंहशाह की शान और सल्तनत की हिफाजत के लिये आमेर का हर कछवाह राजपूत अपना लहू बहा देगा।"

"कुंअर मानसिंह, हमें तुम्हारी वफादारी और खिदमत पर पूरा-पूरा यकीन है।" इतना कहकर बादशाह अकबर ने मीर मुंशी अब्बुल फजल की तरफ मुखातिब होकर कहा—"मीर मुंशी, हुसैन खाँ टुकड़िया पर हमारे सिपहसालार ने कबू पालिया है या नहीं। मा वदोलत को टुकड़िया की हरकतें कतई पसन्द नहीं।

"हजूर, बागी हुसैन खाँ टुकड़िया की जागीर लखनऊ को जब्त कर

लिया है। उसके ससुर कासिम खाँ को जागीर सुपुर्द कर दी है। कमऊँ गढ़वाल के इलाके के नेस्तोनाबूद मंदिरो को फिर से बनाने का हुक्म अता कर दिया है।'

"मीर मुंशी, मजहब के नाम पर इंसान, इन्सान को कत्ल करके और एक दूसरे के इबादतगाहों को तोड़कर विजय—गर्व का अनुभव करे यह कैसी फतह है? चित्तौड़ का तुमुल-युद्ध हम अभी भूले नहीं हैं। विजय के उन्माद में हमने कितनी नर हत्यायें की, कितने घर जलाये, और कितने इबादतगाहों को नापाक किया। यह कलंक हमारे नाम पर हमेशा लगा रहेगा। हम फिरसे उस गंदे इतिहास को दुहराना नहीं चाहते जिससे मुगलों का नाम तवारिख में बदनाम हो। हिन्दू हमारी रिआया है। हमें उन पर जुल्म नहीं करना चाहिये। वालिये मुल्क का अव्वल फर्ज अपनी रिआया की खिदमत और हिफाजत करना है। सुल्तान सल्तनत के वे सभी हेवानी कर हमने उठा लिगे हैं। जिससे हिन्दू रियाआ बेहद परेशान थी। अहले इस्लाम हो या अहले हिनूद हो दोनों इन्सान हैं। दोनों को रगों में एक ही लहू बहता है। दोनों का एक ही परवरदिगार है। रास्ता हर मजहब का जुदा-जुदा हो सकता है। मगर मंजिल सब की एक है। जब सारी दुनिया का पैदा करने वाला एक है, तो मजहब के नाम पर फिसाद करना गुनाह है। मजहब के नाम पर इबादतगाहों को नापाक करना निहायत जिहालत है। हम हिन्दुस्तान में मोहब्बत का पैगाम लेकर आये हैं। बादशाह का सबसे बड़ा मजहब मोहब्बत है। गरीब रिआया की खिदमत है! हम हुसैन खाँ टुकड़िया केहेवानी सुलूक पर शख्त नाराज हैं।"

कुछ देर तक दीवान-ए-खास में सन्नाटा छाया रहा। हुसैन खाँ टुकड़िया के अमानुषिक कुकृत्य पर बादशाह अकबर अत्यधिक क्रोधित था। उसका हृदय सागर की तूफानी लहरों की तरह गरज रहा था। सहसा सल्तनत के एक वाकया नवीश ने बादशाह को तीन बार सलाम

किया और अदब से कहा—"आलम पनाह, आगरा में पूरा अमन चैन है। शहर कोतवाल एक नौजवान गवैया को कैद कर आपके रूबरू पेश करने यहाँ लाये हैं।"

"बाकया नवीस, उस नौजवान का कुसूर ?"

"हुजूर, नौजवान, संगीत में तानसेन से मुकाबला करना चाहता है।"

"उस नौजवान गवैया को हमारे रूबरू बाइज्जत हाजिर किया जावे।"

नौजवान संगीतज्ञ बादशाह अकबर के सामने लाया गया, नौजवान ने तीन बार अदब के साथ बादशाह को मुजरा झुकाया। और, फिर चुपचाप खड़ा हो गया। बादशाह अकबर अपने अपलक नेत्रों से उस नौजवान गवैया की भव्य आकृति को निहारता रहा। गौर वर्ण, चाँद सा चमकता चेहरा, उन्नत ललाट, घुंघराले केश, बडी-बड़ी विहंसती आंखें। काली घनी भौहें, शुका जैसी नासिका, कमल पादप से कोमल अरूण अधर दीर्घ बांहें और सुडौल शरीर।

"नौजवान तुम्हारा नाम ?"

हूजूर, मेरा नाम बैजू है ?" मुजरा झुकाते हुये बैजू ने कहा

"तुम तानसेन से संगीत में मुकावला करना चाहते हो।"

'आलम पनाह, मैं यह जानता हूँ कि शाही गवैया तानसेन संसार का एक अच्छा संगीतज्ञ है। किन्तु इसका यह अर्थ तो नहीं कि जब तक आपकी सल्तनत में शाही संगीतज्ञ तानसेन है तबतक आगरा शहर के भीतर कोई दूसरा गा नहीं सकेगा। आपकी कठोर राजाज्ञा से आगरा शहर के संगीतज्ञ अपनी कला का विकास नहीं कर पा रहे हैं। आपकी इस क्रूर राजाज्ञा के शिकार नगर के अनेक निरीह भोले प्राणी हुये हैं। वे लोग निरपराध होते हुये भी तानसेन के दम्भ के कारण अक्षम्य समझकर तलवार के घाट उतार दिये हैं।

बैजू, मा बदौलत तुम्हारी राय से पूरी तरह सहमत हैं। लेकिन संगीत की प्रतिद्वन्दिता में यदि तुम तानसेन से पराजित हुये तो तुम्हें भी मोत की सजा दी जायेगी। शर्त मंजूर है।

"आलीजाह, मुझे आपकी शर्त स्वीकार है। किन्तु मैं संगीत की प्रतिद्वन्दिता में विजयी हुआ तो आपको यह क्रूर राजाज्ञा समाप्त करनी होगी।" बैजू ने बादशाह अकबर के सम्मुख गर्दन झुकाते हुये कहा।

बादशाह अकबर गद्दी से उठे। नकीब ने आवाज लगायी। वजीर, अमीर और उमराव जमीन तक झुक गये। दीवान-ए-खास समाप्त हुआ। दीवान-ए-खास से बैजू बाहर आया। उसका हृदय हल्का हो गया था। तानसेन के प्रति हृदय में प्रतिशोध की आग जो बहुत दिनों से जल रही थी वह आज ठन्डी हो गई।

卐 卐 卐

२४

प्यार के आँसू

क्वाँर की पूर्णिमा का वर्तुलाकार चन्द्रमा अपनीशीतल चाँदनी सेदुर्ग का अभिषेक कररहा था। शरद की शीतल मधुर चांदनी यमुना के निर्मल नील वर्ण तरंगित जल में अपना गोरा मुख पखार रही थी। मानो अठखेलियां करती कोई मुगल सुन्दरी अपने गोरे सरस मसृण कपोलों को स्फटिक जलाशय में डुबकियाँ ले-ले कर निखार रही हो।

यामिनी का अर्द्ध-प्रहर ढल गया था। शरद की मंद-मंद शीतल सुरभि यमुना कछार से उठकर प्रकृति के वातावरण को पुलकित कर रही थी। दुर्ग के दक्षिणी भाग के एक प्रकोष्ठ में ध्रुपद का मधुर स्वर गूंज रहा था। तानपुरा झंकृत था। तानपुरे के तारों पर तानसेन की मृदुल उंगलियाँ द्रुतगति से नृत्य कर रही थीं। स्वरों के आरोह-अवरोह में कई बार तानसेन की आँखें झपती और खुलती थीं। और कभी किसी भाव के प्रवेग में सांसों का क्रम बढ़ जाता। मुख-मुद्रायें रौद्र रस से भरकर इन्द्र धनुष की भाँति खिच जातीं। कण्ठ से फूटते हुए स्वर कभी निर्झर की तरह मन्थर गति से बहते तो कभी वेगवती सरिता की धारा की तरह प्रवाहित हो जाते।

सहसा ध्रुपद के मादक और मधुर बोलों से मेहरून्निसा की नींद उचट गई! उसने प्रकोष्ठ में प्रवेश किया। आश्चर्य के साथ मेहरून्निसा

ने तानसेन को निहारा। मेहरून्निसा की तन्द्रिल अलसाई आंखों में मुस्कान भर गई। उन्मुक्त भाव से गाते हुए तानसेन को देख मेहरून्निसा का मन मयूरी की तरह झूम उठा। वह विचारों में डूब गई। वह सोचने लगी। तानसेन जीवन भर इसी तरह गाता रहे और वहराग मोहित मृगी की तरह मुग्ध भाव से उसके सम्मुख झूमती रहे। सहसा तानपूरे की निनादित तीव्र ध्वनि से मेहरून्निसा की विचार श्रृंखला टूटी। मेहरून्निसा की दृष्टि तानसेन के सिर पर छितराये श्वेत केशों पर पड़ी। उसे लगा जैसे तानसेन अब बूढ़ा हो गया हो। वह फिर विचारों में खो गई।

तानसेन राग अलापता रहा। तानपूरा बजता रहा। विचारों में डूबी हुई मेहरून्निसा प्रकोष्ठ में लगे एक आइने के सम्मुख आकर खड़ी हो गई। आइने में उसने अपना मुख निहारा। मुख पर कहीं-कहीं झुरियां उभर आईं थीं। और केश-कलाप में रवि की रजत रश्मियों सी कुछ लटें चमकने लगी थीं। उसे लगा जैसे वह अपने यवौन के सुखद क्षणों को बिता आई हो। उसके सुर्ख कान्धारी अनार जैसे कपोलों की लालिमा, आँखों की आभा, और अधरों की मुस्कान अब पहले जैसी नहीं रही।

कुछ क्षण बाद ध्रुपद राग समाप्त हुआ। तानसेन ने विस्फारित नेत्रों से देखा-प्रकोष्ठ में मेहरून्निसा होठों पर मुस्कान बिखेरे खड़ी हुई है। उसे लगा जैसे सावन की रिमझिम-रिमझिम फुहारों में बादलों से फूटकर सूर्य की कोई एक किरण प्रकोष्ठ में आभा बिखेर रही हो। तानसेन ने तुरन्त हृदय के किसी भाव में भरकर मेहरून्निसा को अपनी भुजाओं में भर लिया। मेहरून्निसा के अधरों की मुस्कान फूल-सी खिल गई। प्रमुदित मन लिये मेहरून्निसा ने अपना सिर तानसेन के कन्धे पर टिका दिया। तानसेन का अपरमित स्नेह मेहरून्निसा की आँखों में छलछला आया।

तानसेन के कांपते होठों से धीमे-धीमे एक स्वर फूटा—"मेहरून्निसा, तुमने मुझसे विवाह करके जीवन में एक बड़ी भूल की है ! कलाकार के पास अपनी कला के सिवाय और कुछ नहीं होता । मैं तुम्हारे जीवन के उन सुखद सपनों को कभी शाही ऐश्वर्य और वैभव से सजा नहीं सकता । शाही शान और शौकत से पले तुम्हारे कोमल शरीर की सुन्दरता के अनुरूप मैं तुम्हें स्वर्ण आभूषण और रत्नजटित परिधान प्रस्तुत नहीं कर सका । मेहरून्निसा, मैं एक दरिद्र गायक हूं । मैं तुम्हें राजमहलों का सा सुख और ऐश्वर्य नहीं दे पाया । मुझे क्षमा करना ।"

"ऐसा न कहो । मैं शाही महलों का सुख नहीं चाहती । तुम विसुध पपीहे की तरह गाते रहो और मैं पागल पपीहरी की तरह झूमती रहूँ । मेरे जीवन की यही एक कामना है । मेरा यही एक सुखद स्वप्न है । मैंने एक गायक से प्रेम किया है । किसी शाहजादे और सिपहसालार से नहीं । कहते-कहते मेहरून्निसा की आँखें सजल हो गईं ।

तानसेन ने मेहरून्निसा के लावण्य भरे मुख की ओर निहारा । मेहरून्निसा की आँखों में जीवन का एक तरल गाढ़ा-सा पदार्थ रिस रहा था । मानो नारी जीवन का मौन समर्पण और पावन स्नेह आँसुओं के रूप में झलक रहा हो ।

सहसा हाथी पोल के सम्मुख एक मुगल अश्वारोही आकर रुका । मुगल अश्वारोही फतहपुर सीकरी से आया था । कुछ देर बाद दूत ने प्रकोष्ठ में प्रवेश किया और कहा—"आपको जिल्ले सुभानी शहंशाह ने फतहपुर सीकरी में याद फरमाया है ।"

दूत कहकर चला गया । तानसेन और मेहरून्निसा ने पुन: एक दूसरे को देखा । दोनों की मुस्कान भरी आँखें जमीन पर झुक गईं । जब दोनों के नेत्र उठे तो उन्होंने देखा—पूर्णिमा का वर्तुलाकार चन्द्रमा प्रकोष्ठ की झिर्झरियों से भीतर झांककर आभा विखेर रहा है ।

□ □ □

२५

बैजू और तानसेन

आगरा दुर्ग के भीतर लाल पत्थर से निर्मित दीवान-ए-आम में संगीत का आयोजन था। बैजू और तानसेन में संगीत प्रतियोगिता थी। सल्तनत के सभी वजीर, अमीर उमराव और मन्सबदार आ चुके थे। संगीत प्रारम्भ होने में थोड़ा विलम्ब था। बादशाह अकबर के आने की प्रतीक्षा में सब लोग मौन खड़े थे।

सभासदों की एक पँक्ति में शाही संगीतज्ञ तानसेन खड़ा था। उसके सम्मुख कलावन्तों की कतार में तरुण गायक बैजू अपने जीवन की महत्वकाँक्षा का चरम बिन्दु परिलक्षित कर दरबार की चकाचौंध देख रहा था। उसका हृदय विजय प्राप्ति की उमंग से उन्मुक्त सागर की उद्वेलित तरंगों सा हिलोरें भर रहा था।

एकाएक दीवान-ए-आम के बाहर हलका सा कोलाहल हुआ। एक डीलडौल वाला मस्त हाथी रंग महल की ओर से चला आ रहा था। कुछ हथियार बन्द तातारी सिपाहियों की टुकड़ी बादशाह अकबर की सुरक्षा के लिये हाथी के आगे-पीछे चल रही थी।

कुछ देर बाद हाथी दीवान-ए-आम के सामने आकरुकार। बादशाह अकबर हौदे से उतर दीवान-ए-आम में चले गये। समस्त सामन्तों

के सिर ज़मीन तक झुक गये। सबने बन्दगी की और आदाब बजाया। बादशाह सलामत ने हुक्म अता किया—"संगीत शुरू हो।"

तानसेन ने अपना तानपूरा उठाया। तानपूरे के झंकृत तारों पर तानसेन ने ध्रुपद राग अलापा। राग पर मोहित मृगों का झुण्ड दुर्ग के द्वार से निकल दीवान-ए-आम में आ गया। तानसेन ने रुद्राक्ष की माला गले में पहना दी। फिर मृग झुण्ड चौकड़ी भरते हुए दुर्ग के बाहर प्रवाहित यमुना तट पर स्थित वन में विलीन हो गये।

इसके पश्चात बादशाह सलामत का हुक्म हुआ- "मृगों को दरबार में बुलाला जाय।" बैजू ने अपना सितार संभाला और एक मधुर टोड़ी रागिनी छेड़ी। और फिर मध्यम, पंचम और सप्तम स्वर में आरोह-अवरोह के साथ स्वर भरा। बैजू का स्वर दीवान-ए-आम की दीवारों से उठकर दुर्ग में फैल गया। बैजू की मधुर स्वर लहरी सागर की शाँत निर्मल लहरों पर पूर्ण चन्द्र की धवल ज्योत्स्ना सी थिरक उठी। संगीत की ध्वनि में विभोर मृग झुण्ड चौकड़ी भरता हुआ बैजू के निकट आ गया। तानसेन द्वारा डाली गई रुद्राक्ष की माला बैजू ने मृग कण्ठ से उतार बादशाह सलामत को नजर कर दी। समूचा दीवान-ए-आम बैजू की सफलता पर बाग-बाग हो उठा। वाह-वाह एवं तालियों की तीव्र गड़गड़ाहट से सारा दरबार गूंज उठा।

दीवान-ए-आम सम्भ्रांत सामन्तों से खचाखच भरा हुआ था। बैजू के बाद तानसेन की बारी आई। शहंशाह ने हुक्म फरमाया—"तानसेन, तुम संगीत के प्रभाव से दीवान-ए-आम के चिरागों को रोशन कर अपना करिश्मा दिखलाओ।"

तानसेन ने सिर झुकाकर शहंशाह का हुक्म कुबूल किया। वाद्यों की मधुर ध्वनि से दीवान-ए-आम फिर निनादित हो उठा। ज्यों-ज्यों तानपुरे और मृदंग की मंद्रिल ध्वनि दीवान-ए-आम में मुखारित होती त्यों-त्यों तानसेन की आवाज सागर की चंचल लहरों की तरह मचलने

लगती। इस बार तानसेन के स्वरों में सरिता की वेगवती धारा की तरह तीव्रता, चंचलता और मादकता थी। तानपूरे के झंकृत तारों पर दीपक राग इस प्रकार उठ रहा था जैसे पूर्णिमा के पूर्ण वतुर्लाकार चन्द्रमा की शीतल किरणों के आर्कषण से सागर में ज्वार उठता है। सामन्तगण कभी अपलक दृष्टि से दीवान-ए-आम में रंगविरंगे झाड़ फानूसों और चिरागों को देखते तो कभी दीपक राग से दीप्त तानसेन की मुद्रा को निहारते। सहसा स्वरों के आरोह-अवरोह में एक अदभुत और आर्कषक ध्वनि ज्वालामुखी पर्वत से फूटती एक अग्नि ज्योति-सी फैल गई। और फिर सारा दीवान-ए-आम चिरागों और झाड़-फानूसों की रंग बिरंगी रोशनी से जगमगा उठा। दीपक राग समाप्त हुआ। तानसेन का कोमल शरीर अग्नि पुंज बन गया था। मुख से फूटती दग्ध निस्वासों से वह बेचैन था।

गायक बैजू तानसेन के दग्ध तन की पीड़ा और मन की बेचेनी को समझता था। उसने तत्क्षण मेघ मल्हार राग अलापा। बैजू जब अपने मस्त विकम्पित मृदुस्वर में गाता तो आकाश मेघाच्छादित हो जाता। विद्युत रेखा खिच जाती और हवा के झौंके दुर्ग पर मचलने लगते। सहसा एक तीब्र मेघ गर्जना के साथ रिमझिम-रिमझिम शीतल फुहारें बरसीं और समूचा दीवान-ए-आम सरावोर हो गया।

तानसेन का दग्ध तन वर्षा की रिमझिम फुहारों में नहाकर शीतल और निर्मल हो गया। जैसे शरद ऋतु की दूधिया चांदनी में धरती का रूप निखर आता है।

संगीत की प्रतिध्वनि से दीवान-ए-आम गूंज रहा था। बैजु और तानसेन में होड़ लगी थी। दोनों के हृदय में विजय प्राप्ति की आकांक्षा अटूट थी। राग, लय, ओर ताल पर बनती विविध मुख–मुद्राओं से दर्शकों की आँखें उत्फुल्ल हो जाती थीं। संगीत में विभोर श्रोताओं का मन आकाश में उन्मुक्त विहंगों की तरह उड़ रहा था। लेकिन बादशाह
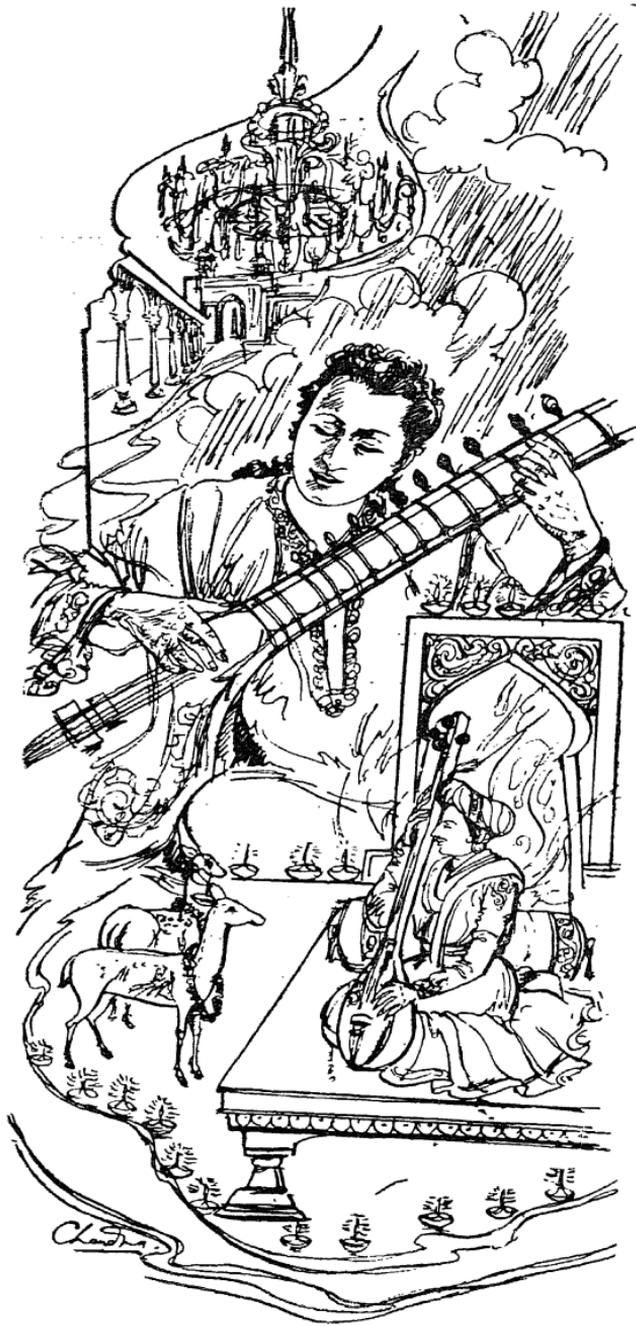
अकबर विचारों में डूबे हुए थे। उनकी स्थिति सागर की तूफानी लहरों में फंसे उस असहाय मछुये की तरह हो रही थी जो नौका विहीन होकर किनारा खोजने का भरसक प्रयत्न करता है।

सहसा विचारों के उदिधि में डूबे बादशाह सलामत के मस्तिष्क में एक उक्ति सूझी। उन्होंने कहा—"मेरे अजीज फनकारों, हम तुम्हारे दिलचस्प संगीत से बेहद ममनून हैं। मा बदौलत की निगाहों में कोई भी संगीतज्ञ कम नहीं है। दोनों के रागों में एक अजीब करिश्मा है। हमारी मंशा है, संगीत का यह आखिरी दौर दुनियां के लिए एक दिल-कश करिश्मा बन जाय। मा बदौलत संगीत की परख के लिए एक शर्त रखते हैं। जो भी फनकार, अपने संगीत से पत्थर का हृदय पिघला देगा वही फतह हांसिल करेगा।"

शहंशाह अकबर के एलान से समस्त सामन्त स्तंम्भित और आश्चर्य चकित रह गये। पत्थर का हृदय कैसे पिघल सकता है। एक प्रश्न वाचक चिन्ह सबके मस्तिष्क में खजूर के वृक्ष की तरह खड़ा था। कुछ देर तक दीवान-ए-आम में सन्नाटा छाया रहा। बाद्य निस्पन्द थे। गायक मौन थे। संगीत की परीक्षा कठिन थी। बैजू सोच रहा था यदि वह बादशाह की शर्त को स्वीकार नहीं करता तो संगीत राज प्रति बन्ध से कभी मुक्त नहीं होगा। उसे या तो तानसेन को संगीत में परा-जित करना होगा। अन्यथा उसे मौतके घाट उतार दिया जावेगा। बैजू आगे सोचही रहा था कि सहसा शहंशाह के हुक्म ने उसकी विचार श्रृंखला तोड़ दी। बैजू को शहंशाह की ओर से गाने का आदेश हुआ था।

निनादित सितार पर बैजू के मधुर कण्ठ से एक हृदय स्पर्शी स्वर फूटा। जैसे कोई वेगवान निर्झर पहाड़ी के कठोर हृदय को चीरकर प्रावाहित हुआ हो। दीवान-ए-आम में बैजू के बोल कभी भादों की भयावह घटाओं की तरह गरजते तो कभी वेगवती सरिता की मृदुल चंचल लहरों की तरह कल-कल का मधुर राग घोल देते।

सहसा बैजू की अद्भुद संगीत शक्ति से प्रस्तर शिला द्रवित हो गई। समूचा दीवान-ए-आम हर्ष, उल्लास और आनन्द में डूब गया। बहुत देर तक करतल ध्वनि गूंजती रही। बादशाह अकबर ने बैजू के दिव्य और अलौकिक संगीत की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की।

बैजू द्वारा पिघली हुई प्रस्तर शिला को तानसेन परिवर्तित करने में निष्फल रहा। तानसेन के सम्मुख जीवन की पहली पराजय मुँह बाये खड़ी थी। बैजू विजित हुआ। शहंशाह अकबर ने आगरा शहर में संगीत पर लगा प्रतिबन्ध उठा लिया। प्रतिहिंसा की अग्नि से प्रज्वलित बैजू का मन शान्त हो गया।

२६

आखरी रात

आगरा दुर्ग का वैभव उजड़ा गया। उसका समस्त शाही ऐश्वर्य सुख और सौन्दर्य बादशाह सलामत के साथ लाहौर चला गया। अब न नौबत खाने से मधुर शहनाई और नफीरी गूंजती है और न द्वार पर नगाड़े निनादित होते। शीशमहल का श्रृंगार एक विधवा नारी के सुहाग की तरह उजड़ गया था। शाही हमाम के सतरंगी स्फटिक जलाशय सूखे पड़े थे। मानो किसी शोकाकुल नारी के अश्रु विहीन नेत्र किसी अज्ञात-आशका से एकाएक पथरागये हों। दीवान-ए-आम और दीवान-ए-खास में पहले जैसी रौनक नहीं थी। अब न दिन में शाही दरबार होते और न रात में नृत्य और संगीत की रंगीनमहफिल ही जुड़तीं। दुर्ग की सुन्दरता, महलों की मादकता और नकीबों की बुलन्द आवाजें सभी कुछ बादशाह अकबर के साथ लहौर चली गई थीं।

आगरा दुर्ग रात्रि के गहन अन्धकार में डूबा मरघट सा सांय-साँय कर रहा था। सूने शाही महलों से कछ दूर एक डयोढ़ी में दीपक का क्षीण प्रकाश टिम-टिमा रहा था। बैजू द्वारा पराजय के आघात से तानसेन का हृदय टूट गया था। वह ज्वर से पीड़ित था। पलंग के निकट मेहरुन्निसा मौन उदास और विक्षुब्ध बैठी हुई थी। दीप-शिखा का मद्धिम प्रकाश कपोलों की रेखाओं पर पड़ा रहा था। उसकी डब

डबाई आँखों में अवसाद के अश्रुमेघ उमड़-घुमड़ रहे थे। आर्द्र और काँपती पलकों से पीड़ा के आँसू अविरल गति से प्रवाहित हो रहे थे। मन का सन्ताप अधरों से क्रन्दन बन फूट रहा था। उसके हृदय में कोई एक वदना थी, एक कसक और एक स्मृति थी। जो रह-रह कर सागर की एक हिलोर की तरह आँखों से आँसू बन फूट पड़ती थी।

आँसू और स्मृति में डूबी हुई मेहरुन्निसा को सहसा दीवान-ए-खास की उस रंगीन महफिल की सुधि हो आई जब पहली बार उसने तानसेन को देखा था। भरा हुआ शरीर, गौर वर्ण, उन्नत ललाट और तेजस्वी आँखें तथा आकर्षक मुख-मुद्रा। तानसेन की उस भव्य आकृति को देख कर ही वह अपना दिल निछावर कर बैठी थी। मेहरुन्निसा आगे सोच ही रही थी कि सहसा तानसेन ने आँखें खोलीं और ज्वर की ज्वाला में तपते हुये कहा—"मेहरुन्निसा तुम अभी तक जाग रही हो। रात अधिक हो गई है, सो जाओ।"

वेदना के भार से दबी मेहरुन्निसा धीरे से सुबक पड़ी। आँखों ने कपोलों पर बड़े-बड़े अश्रु ढुलका कर क्लान्त मन की पीड़ा प्रकट कर दीं। मुख पर विषाद की एक गहरी रेखा उभर आई। मन वेदना से अभिभूत हो गया।

तानसेन ने पुनः कराहते हुए कहा—"मेहरुन्निसा, आँखों से आँसू बहाकर मन का धीरज न खोओ। पगली, जिन्दगी सागर की एक चंचल लहर के समान है जो उठती है और मिट जाती है। जीवन और मरण जगत के दो शाश्वत नियम हैं। मेरा मरण निश्चित है।" और इतना कहते—कहते तानसेन का मस्तिष्क एक अज्ञात पीड़ा से भरकर सितार की किसी द्रुति लय की तरह झनझना उठा।

मेहरुन्निसा अकुला गई। उसने आँसुओं के उमड़ते आवेग को आँखों में रोकते हुये कहा—"मृत्यु का नाम न लो। तुम जल्द अच्छे हो जाओगे। बादशाह सलामत ने इलाज के लिए तुम्हें लाहौर बुलाया है। मीर मुंशी

अब्बुल फजल ने शाही तबीब भेजा है। और शहंशाहे आलम की मन्शा है कि मुकम्मिल सेहतयाबी के लिये आप भी उनके हमराह काश्मीर चलें।"

"मेहरुन्निसा मृत्यु का उपचार कहींनहीं होता। मनुष्य को जीवन का चिर विश्राम मृत्यु की गोद में ही मिलता है। मेरी आत्मा कश्मीर की उपत्यकाओं और वादियों में एक पथ भ्रान्त पथिक की तरह भटकती रहेगी, मुझे काश्मीर में सुख नहीं मिलेगा। मेरी इच्छा है मरने के पहले मैं एकबार ग्वालियर की पावन भूमि के दर्शन करूं जिसके कण-कण में संगीत की मधुर ध्वनि गूंज रही है। आह सा, मुख से संगीत शब्द निकलते ही मेरा रोम-रोम तानपूरे की तरह झंकृत हो उठा है। हृदय राग अलापने को मचल रहा है। लेकिन लगता है कहीं जीवन की उखड़ी-उखड़ी दीर्घ सांसे टूट न जाँय।"

मेहरुन्निसा ने विह्वल होकर तानसेन का हाथ अपने दोनों हाथों में लेकर चूम लिया। आँखों से प्यार और पीड़ा के मौन आँसू ढुलक पड़े। फिर रोते विलखते स्वर में उसने कहा—"मैं तुम्हारे बिना एक पल भी जिन्दा नहीं रह सकती। औरत की जिन्दगी उसका शौहर होता है। तुम मेरी जिन्दगी की खुशियाँ हो। मेरी आँखों की रोशनी हो। तुम मेरे सुहाग के सूरज हो। तुम कहीं मौत के काले साये में छुप गये तो मेरी यह दुनिया दुःख के अन्धेरे में डूब जायेगी। मैं बर्बाद हो जाऊंगी।"

"मेहरुन्निसा मेरी जिन्दगी की मंजिल अब पूरी हो चुकी है। मैं उम्र का एक पाँव भी आगे नहीं रख सकता। लगता है सासों की वीणा पर जीवन का संगीत पूरा हो चुक है। मैं तुम्हारी मोहब्बत को और तुम्हारी कुर्बानी को ताकयामत भूल नहीं सकता। मुझे वह दिन याद है जब तुमने मजहब और शाही पाबन्दियों की परवाह किये

बिना अपने मेंहदी रंजित लाल-लाल खूबशूरत हाथ मेरे हाथों में रख दिये थे । मैं सच कहता हूँ मेहरुन्निसा, तुम जैसे अनमोल हीरे को पाकर मैं निहाल हो गया था ।"

मेहरुन्निसा की सजल आँखों में तानसेन का रुग्ण चेहरा तैरने लगा। वह निरुत्तर रही । उसने तानसेन के सीने पर अपना सिर रख दिया । आँखों से अवसाद के अश्रु विन्दु रातभर बरसते रहे ।

सुबह यह समाचार विजली की तरह आगरा शहर में फैल गया कि शहंशाहे मौसिकि तानसेन इस दुनिया में नहीं रहा ।

□ □ □